क्रियोड्डीश

(हिन्दी टीका सहित)

खेमराज श्रीकृष्णदास
प्रकाशन
बम्बई



श्री

इन्द्रजिद्विरचित

क्रियोड्डीश

पं० लालमणि शर्मा कृत

हिन्दीटीकासमेत

तथा

पं० बलदेव प्रसाद मिश्र द्वारा संशोधित

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

संस्करण : जून २०१६, सवंत् २०७३

मूल्य : ६० रुपये मात्र ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

ॐ

क्रियोड्डीश

हिन्दीटीकासमेत

आनन्दशिखरारूढं पार्वत्या सह शंकरम् ।
पप्रच्छ गिरिजाकान्ता पुनर्नत्वा वृषध्वजम् ।। १ ।।

आनन्द शिखरपर श्रीपार्वती सहित विराजमान श्रीशंकरजी महाराजको नमस्कार कर श्रीमहारानी पार्वतीजी पूछने लगीं ।। १ ।।

पार्वत्युवाच—भगवन्सर्वदेवेश सर्वज्ञानमय प्रभो ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि क्रियोड्डीशं विभो वद ।।२।।

श्रीपार्वतीजी कहने लगीं हे भगवन् ! हे सर्वदेवेश ! हे सर्वज्ञानमय ! हे प्रभो ! इस समय क्रियोड्डीश सुननेकी मेरी इच्छा है कृपा करके वर्णन करें ।।२।।

ईश्वर उवाच—शृणु देवि प्रवक्ष्यामि उड्डीशं तन्त्रमुत्तमम् ।
गोपितव्यं प्रयत्नेन मम स्वप्राणवल्लभे ।। ३ ।।

श्रीशिवजी कहने लगे, देवि ! सुनो तन्त्रोंमें उत्तम उड्डीश तन्त्रको कहता हूं । हे प्राणवल्लभे ! यह उत्तम उड्डीश तन्त्र सर्वथा गोपनीय है ।। ३ ।।

शांत्यादि षट्कर्माणि तेषां लक्षणं च

स्वदेवतादिक्कालादि ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् । शीतांशुसलिलक्षोणीव्योमवायुहविर्भुजः ।। ४ ।। एतेषां बीजयोगेन ग्रथनादिक्रमेण कर्म साधयेत् । ठं वं लं हं यं वं ।

शांति आदि षट् कर्म और उनका लक्षण कहते हैं :– निजदेवता, दिक्, कालादिको जानकर साधना करे । चन्द्र, जल, पृथ्वी, व्योम, वायु, अग्नि ।। ४ ।। इन छःके बीजयोगसे ग्रथनादिक्रमपूर्वक साधन करे । ठं, वं, लं, हं, यं, वं, यह छः इन छहों देवताओंके बीज हैं ।

तत्तद्देवता:—रतिर्वाणी रमा ज्येष्ठा मातङ्गी कुलकामिनी ।
दुर्गा चैव भद्रकाली कर्मादौ ताः प्रपूजयेत् ।। ५ ।।
वसन्ताद्यृतुकालनियमः ।

रति, वाणी, रमा, ज्येष्ठा, मातंगी, कुलकामिनी, दुर्गा, भद्रकाली इन देवताओंका प्रारम्भमें पूजन करे ।। ५ ।।

वसन्त आदि ऋतु कालनियममें ग्रहण किये हैं ।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वरसंवादे प्रथमः पटलः ।। १ ।।

सर्वरोगमुक्तिकवचम्

श्रीदेव्युवाच—देवदेव महादेव सुरासुरनमस्कृत ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि रोगमुक्तः कथं प्रभो ।।१।।

श्रीपार्वतीजी कहने लगीं—हे देवदेव ! हे महादेव ! हे सुरासुरनमस्कृत ! हे प्रभो ! इस समय मेरी यह इच्छा है कि, रोग मुक्तिका उपाय आपके मुखारविन्दसे सुनूं अर्थात् साधक लोग किस प्रकार रोगमुक्त होते हैं ।। १ ।।

नास्ति त्राता च जगतां त्वां विना परमेश्वर ।
ज्वरादिवारणं शीघ्रं कृपया परया वद ।। २ ।।

हे परमेश्वर ! आपके अतिरिक्त त्रिलोकरक्षक अन्य नहीं है अतः हे प्रभो ! कृपापूर्वक ज्वरादि रोगोंकी निवृत्तिका उपाय वर्णन कीजिये ।। २ ।।

ईश्वर उवाच—कथयामि तव स्नेहात्कवचं वारणं महत् ।।

श्रीशिवजी कहने लगे हे प्रिये ! तुम्हारे स्नेहसे मैं ज्वरादि रोगनाशक कवच कहता हूँ ।

ॐ नमो भगवति वज्रश्रृंखले हनतु भक्षतु खादतु अहो रक्तं पिब पिब नरवक्षास्थिरक्तपटे भस्माङ्गिभस्मलिप्तशरीरे वज्रायुधे वज्रप्राकारानिचिते पूर्वां दिशं मुञ्चतु दक्षिणां दिशं मुञ्चतु पश्चिमां दिशं मुञ्चतु उत्तरांदिशं मुञ्चतु नागार्थं धनग्रहपतिं बन्धतु नागपीठं बन्धतु यक्षराक्षसपिशाचान् बन्धतु प्रेत भूतगंधर्वादयो ये

केचिद् उपद्रवास्तेभ्यो रक्षतु ऊर्ध्वं रक्षतु अधो रक्षतु श्येनिकां मुञ्चतु ज्वल महाबले एह्येहि तु मोटि मोटि सटावलि वज्राग्नि वज्रप्राकारे ऐं फट् ह्लीं ह्लीं श्रीं फट् ह्लं हं फुं फें फः सर्वग्रहेभ्यः सर्वं व्याधिभ्यः सर्वदुष्टोपद्रवेभ्यः ह्लीं अशेषेभ्यो मा रक्षतु ।।

इतीदं कवचं देवि सुरासुरसुदुर्लभम् ।
ग्रहज्वरादिभूतेषु सर्वकर्मसु योजयेत् ।। १ ।।

हे देवि ! देवताओंकोभी कठिनतासे प्राप्त होनेवाले इस कवचके पाठ करनेसे सब प्रकारके ज्वरादिक सहसा दूर हो जाते हैं अतः सर्वकर्मोंमें इस कवचका प्रयोग करे ।। १ ।।

न देयं यस्य कस्यापि कवचं मन्मुखाच्युतम् ।
तद्दत्ते सिद्धिहानिः स्याद्योगिनीनां भवेत्पशुः ।। २ ।।

मेरे मुखारविन्दसे निकले हुए इस कवचराजको हरएकको नहीं सुनाना चाहिये क्योंकि हरएकको देनेसे सिद्धिहानि होती है और दाताको योगिनियों का पशु होना पड़ता है ।। २ ।।

दद्याच्छान्ताय वीराय सत्कुलीनाय योगिने ।
सदाचाररतो यश्च निर्जिताशेष एव हि ।। ३ ।।

यह कवचराज शांतप्रकृति, वीर, सत्कुलीन योगी, सदाचाररत, जितेन्द्रियको ही प्रदान करना चाहिये ।। ३ ।।

ऐकाहिको द्व्याहिकश्च त्र्याहिकश्चातुराहिकः ।
सर्वे ज्वरा विनश्यंति कवचं धारयेद्यदि ।। ४ ।।

इस कवचराजके धारण करनेसे प्रतिदिन आनेवाला ज्वर, दूसरे दिन आनेवाला ज्वर, तिजारी ज्वर, चौथे दिन आनेवाला एवं सर्व प्रकारके ज्वर सहसा दूर हो जाते हैं ।। ४ ।।

स्त्रिया वामकरे धार्यं पुंसा च दक्षिणे करे ।
अवश्यमेव सिद्धिः स्यात्सत्यं सत्यं वरानने ।। ५ ।।

यह कवचराज स्त्रियोंको बायें और पुरुषोंको दक्षिण हस्तमें धारण करना चाहिये । हे वरानने ! इस कवचके धारण करनेसे साधकवर्गको अवश्य सिद्धि प्राप्त होगी ।। ५ ।।

इति क्रियोड्डीशमहातन्त्रराजे देवीश्वरसंवादे द्वितीयः पटलः ।। २ ।।

सर्वरोगविनाशाय पार्थिवशिवलिंगपूजनप्रकरणम्

अतः परं महेशानि पूजनं पार्थिवं शिवम् ।
विशेषतः सर्वरोगे त्र्यम्बकस्य प्रपूजनम् ।। १ ।।

अब सर्व रोगोंके शांतिके लिये पार्थिव शिवलिंगके पूजनका प्रकरण प्रारंभ होता है, हे महेशानि ! पार्थिव (मृत्तिकाके बनाये हुए) शिवपूजन की विधि कहते हैं । विशेषतया समस्त रोगोंके उत्पन्न होतेही त्र्यम्बक (शिवजी महाराज)का पूजन करना चाहिये ।। १ ।।

यत्कृत्वा सर्वतः शान्तिर्भवेद्देवि न संशयः ।
ततः प्रयोगं सर्वेषां वश्यादीनां च कारयेत् ।। २ ।।

हे देवि ! जिस पार्थिव विधान करनेसे सर्व प्रकारके रोगोंकी शांति होती है । इसमें किसी प्रकारका संदेह नहीं तत्पश्चात् समस्त वश्यादिकोंका प्रयोग करना चाहिये ।। २ ।।

विधानं तत्र वक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने ।

हे कमलानने ! मैं पार्थिवपूजनका विधान वर्णन करता हूँ श्रवण करो ।

शिवपूजाविधानम्

मृदा लिङ्गं विनिर्माय शततोलकमानया । तत्रानीय मृतं मुण्डं स्थापयित्वा समार्च्चनम् ।। १ ।। पूर्वमग्निं च संस्थाप्य यज्ञस्थानं चतुर्विधम् । उत्तरे दक्षिणे वापि पूर्वे च पश्चिमे तथा ।। २ ।। सर्वकामेषु होतव्यमन्यथा निष्फलं भवेत् । घटं संस्थाप्य मम पूजां यथाशक्ति कुर्यात् । ततो वह्निस्थापनम् । मुण्डस्थापनम् । नरमहिषमार्जारमुण्डत्रयम् । अथवा नृमुण्डत्रयम् । एकमुण्डं वा तदुपरि मां संपूज्य

गन्धोदकैः स्नापयित्वा वितस्तिमितधरातले पोथयित्वा तस्योपरि वेदीं कल्पयेत् । तत्रैव भूतनाथादीन् चतुर्दिक्षु समर्चयेत् । पूर्वे ॐ भूतनाथाय नमः इति पाद्यादिभिः पूजयित्वा बलिं दद्यात् । एवं दक्षिणे श्मशानाधिपाय । पश्चिमे कालभैरवाय । उत्तरे च ईशानाय । वेदीमध्ये ह्रौं प्रेतबीजं विलिख्य तत्रैव भारतीं पूजयेत् ।

सौ तोले मृत्तिकाके शिवलिंगको बनाकर और मृतक पुरुषके कपालमें स्थापन कर निम्नलिखित विधानके अनुसार पूजन करे ।। १ ।। पूर्वमें अग्निका स्थापन कर चारों दिशाओंमें हवन करे क्योंकि यह चारों दिशा यज्ञस्थान कहलाती हैं । सर्व प्रकारकी कामनाओंमें पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर इन चारों दिशाओंमें हवन करे । इन दिशाओंमें हवन न करनेसे किये हुए समस्त कर्म निष्फल हो जाते हैं । प्रथम घट स्थापन कर यथाशक्ति मेरा पूजन करे, तत्पश्चात् अग्नि स्थापन करे ! पुनः नर, महिष, मार्जार इन तीनोंके मुण्डको स्थापन करे । अथवा तीनों नरमुंडही स्थापित करने चाहिये । यदि किसी कारणसे तीन नर–मुंड प्राप्त न हो सकें तो एक नरमुण्ड अवश्य ही स्थापित करे और उस मुण्डके ऊपर श्रीपार्थिव शिवजी महाराजका पूजन कर गन्धोदक आदिसे स्नान कराये वितस्तिमात्र भूमिको खोदकर उक्त पार्थिवप्रतिमा को गाड़कर वहीं वेदी निर्माण करे और भूतनाथादिकोंका चारों दिशाओं मे यथावत् पूजन करे । ' ॐ भूतनाथाय नमः ' इस नाममंत्रसे पाद्यादि प्रदान कर पूर्वदिशामें पूजन करे । ' ॐ नमः श्मशानाधिपाय' इस नाममंत्रसे उक्त-विधानपूर्वक दक्षिण दिशामें पूजन कर बलिप्रदान करे । ' कालभैरवाय नमः' इस मन्त्रसे पश्चिम दिशामें बलिप्रदान करे । ' ईशानाय नमः ' इस मंत्रसे उत्तर दिशामें बलिप्रदान करे । वेदीके मध्यमें ह्रा इस प्रेतबीजको लिखकर वहींपर सरस्वतीका पूजन करे ।

पुष्पांजलिः

रे वीर शव देवेश मुण्डरूप जगत्पते । दयां कुरु महाभाग सिद्धिदो भव मज्जपे ।। इति पुष्पाञ्जलित्रयं दत्त्वा आग्नेय्यां ह्लीं * नमः नैर्ऋत्यां ह्लीं चण्डिकायै नमः । वायव्यां ह्लीं भद्रकाल्यै नमः । ईशाने**

ह्लीं दयामय्यै नमः। श्मशानवासिनो ये ये देवादेवाश्च भैरवाः। दयां कुर्वन्तु ते सर्वे सिद्धिदाश्च भवन्तु मे। अनेन प्रणवाद्येन पुष्पाञ्जलित्रयं क्षिपेत्। ततः स्थानं तु संस्पृश्य वश्यो भव वदेदिति।

रे वीर शव ! रे देवेश ! मुंडरूप ! जगत्पते महाभाग ! दया करो और मेरे इस जपविधानमें सिद्धि दो, इस प्रकार तीन पुष्पांजलि प्रदानकर इन बीजमंत्रोंका उच्चारण करे। आग्नेय्यां ह्लीं नमः। नैऋत्यां ह्लीं चंडिकायै नमः वायव्यां ह्रीं भद्रकाल्यै नमः। ईशाने ह्लीं दयामय्यै नमः। जो-जो श्मशानवासी देव अथवा अदेव भैरव हैं वे सब मेरे ऊपर कृपाकर सिद्धि प्रदान करें। इस प्रणवादिसे तीन पुष्पाजलि दे। तत्पश्चात् स्थानको स्पर्शकर कहे "वश्यो भव" अर्थात् मेरे वशमें हो।

ततः स्नानं तत्र लिङ्गं संस्थाप्य परमेश्वरि। स्नानं तु पञ्चगव्येन दधिदुग्धादिकं तथा। अथवा परमेशानि शर्करामधुना युतम्। पंचामृतैस्ततः स्नानं कारयेत्परमेश्वरि॥ ईशानाय प्रथमं स्नानं वामदेवाय द्वितीयकम्। तृतीये सद्योजाताय चतुर्थे च पिनाकधृक्। पंचमं देवदेवेशं पूजयेत्पार्थिवं शिवम्। अधुना मूलमंत्रेण शर्करया गायत्रिकं परम्। ततो जीवन्यासं कृत्वा न्यासादिकं ततः परम्।

हे परमेश्वरि ! तत्पश्चात् लिंगको स्थापित कर स्नान कराये। दधि, दुग्ध आदि पंचगव्यसे स्नान कराये। हे परमेशानि ! अथवा मधुमिश्रित शर्कराहीसे स्नान कराये, हे परमेश्वरि ! तत्पश्चात् पञ्चामृतसे स्नान कराये, 'ईशानाय' इस मन्त्रसे प्रथम स्नान कराये, 'वामदेवाय' इस मंत्रसे दूसरा स्नान, 'सद्यो जाताय' इस मन्त्रसे तीसरा स्नान, 'पिनाकधृक्' इस मन्त्रसे चौथा स्नान, 'देवदेवेश' इस मन्त्रसे पांचवां स्नान कराये, पार्थिव श्रीशिवजीका पूजन करे। तदनन्तर मूलमन्त्र अथवा गायत्रीमन्त्र द्वारा शर्करासे स्नान कराये, तत्पश्चात् जीवन्यास कर न्यासादिक करे।

ध्यानं शृणु महादेवि स्नेहेन कथितं मया। हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तं शिरो द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं

परम् । अंके न्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलासकान्तं शिवं स्वच्छाम्भोज गतं नवेंदुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे ।। पुनर्ध्यात्वा तु संपूज्य अंगन्यासं ततः परम् ।

हे देवि ! तुम्हारे स्नेह वश अब मैं ध्यान कहता हूँ, श्रवण करो । दोनों हाथोंसे दो अमृतके कलशोंमेंसे अमृतरसको अपने शिरपर छिड़कते हुए, और दोनों हाथोंमें अमृतकलशको धारण करते हुए, दोनों हस्तकमलके मणि-बन्धमें मृगाक्षवलयको धारण करते हुए अंक (गोदी) में रक्खा है अमृत कलश जिनके, नवीन चन्द्र है मुकुटमें जिनके, ऐसे कैलासकान्त श्रीशिवजी महाराज का भजन करते हैं । फिर ध्यान और पूजन कर अंग न्यास करे ।

अंगन्यासः—ॐतत्सवितुर्वरेण्यं हृदयाय नमः । त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्द्धनं शिरसे स्वाहा ।। भर्गोदेवस्य धीमहि शिखायै वषट् । उर्वारुकमिवबन्धनात् कवचायहुं । धियो यो नःप्रचोदयात् नेत्रत्रयाय वौषट् । मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् अस्त्रायफट् एवं कर न्यासः ।

इसी प्रकार करन्यास भी करे ।

ततः षोडशोपचारैः पूजा—जपापराजिता कृष्णबिल्वपत्रं च पिप्प-लम् । करवीरमपामार्गं प्रत्येकं जुहुयाच्छिवे । अष्टाधिकशतेनैव पूजयेत् ।

हे शिवे ! जपा, अपराजिता, कृष्ण, बिल्वपत्र, पीपल, अपामार्ग (चिरचिटा), कनेर प्रत्येकसे १०८ आहुति दे ।

अतः परं महेशानि मधु देयं विशेषतः । गुडार्द्रकरसेनैव सुरास्तु ब्राह्मणस्य तु ।। नारिकेलोदकं चैव कांस्ये तु क्षत्रियस्य च । कांस्यस्थं माक्षिकम् वैश्यस्य । शूद्रस्य ताम्रपात्रे तु मधुयुक्तं निवेदयेत् । अथवा सार्षपं तैलमाज्येन होमयेद्द्विजः । जुहुयात्सर्वकर्माणि कथितानि महेश्वरि ।

हे महेशानि ! इसके पश्चात् मधु देना चाहिये । गुड और अदरखके रसमें मिश्रित सुरा ब्राह्मणको दे । नारियलका जल कांस्यपात्रमें क्षत्रिय को दे । कांसके पात्रमें सहत वैश्यको दे । शूद्रको तांबेके पात्रमें मधु दे, अथवा ब्राह्मण सरसोंका तेल और घृतसे समस्त कार्योंमें हवन करे। हे महेश्वरि ! यह अति गोपनीय विषय तुम्हारी प्रीतिके वश होकर मैंने तुमसे कहा ।

मन्त्र—मंत्रं शृणु महादेवि कथितं तव श्रद्धया ।

हे महादेवि ! मंत्रको सुनो मैं तुम्हारी श्रद्धासे कहता हूं ।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्द्धनं भर्गोदेवस्य धीमहि उर्वारुकमिव बंधनाद् धियो यो नःप्रचोदयात् मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ।

पुरश्चरणके साथ इस मंत्रको १०००८ बार जपे । उपरोक्त विधान सब कार्योंमें है ।

स्थान भेदकम्—शून्यागारे नदीतीरे पर्वते वा चतुष्पथे । बिल्वमूले श्मशाने वा निर्जने च प्रपूजयेत् । अणिमाद्यष्टशक्ति च वन्ध्या वा मृतवत्सा वा बद्धो वा राजशत्रुके । सर्वशांतिकरं देवि पूजनं त्र्यंबके शिवे ।। अत एव कथितं मे च सत्यं सत्यं वरानने ।।

शून्यस्थान, नदीके किनारे, पर्वत, चौराहे, बेलके वृक्षकी जड़में, श्मशान या एकांतमें अणिमादि आठ शक्तियोंकी पूजा करे । वंध्या मृतवत्साका इस पूजनके करनेसे दोष निवारण होता है । और राजभय—शत्रुभय दूर होता है। हे शिवे ! हे देवि ! शिवका यह पूजन सब भांतिकी शांतिको देनेवाला है । हे वरानने मैंने यह सत्य कहा है ।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वरसंवादे तृतीयः पटलः ।। ३ ।।

सर्वव्याधिमोचनम्

शृणु वक्ष्यामि चार्वंगि सर्वव्याधिविमोचनम्। एकादश पूजये द्रुद्रान्दशांशं गुग्गुलैर्घृतैः ।। चत्वारः कुंभाः संस्थाप्याः पंचपल्लव-

संयुता: ।। उक्तमंत्रेण रौप्याष्टदलपद्ममध्ये लिंगं पूजयेत् । प्रतिवासरं सप्तलिंगं पूजयेत् लक्षं जप्त्वा ।। पलाशसमिधा होमम् उक्त मंत्रेण तत्क्रमात् ।। अत्र पीठे यजमानमभिषेकयेत् । दक्षिणां दद्याद्-गोभूहेमतिलांजलीन् ब्राह्मणेभ्य: किञ्चिद्देया आचार्याय दद्यात् ।।

हे श्रेष्ठ अंगवाली ! अब सब व्याधियोंसे छूटनेका उपाय कहता हूँ, दशांश, गूगल और घीसे ११ रुद्रोंकी पूजा करनी चाहिये । पञ्चपल्लवयुक्त पांच घट स्थापित करे । उपरोक्त मंत्रसे चांदीके अष्ट दलवाले पद्ममें लिंगको स्थापित कर पूजन करे । एक लक्ष जप करके पलाशकी समिधा द्वारा उक्त मंत्रसे क्रमानुसार होम करे । फिर यजमानका अभिषेक करे । गौ, पृथ्वी, हेम (सुवर्ण), तिलांजलि दक्षिणामें दे । कुछ ब्राह्मणोंको देकर बाकी आचार्यको दे दे !

इति क्रियोड्डीशे महातंत्रराजे देवीश्वरसंवादे चतुर्थ: पटल: ।। ४ ।।

क्रियोपदेश:

वशीकरणादिकर्माणि वारतिथिनक्षत्रमण्डलविशेषे कर्तव्यानि । स्फाटिकी माला सर्वसिद्धिदा । मणिसंख्या । पंचविंशतिभिर्मोक्षं पुष्टौ तु सप्तविंशति: । त्रिंशद्भिर्धनसिद्धिस्तु पंचाशन्मन्त्रसिद्धये ।। अष्टोत्तरशतै: सर्वसिद्धि: ।

अब क्रियोपदेश कहते हैं । वशीकरण आदि कर्म वार, तिथि, नक्षत्र और मण्डलविशेषमें करना चाहिये । स्फटिककी मालासे जप करनेपर सर्वसिद्धि प्राप्त होती है । २५ दानेकी मालासे जप करने पर मोक्षसुख प्राप्त होता है, पौष्टिक कर्ममें २७ दानोंकी माला होनी चाहिये । धनसिद्धिमें तीस दानोंकी माला होनी चाहिये । मन्त्रसिद्धिमें ५० दानोंकी माला होनी चाहिये । १०८ दानोंकी माला सर्वसिद्धिमें होनी चाहिये ।

शिवमन्त्रसमायुक्तमौषधं सफलम्भवेत् । मूलिकोत्पाटनच्छेदनाविधि: पूर्वतन्त्रे कथित: । वन्ध्यादिदोषनिवारणम् । स्त्रीणां बाधक-

मोचनम् । रक्तमाद्रचादि चतुर्विधबाधक दोषनिवारणम् । तत्र यन्त्रम्-त्रिकोणमथ षट्कोणं नवकोणं मण्डलाकृतिः । यंत्राण्येतानि संलिख्य वाहयेन्मन्त्रपूर्वकम् । तंत्रपूजनात् औषधादि भक्षणाद्दोष-शान्तिः ।

शिवमन्त्रका जप करते हुए यदि औषधि उत्पाटन की जाय तो सफल होती है । मूलिका (जड़) के उखाडनेकी विधि पूर्वमन्त्रमें कह चुके हे । वंध्यादि दोष निवारण के लिए और स्त्रियोंकी बाधा मोचनके लिए इस मूलिका का प्रयोग करे । माद्रि आदि चार प्रकारके दोषोंका यथार्थ निवारण होता है । अब यंत्र कहा जाता है मण्डलाकृति, त्रिकोण, षट्कोण अथवा नवकोण मन्त्रसहित यंत्र लिखकर पूजन करे और औषधि भक्षण करे तो सर्व प्रकारके रोग शांत हो ।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वरसंवादे पञ्चमः पटल ॥ ५ ।

मृतवत्सादिशांतिकवचम्

मृतवत्सामृतगर्भापुत्रहीनानां शांतिः कवच धारणात् । कवचं प्रथमम् । ॐ नमो नरसिंहाय नमो महाविपन्नाशाय दिव्यरूपाय नरसिंहाय नमः । स्थौं सौं क्षौं रामाय नमः । रां रामाय नमः । ॐ ह्रीं श्रीं फणं हुं हां फेत्कारशब्देन सर्वबालकस्य सर्वभयोपद्रवनाशाय इमां विद्यां पठति धारयति यदि तदा नरसिंहो रक्षति सदा हुँ फट् स्वाहा ।

अब मृतवत्सादि शान्तिकवच कहते हैं । जिन स्त्रियोंके गर्भमेंही पुत्रादिक मरजाते हैं, उन्हें मृतवत्सा कहते हैं, उन्हींका शांतिविधान बतलाते हैं । उनको ही इस कवचके धारण करनेसे लाभ हो सकता है ।

प्रकारांतरेण द्वितीयकवचम्

अब प्रकारान्तरसे दूसरा कवच कहते हैं ।

ॐ नमो नरसिंहाय हिरण्यकशिपोर्वक्षःस्थलविदारणाय त्रिभुवन-व्यापकाय भूतप्रेतपिशाचडाकिनीकुलनाशाय स्तम्भोद्भवाय समस्त-

दोषान् हरहर विष विष पचपच मथमथ हनहन फट् हुँ फट् ठःठः एहि रुद्रो ज्ञापयति स्वाहा ।

ॐ क्षौं नमो भगवते नरसिंहाय ज्वालामालिने दीप्तदंष्ट्राय अग्निनेत्राय सर्वरक्षोघ्नाय सर्वभूतविनाशाय सर्वज्वरविनाशाय दहदह पचपच रक्षरक्ष हुँ फट् स्वाहा ।

गोरोचनया भूर्जे विलिख्य स्वर्णथा गुटिका स्त्रिया वामकरे पुरुषेण दक्षिणे करे धार्या कदापि न दोषः ।

इस कवचराजको भोजपत्रके ऊपर लिखकर सोनेके ताबीजमें बंद कर स्त्रियां बांयें और पुरुष दक्षिणभुजदण्डमे धारण करें । किसी भी अवस्थामें यह अपवित्र नहीं होगा ।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वरसंवादे षष्ठः पटल : ।। ६ ।।

श्रीदेव्युवाच—श्रुतं कवचचरितमपूर्वं देववांछितम् । इदानीं श्रोतुमिच्छामि यन्त्रं कथय मे प्रभो ।

श्रीदेवीजी कहने लगीं । हे देव ! मनोवांछितफलदायक अपूर्व कवच सुना । हे प्रभो ! अब मेरी यन्त्र सुननेकी इच्छा है, कृपा कर कहिये ।

(यन्त्रम्) ईश्वर उवाच—मात्राहीनं रकारं तु पार्श्वे शीर्षं तथा पुनः । मायात्मकं तेन भवेत् षट्कोणं यन्त्रमुत्तमम् । माया बीजं ह्रीं गर्भम् ।

षट्कोण यन्त्र लिखकर ह्रीं बीजको मध्यमें लिखें, शेष सुभग है ।

स्त्रिया वामहस्ते धारणाद्वन्ध्या पुत्रवती भवेत् । बालाया बालकस्यापि कण्ठे सन्धार्य सुखी भवेत् । भूर्जे गोरोचनया विलिख्य स्वर्णस्थं धारयेत् । षोडशीचक्रस्य गोरोचनया भूर्जे विलिख्य धारणात् स्त्रीणां सौभाग्यवृद्धिः । चतुष्कोणचक्रं संलिख्य ह्रीं गर्भ बाहौ धारणात् नारी जीवत्पुत्रिका अथवा चतुष्कोणे प्रणवादि क्षं पुनः मीनचक्रं संलिख्य धारणात् वन्ध्या जीवत्पुत्रिका भवति ।

इस यंत्रराजको भोजपत्रके ऊपर लिखकर यदि स्त्री अपने बायें हाथमें बांधे तो वन्ध्याके भी पुत्र पैदा हो। गोरोचनसे भोजपत्रके ऊपर लिखकर सोनेके तावीजमें बन्द कर बाला अथवा बालकके कण्ठमें यदि यह यन्त्रराज पहनाया जाय तो सुख प्राप्त हो। षोडशीचक्रको गोरोचनसे भोजपत्र पर लिखकर धारण करनेसे स्त्रियोंको सौभाग्य की प्राप्ति होती है। चतुष्कोण चक्रके मध्यमें ह्रीं बीज लिखकर बाहुमें धारण करनेसे स्त्री जीवत्पुत्रिका होती है। मीन चक्रके चारों कोनेमें प्रणवादि क्षं बीज लिखकर धारण करने से वन्ध्या स्त्री भी सन्तानसुख को प्राप्त हो।

अतः परम् अष्टदल कर्णिकामध्ये माया। ततः परम दलमध्ये द्वे द्वे मायाबीजे पुनः पुनः। इतः परं नवदलं मायाबीजं विलिख्य बाहौ धारणात् मृतवत्सा जीवद्वत्सा ॥ गोरोचनाकुंकुमेन संलिख्य रक्त-सूत्रेण संवेष्टच गुटिकां पञ्चामृतैः पंचगव्यैः स्नापयित्वा। प्रणवेनतु संमन्त्र्य स्नापयेद्गन्धद्रव्यकैः। प्राणान् प्रतिष्ठाप्य देवतारूपां गुटिकां सम्पूज्य धारयेत्।

तत्पश्चात् अष्टदल कर्णिकामध्यमें मायाबीज लिखे और दलमध्यमें दो–दो मायाबीज लिखे। एवं नवदलमें मायाबीज लिखकर और लाल सूत्रसे लपेटकर गुटिकाको पंचामृत तथा पंचगव्यसे स्नान कराकर प्रणवसे अभि-मंत्रित कर पुनः गन्धद्रव्योंसे स्नान करायें। प्राणप्रतिष्ठा करके देवतारूप गुटिकाका पूजन कर धारण करे।

शिवस्नानम्–घृतेन मधुना वापि स्नापयेद्वश्यकर्मणि। दुग्धादिना तथा देवि शान्तौ मृत्युञ्जयेऽपि च ॥ आकर्षणे तु मधुना भस्मना क्रूरकर्मणि।

अब शिवस्नान कहते हैं। वश्यकर्ममें घृत और मधुसे स्नान कराये, शांति तथा मृत्युञ्जयजप कर्ममें दुग्धादिसे स्नान कराये, आकर्षण कर्ममें मधुसे स्नान कराये, क्रूर कर्ममें भस्मसे स्नान करना चाहिये।

अस्य परिमाणम् शततोलकमानेनद्रव्यमेतत्प्रकीर्तितम्। तन्मानं सम्विदाचूर्णं नैवेद्यं च सुरेश्वरि ॥ बिल्वपत्रं तथा पुष्पंदद्यादष्टोत्तरं शतम्। शांतिकादौ द्रोणपुष्पं बर्बरा चाभिचारके ॥ स्तम्भनेमोहने

चैव धत्तूरं कनकाह्वयम् । विद्वेषोच्चाटने देविविजयाप्यपराजिता । चतुर्दश्यां समारम्य यावदन्याचतुर्दशी ।। एकैकं क्रमशो लिंगं पूजयेद्भक्तिभावतः । अष्टाधिकसहस्त्रं तु जपं कुर्याद्दिनेदिने ।। सप्ताहेसप्त लिङ्गानि पंचाहेवाथ पञ्चकम् । चण्डोग्रेणविधानेन जपपूजादिकं स्मृतम् ।। बटुकेन तु मंत्रेण मंजुघोषेण वा प्रिये । त्रैयम्बकेण देवेशि शान्तिके जपपूजनम् ।। तत्तत्कल्पविधानेन जपंपूजां समाचरेत् । जातिध्वंसे कुलोच्छेदे ज्वरादौ रोगसंकटे ।। महाभये समुत्पन्ने सर्वाभिचारसम्भवे । यत्नेन पूजयेद्देवि लिङ्गमष्टोत्तरं शतम् । अतिरुद्रप्रयोगादौ रुद्राध्यायेन वा पुनः ।। नीलकण्ठेन वा देवि स्तवेन तोषयेच्छिवम् ।

हे देवेशि ! अब स्नान द्रव्यके तोलेका परिमाण कहते हैं– सौ तोले परिमाण स्नानद्रव्य और उतना ही नैवेद्य होना चाहिये । बिल्वपत्र और पुष्प १०८ होना चाहिये । शांति आदिमें द्रोणपुष्प, अभिचार प्रयोगमें बर्बरा पुष्प, स्तम्भन और मोहन कर्ममें धतूरेके पुष्प विशेष और उच्चाटन कर्ममें विजया तथा अपराजिताके पुष्प होने चाहियें । एक पक्षकी चतुर्दशीमें प्रयोग आरंभ करे और दूसरे पक्षकी चतुर्दशीमें समाप्त करे । क्रमानुसार भक्तिपूर्वक एक–एक लिंगका पूजन करे । प्रतिदिन अष्टोत्तर शत जप करे । सप्ताहमें सात और पञ्चाहमें पांच लिङ्गका पूजन करे । चण्डोग्र विधानपूर्वक जप-पूजन करना चाहिये । हे प्रिये ! शुद्ध और साफ-साफ उच्चारण किये हुए बटुक मन्त्र अथवा त्र्यम्बक मंत्रसे शांति कर्ममें जप और पूजन करे । तत्तत् कल्पनानुसार पूजा जप करना योग्य है । जातिध्वंस, कुलोच्छेद, महाज्वर, संकट, महाभयकी प्राप्ति, सर्व प्रकारके अभिचार आदि प्रयोगोंमें यत्नपूर्वक अष्टोत्तर शत (१०८) लिंगोंका पूजन करे । हे देवि ! रूद्राध्याय, अथवा नीलकण्ठस्तोत्र स्तुति कर श्रीशिवजी महाराजको प्रसन्न करे ।

स्तव–सर्वज्ञज्ञानविज्ञानप्रदानैकमहात्मने । नमस्ते देवदेवेश सर्वभूतहिते रत ।। अनन्तकांति सम्पन्न अनन्तासनसंस्थित । अनन्तकान्तिसंभोग परमेश नमोस्तु ते ।। परापरपरातीत उत्पत्तिस्थिति-

कारक । सर्वार्थसाधनोपाय विश्वेश्वर नमोऽस्तु ते ।। सर्वार्थनिर्मलाभोग सर्वव्याधिविनाशन । योगियोगी महायोगी योगीश्वर नमोस्तु ते ।। कृत्वा लिंगप्रतिष्ठाञ्च ध्यात्वा देवं सदाशिवम् । पूजयित्वा विधानेन स्तव पाठमुदीरयेत् ।। लिंगस्तवं महापुण्यं यःश्रृणोति सदा नरः । नोत्पद्यतेच संसारे स्थानं प्राप्नोति शाश्वतम् ।। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन श्रृणुयाच्च सुसंस्तवम् । पापकर्ता कलेर्मुक्तः प्राप्नोति परमं पदम् ।

अब स्तुति वर्णन है । हे सर्वज्ञ ! हे सर्वदेवेश ! हे सर्वभूतहितेरत ! ज्ञान विज्ञान देनेवाले आपको नमस्कार है । अनन्तकान्तिसंपन्न ! हे अनन्तासनसंस्थित ! हे अनन्तकांतिमम्भोग । परमेश्वर ! आपको नमस्कार है । हे परापर ! हे परातीत ! हे उत्पत्तिस्थितिकारक ! हे सर्वार्थ साधनके उपाय ! विश्वेश्वर आपको नमस्कार हैं । हे सर्वार्थ निर्मलाभोग ! हे सर्वव्याधिविनाशन ! योगियोंके योगी, महायोगी ! योगीश्वर आपको नमस्कार है । लिंगकी प्रतिष्ठा और सदाशिवका ध्यान कर विधानपूर्वक पूजन कर स्तवका पाठ करे । यह लिंगस्तव महापुण्यदायक है ! जो मनुष्य एकाग्रचित्त होकर इस स्तवका पाठ करते हैं फिर उनको इस संसारके दुःख नहीं भोगने पड़ते, किन्तु शाश्वत शिवलोकको प्राप्त होते हैं । इस कारण प्रयत्नपूर्वक इस मनोहर स्तवराजका पाठ करना और श्रवण करना अत्यावश्यक है । क्योंकि महापापी मनुष्य भी इस संसारके दुःखों को तृणवत् त्यागकर परम पदको प्राप्त हो जाता है ।

इति क्रियोड्डीशे महातंत्रराजे देवीश्वरसंवादे सप्तमः पटलः ।। ७ ।।

रुद्रकवचम्

भैरव उवाच–वक्ष्यामि देवि कवचं मंगलं प्राणरक्षकम् । अहोरात्रं महादेवरक्षार्थं देवमण्डितम् ।। अस्य श्रीमहादेवकवचस्य वामदेव ऋषिः पंक्तिश्छन्दः सौः बीजं रुद्रो देवता सर्वार्थसाधने विनियोगः ।

भैरवजी कहने लगे, कि हे देवि ! मंगलरूप प्राणरक्षक रुद्रकवचको

कहता हूँ । यह कवच रात्रि-दिन रक्षा करनेमें समर्थ है । यह श्रीमहादेवजीकी रक्षाके लिये देववृन्दसे मण्डित है, इस कवचके वामदेव ऋषि पंक्ति, छंद, सौः बीज, रुद्र देवता है ।

रुद्रो मामग्रतः पातु पृष्ठतः पातु शंकरः ।। कपर्दी दक्षिणे पातु वामपार्श्वे तथा हरः ।। १ । शिवः शिरसि मां पातु ललाटे नील-लोहितः ।। नेत्रं मे त्र्यम्बकः पातु बाहुयुग्मं महेश्वरः ।। २ ।। हृदये च महादेव ईश्वरश्च तथोदरे ।। नाभौ कुक्षौ कटिस्थाने पादौ पातु महेश्वरः ।। ३ ।। सर्वं रक्षतु भूतेशः सर्वगात्राणि मे हरः ।। पाशं शूलञ्च दिव्यास्त्रं खड्गं वज्रं तथैव च ।। ४ ।। नमस्करोमि भूतेश रक्ष मां जगदीश्वर ।। पापेभ्यो नरकेभ्यश्च त्राहि मां भक्तवत्सल ।। ५ ।। जन्ममृत्युजराव्याधिकामक्रोधादपि प्रभो ।। लोभमोहान्महा-देव रक्ष मां त्रिदशेश्वर ।। ६ ।। त्वं गतिस्त्वं मतिश्चैव त्वं भूमिस्त्वं परायणः ।। कायेन मनसा वाचा त्वयि भक्तिर्दृढास्तु मे ।। ७ ।।

मेरे अग्रभागमें रुद्रदेव, पृष्ठभागमें शंकर देव, कपर्दी देव, दक्षिण भागमें, वामभागमें हर देव, शिवजी महाराज मेरे शिरकी, नीललोहित मेरे ललाटकी, त्र्यम्बक नेत्रकी, रक्षा करें। महेश्वर दोनों बाहुकी, हृदयकी महा-देव, ईश्वर उदरकी, नाभि, कुक्षि, कटि (कमर) हाथ पैरकी महेश्वर सर्वथा भूतेश, और हरदेव समस्त गात्रकी रक्षा करें । हे भूतेश ! पाश, शूल दिव्यशस्त्र, खड्ग, वज्र, आदिकी रक्षा करो, मैं आपको नमस्कार करता हूं हे भक्तवत्सल ! पाप और नरकसे सदा मेरी रक्षा करो। हे प्रभो ! जन्म, मृत्यु जरा, व्याधि, काम, क्रोधसे भी मेरी रक्षा करो । हे त्रिदशेश्वर ! लोभ मोहसे भी रक्षा करो। हे भगवन् ! आपही गति हैं आपही मति हैं, आपही भूमि हैं और आपही हमारे मुख्य आश्रय हैं । हे प्रभो ! मन, वचन, काय द्वारा, आपमें मेरी भक्ति दृढ़ हो ।।१ -१७ ।।

फलश्रुतिः—इत्येतद्रुद्रकवचं पाठनात्पाप नाशनम् । महादेव-प्रसादेन भैरवेन च कीर्तितम् ।। न तस्य पापं देहेषु न भयं तस्य विद्यते । प्राप्नोति सुखमारोग्यं पुत्रमायुः प्रवर्द्धनम् । पुत्रार्थी लभते

पुत्रान्धनार्थी धनमाप्नुयात् । विद्यार्थी लभते विद्यां मोक्षार्थी मोक्षमेव च ।। व्याधितो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात् । ब्रह्महत्यादि पापं च पठनादेव नश्यति ।।

अब कवचपाठका फल कहते हैं—इस रुद्रकवचके पाठ करनेसे पाप नष्ट हो जाते हैं । श्रीमहादेवजीकी प्रसन्नताके लिये यह कवच श्रीभैरवजीने कहा है । इसके पाठ करनेवालोंका शरीर पाप रहित हो जाता है और सुख तथा आरोग्यता को प्राप्त होता है, पुत्रार्थी पुत्रको, धनार्थी धनको, विद्यार्थी विद्याको, मोक्षार्थी मोक्षको प्राप्त करता है, रोगी रोगसे और बन्धनग्रसित बन्धनसे छूट जाता है । विशेष क्या इस कवचके पाठ करनेसे ब्रह्महत्यादि पापभी नष्ट हो जाते हैं ।

इति क्रियोड्डीशे महातंत्रराजे देवीश्वरसंवादे अष्टमः पटलः ।।८।।

आसनम्

एकं सिद्धासनं प्रोक्तं द्वितीयं कमलासनम् । व्याघ्राजिने सर्वसिद्धिर्ज्ञानसिद्धिर्मृगाजिने । वस्त्रासनं रोगहरं वेत्रजं प्रीतिवर्द्धनम् । कौशेयं पुष्टिदं प्रोक्तं कम्बलं सर्वसिद्धिदम् ।। शुक्लं वा यदि वा कृष्णं विशेषाद्रक्त कम्बलम् । मेषासनं तु वश्यार्थमाकृष्टौ व्याघ्रचर्म च । शांतौ मृगाजिनं शस्तं मोक्षार्थं व्याघ्रचर्म च । गोचर्म स्तम्भने देवि वाजि चोच्चाटने तथा । (विद्वेषे श्वानचर्म च) मारणे माहिषं चर्म कर्मोद्दिष्टं समाचरेत् । सर्वकामार्थदं देवि पट्टवस्त्रासनं तथा । कुशासनं कम्बलं वा सर्वकर्मसु पूजितम् ।। दुःखदारिद्रचनाशं तु काष्ठपाषाणजासनम् ।

अब आसनविधान कहते हैं । पूजन कर्ममें सिद्धाजन अथवा कमलासन प्रशंसनीय हैं । व्याघ्रचर्मके आसनपर जप करनेसे सर्वसिद्धि, मृगचर्मपर पूजन करनेसे ज्ञानप्राप्ति, और वस्त्रासनपर पूजन करनेसे रोग दूर होता है । वेत्रके आसनपर जप करनेसे प्रीतिकी वृद्धि होती है । कुशके आसनपर जप करनेसे पुष्टि और कम्बलके आसनपर जप करनेसे सर्वसिद्धि प्राप्त होती है । शुक्ल अथवा कृष्ण इन दोनों प्रकारके कम्बलोंसे लाल कम्बल श्रेष्ठ है । वश्यकर्ममें मेष आसन, आकर्षण कर्ममें व्याघ्रचर्मका आसन, स्तम्भनमें गोचर्मका आसन,

उच्चाटनमें अश्वचर्मका आसन, विद्वेषणमें श्वानचर्मका आसन, मारण-कर्ममें महिषीके चर्मका आसन ग्रहण करे। हे देवि! रेशमी वस्त्रका आसन सर्व कामनाओंका देनेवाला है। कुशासन अथवा कम्बलासन सर्वकर्मोंमें पूजनीय है। काठ तथा पाषाणका आसन दुःख और दारिद्र्यनाशक हैं।

होमघटादिस्थापनम्

नित्यं नैमित्तिकं कार्यं स्थण्डिलेवा समाचरेत्। हस्तमात्रेण तत्कुर्याद्वालुकाभिः सुशोभनम्। तोयपूर्णान्घटान्पंच स्थापयेत्परमेश्वरि। एकेन मन्त्रयुग्मेन स्थापिताः स्युः सपल्लवैः। अशक्तौ च महादेवि एकैकेन च वाससा। कदाचिदपि चैकेन सर्वान्नाच्छादये-च्छिवे। अनाच्छादिततोयानि स्थापयित्वा व्रजत्यधः।

होमघटादिकका स्थापन कहते हैं। हे परमेश्वरि! नित्य तथा नैमित्तिक कर्म समाप्तकर वालुकासे सुशोभित हस्तमात्र स्थंडिल निर्माण कर उसके ऊपर जलसे भरे पांच घट स्थापित करे, एक अथवा दो मंत्रोंसे अभिमंत्रित कर उक्त पांचों कलशोंको पंचपल्लव से सुशोभित करे, हे महादेवि! यदि पृथक्-पृथक् कलशके आच्छादनार्थ वस्त्र संभव न हो तो एकही वस्त्रसे पांचों कलशोंको लपेट दे, क्योंकि स्थापित जलको आच्छादन न करनेसे स्थापन-कर्ता अधोगतिको प्राप्त करता है।

ततः स्थां स्थीं इति श्रीमिति मन्त्रेण घटं स्थिरीकृत्य। क्लीं इति घटप्रोक्षणम्। क्रामिति घटाभिमन्त्रणम्। ह्रीं इत्यारोपणम्। ह्रीं जलेन पूरणम्। ततः कृताञ्जलिः पठेत्।

तदनंतर 'स्थां स्थीं' इन बीजमन्त्रोंसे और 'श्रीं' इस मन्त्रसे घटको स्थिर कर 'क्लीं' इस बीजमन्त्रसे घटको साफ करे। 'क्रां' इस बीज मंत्रसे घटको अभिमंत्रित कर 'ह्रीं' इस बीजमंत्रसे घटको स्थापित करे। 'ह्रीं' मंत्रसे जल पूर्ण कर फिर अंजलि बांधकर प्रार्थनामंत्र पढ़े।

गंगाद्याः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च। सर्वे समुद्राः सरितः सरांसि जलदा नदाः॥ ह्रदाः प्रस्रवणाः पुण्याः स्वर्ग-पातालभूगताः। सर्वतीर्थानि पुण्यानि घटे कुर्वन्तु सन्निधिम्॥

ततः श्रीमिति पल्लवम्, हुमिति फलम्, रमिति सिन्दूरम्, बमिति पुष्पम्, मूलेन दूर्वाम्, ओं ओं ओं इत्यभ्युक्षणम्, ॐ फट् स्वाहा इति कुशेन ताडनम् । शान्त्यर्थं स्नापयेत्कुम्भम् ।

पुण्याहं वाचयित्वा कर्म कुर्यात् दिग्बन्धनादि गणेशग्रहदिक्पाला-दीन्प्रतिकुण्डे पूजयेत् । स्थण्डिले पूजयेल्लिङ्गं सर्वापत्तिविनाशनम् । कुम्भे चापि पूजयेत् । ततः अग्निमानीय संस्कृत्य होमं कुर्यात् ।

हे घट ! गंगा आदि नदियां, चारों समुद्र, तालाव, शेष समुद्र क्षीरसागर आदि, सरितायें, छोटी-छोटी नदियां, नाले, पक्के तालाव, झरने, स्वर्ग, पाताल और मर्त्यलोकके समस्त बावडी आदि जलस्थान, समस्त काशी आदि पुण्यक्षेत्र तुम्हारेमें आकर वास करें ।

पुनः 'श्री' बीजसे पञ्चपल्लव स्थापित करे, 'हूं' इस बीज मंत्रसे घटके भीतर फलस्थापित करे । 'रं' इस बीजमंत्रसे घटके ऊपर सिन्दूर चढ़ाये' 'बं' बीजमंत्र उच्चारण कर पुष्प चढ़ाये । मूलमन्त्रसे दूर्वा चढ़ाये । 'ॐ ॐ ॐ' इन तीन प्रणवोंको उच्चारण कर अभ्युक्षण करे । 'ॐ फट्' इस बीजमंत्रको पढ़कर कुशासे घटको ताडन करे । शांतिके लिये कुम्भको स्नान कराये । पुण्या-हवाचन कर दिग्बन्धनादि कर्म करे । गणेश, ग्रह, दिक्पालादिकोंकी प्रीतिके लिए कुंडमें पूजन करे । स्थंडिलमें लिंगका पूजन करनेसे सर्व प्रकारकी आपत्तियां दूर होती हैं । कुंभमें भी पूजन करना चाहिये फिर अग्निको ताम्र पात्र द्वारा लाकर संस्कार कर हवन करे ।

महाविपत्तौ जुहुयात् जवां कृष्णपराजिताम् । द्रोणं वा करवीरं वा मनोऽभीष्टफलं लभेत् ।। करवीरैः श्वेतरक्तै रक्तचन्दन-मिश्रितैः । द्रोणैश्च केतकीपुष्पैर्होमो रोगं विमोचयेत् ।। चम्पकैः श्वेतपद्मैश्च कोकनदं च बन्धुकम् । बिल्वपत्रं कुरुवकं मुनिपुष्पं च केसरम् ।। हुत्वा यदि महादेवि अवश्यं पुत्रवान्भवेत् । रक्तोत्पलं बिल्वपत्रं काञ्चनं रक्तवर्णकम् ।। शान्तिमंत्रत्रिकं चापि शतसंख्या-क्रमेण तु । जुहुयात्तु महेशानि सर्वसिद्धिर्भवेत्तदा ।

महाविपत्तिमें जवाकुसुम, तथा विष्णुक्रान्ताके पुष्पसे हवन करे मनवांछितकी प्राप्तिके लिये द्रोणपुष्प, तथा कनेरके पुष्पोंसे हवन करे। श्वेत, अथवा रक्तचन्दनमिश्र कनेरके पुष्पोंसे हवन करे। रोग शांतिके लिये द्रोणपुष्प अथवा केतकीके पुष्पोंसे हवन करे। पुत्रप्राप्तिके लिए चंपाके पुष्प, श्वेत पद्म, कोकनद, कन्दूरीके पुष्प, बिल्वपत्र, कुरुवक, अगस्तवृक्षके पुष्प केशरसे हवन करे। सर्व सिद्धिके लिए रक्तकमल, बिल्वपत्र, धतूरेके पुष्पोंसे हवन करे। परंतु एकही शांतिमंत्रसे अष्टोत्तर शत (१०८) बार हवन करना चाहिये।

इति क्रियोड्डीशे महातंत्रराजे देवीश्वरसंवादे नवमः पटलः ॥ ९ ॥

शाक्ताभिषेकः

शाक्ताभिषेको वन्ध्यामृतवत्सारोगिणीनां शान्तिकरः। धनकीर्त्यायुर्वृद्धि सौभाग्यजननः सर्वाशापूर्णो मन्त्रदोषनिवारणोऽभिचारहरो ग्रहदोषनाशनः सर्वसिद्धिप्रदोऽभिषेकः॥

अब शाक्ताभिषेक कहते हैं। यह शाक्ताभिषेक वंध्या, मृतवत्सा, रोगिणी स्त्रियोंको शांतिप्रदान करनेवाला है। धन, कीर्ति, आयु वृद्धि करनेवाला है। संपूर्ण आशा पूर्ण करनेवाला है। मन्त्रदोष निवारक है। अभिचार और ग्रहदोष दूर कर सर्वसिद्धि प्रदान करता है।

नयनरञ्जनम्

दीपं कृत्वा ताम्रपात्रे कज्जलं पातयेदथ। गवां घृतेन चालोड्य चक्षुषी अथ रञ्जयेत्। पूर्वं च यादृशं दृष्टं तादृशं च प्रपश्यति।

दीपक जलाकर ताम्रके पात्रमें कज्जल तैयार कर उसे घृतमें मथकर नेत्रोंको आंजे, तो मनुष्य पूर्व की भांति ही देख सकता है।

प्रकारान्तरे—रक्तचन्दनसंयोगान्मधुना सहरौदुके। कियदृष्टमञ्जनञ्च तिमिरं हन्ति सुन्दरि।

अंजन बनानेकी दूसरी विधि-रक्तचन्दन और शहतको मिलाकर धूपमें सुखाकर नेत्रोंमें आंजे तो रतौंधी दूर होती है।

अथान्यः--पुनर्नवाघृतं सद्यश्चक्षुस्तेजः करं भवेत् ।

पुनर्नवामें सिद्धकिया हुआ घृत शीघ्र नेत्रकान्ति बढ़ानेवाला है।

ज्वरहरणम्--अपामार्गस्य मूलं च कन्यकासूत्रबन्धने । स्वात्यां तथा वैष्णवे च ज्वरं हन्ति सुदारुणम् ।

ज्वरहरण चिकित्सा कहते हैं । अपामार्गकी जड़को कुमारी कन्याके हाथसे कते सूत्रमें बांधकर स्वाती अथवा विष्णु नक्षत्रमें यदि शिरोभागमें धारण करे तो शीघ्र ही ज्वर दूर हो ।

सर्वज्वरनिवारणम्--रक्तवाट्या मूलमर्कवारे कदलीसूत्रै. शय्यायां दापयेत् सर्वज्वरं तापज्वरं हरेत् ।

अब सर्वज्वर शान्ति उपाय कहा जाता है । लाल बाडीकी जड़को मंगल-वारके दिन केलेके सूत्रमें लपेटकर यदि शय्याके एक पायेमें बांधे तो ताप आदि सर्व प्रकारके ज्वर शांत होते हैं।

उदररोगप्रशमनम्--नागेश्वरमूलं मधुना सह पानादुदररोग शांतिः ।

उदररोग शान्ति का उपाय कहते हैं । नागेश्वरकी जड़को शहतमें मिलाकर सेवन करनेसे उदररोग शांत होता है ।

तृष्णानाशः--रक्तचन्दनं वर्षयित्वा तोलकं जलसंमिश्रं वामहस्ते गृहीत्वा मनुमष्टोत्तरशतं संज्यप्य पिबेत् । सप्ताहात्तस्य तृष्णा-नाशो भविष्यति ।

अब तृष्णानाश होनेकी विधि कहते हैं । लाल चंदनको पानीमें घिस-कर और एक तोला पानी मिलाकर बायें हाथमें लेकर १०८ वार आगे कहे-हुए मंत्रद्वारा अभिमन्त्रित कर पान करने से एक सप्ताह में तृष्णाशांति होती है ।

मन्त्रस्तु--शब्दबीजद्वयं भद्रे नाशय द्वितयं वदेत् । तृष्णेति पद-मुच्चार्य ततः स्वाहा मनुर्मतः । अनेन मनुना देवि तृष्णानाशो भवि-ष्यति ।

हे भद्रे ! अब मंत्रोद्धार विधि कहते हैं । दो शब्दबीज दो बार नाशय-पद, तृष्णापद, स्वाहापद, इनको जोड़ देनेसे मंत्रोद्धार होता है, हे देवि । मन्त्रसे अभिमंत्रित जल पान करनेसे तृष्णा नष्ट होती है ।

सर्वापच्छान्तिकरं महास्वस्त्ययनम्

अथ वक्ष्ये महेशानी महास्वस्त्ययनं शृणु । सर्वसिद्धिकरं पुण्यं सर्वपापविनाशनम् ।। सर्वोपद्रवशमनं सर्वारिष्टविनाशनम् । महा-व्याधिप्रशमनमपस्मारविनाशनम् ।। योगिनीभूतवेतालाः प्रेत-कूष्माण्डपन्नगाः । तत्र स्थाने न तिष्ठन्ति डाकिन्याद्या विशेषतः।

हे महेशानि । अब सम्पूर्ण आपत्तियों को दूरकर शान्तिप्रदान करने-वाला स्वस्त्ययन कहते हैं । हे देवि ! शान्तिप्रद महास्वस्त्ययन श्रवण करो । इस स्वस्त्ययनके पाठ करने मात्रसे सर्वसिद्धि प्राप्त होती है । यह परम पवित्र और सम्पूर्ण पाप, संपूर्ण उपद्रव, और सम्पूर्ण अरिष्टविनाशक है । इसके उच्चारण करनेसे महाव्याधि और अपस्मार (मृगी) दूर होते हैं । योगिनी, भूत, वेताल, प्रेत, कूष्माण्ड, पन्नगादि कदापि उस स्थानमें वास नहीं करते हैं जहां पर निरन्तर इस महास्वस्त्ययनका पाठ होता रहता है ।

कृत्यामभ्यर्च्चयेद्देवि यथाविधि पुरःसरम् । षोडसारं लिखेत्पद्मं योनियुग्मं सबिन्दुकम् ।। तन्मध्येऽष्टदलं लिख्य यकारादीन्न्यसेत्क्र-मात् । तन्मध्ये चैव षट्कोणं लिखेन्मूलमनुस्मरन् ।। चन्द्रबिम्बं लिखे-न्मध्ये असाध्ये पार्थिवं शिवम् । तस्य मध्ये न्यसेत् कुंभं गले स्रग्दाम-भूषितम् ।। तस्य मध्ये न्यसेत् कृत्यां सर्वलक्षणसंयुताम् । पूजयेच्च यथान्यासं पायसन्तु निवेदयेत् ।। परितोष्य घटे न्यस्य असितांगादि-भैरवान् । गन्धपुष्पादिनाभ्यर्च्य तद्बाह्ये क्षेत्रपालकान् ।। लोकपालं यजेद्देवि तदग्रे होममाचरेत् । जुहुयादाज्यापामार्गेण रक्षतांभिदम-र्षणौ ।। दूर्वाग्रखदिराश्वत्थं प्रत्येकन्तु शतादिकम् ।। कुण्डे वा स्थण्डिले वापि होमकर्म समाचरेत् ।। तस्य दक्षिणपार्श्वे तु लक्ष्मीं ध्यायेद्यथा-विधि । कुण्डमध्ये न्यसेद्देवीं दक्षिणे च श्रियं स्मरेत् ।। वामपार्श्वे

स्मरेद्देवीं हृल्लेखां परमेश्वरीम् । तस्यैव वामपार्श्वे तु पूजयेद्दश नायकम् ।। अयुतं मूलमंत्रञ्च जपेन्मृत्युविनाशनम् । अयुतं भ्रूण- हत्यायां जपेत् परिमाणं विदुः ।। महाव्याधि प्रशमनं तावज्जप्त्वा- भिषेकतः । एवं यः कुरुते मर्त्यः पुण्यां गतिमवाप्नुयात् ।। तस्यावश्यं न विद्येत व्याधिभ्योऽपि भयंनहि ।

हे देवि ! यथाविधान कृत्या देवीका पूजन करे । षोडश दलकमल लिख सबिन्दु योनियुग्म लिखे । उस योनियुग्मके मध्यमें अष्टदल कमल लिख- कर क्रमानुसार यकारादिक लिख उसके मध्यमें षट्कोण यन्त्र लिख मन्त्रका ध्यान करे । मध्यमें चंद्रबिम्ब लिखे । अशक्तिमें पार्थिव शिवलिंग ही स्थापित कर दे । उसके मध्यमें कुम्भ स्थापन कर कंठदेश पुष्पमालासे विभूषित करे । कलशके ऊपर कृत्यादेवीको स्थापित करे जो कि सर्वलक्षणयुक्त हैं । यथान्यास पूजन कर पायस प्रदान करे । घटके ऊपर न्यासकर असितांग (उज्ज्वल वर्ण) भैरवका ध्यान कर गन्धपुष्पादि प्रदानकर बाह्य प्रदेशमें क्षेत्रपालका पूजन करे । अग्रभागमें लोकपालोंका पूजन कर हवन करे । दक्षिण भागमें यथाविधान लक्ष्मीजीका ध्यान करे । कुण्डके मध्यमें देवजीको स्थापित कर दक्षिणभागमें श्रीका ध्यान करे । हृदयमें स्थित देवीजीका वाम भागमें ध्यान करे । उसीके वामभागमें दशनायकोंका पूजन करे । मृत्यु निवारण के लिए १०००० जप करे । भ्रूणहत्या दोषकी निवृत्तिके लिए भी १०००० ही जप करना चाहिये । महा- व्याधिकी शांतिके लिए १०००० जप कर अभिषेक करे । इस प्रकार करनेसे उत्तम गति प्राप्त होती है । जप करनेवालेको किसी प्रकार की व्याधिसे भय नहीं होता ।

इति क्रियोड्डीशे महातंत्रराजे देवीश्वरसंवादे दशमः पटलः ।। १० ।।

कुमार्यावेशनम्

श्रीईश्वर उवाच—अथवक्ष्यामि संक्षेपात् कुमार्यावेशनं शृणु । सुगुप्तेविजने देशे गोमयेनोपलेपिते । आचार्यः प्रयतो भूत्वा सुस्नातो विजितेन्द्रियः । नवकुम्भान् समादाय शुद्धकुम्भेन पूरयेत् ।।

नवं शरावमानीय कपिलाघृत पूरितम् । कुम्भोपरि समारोप्य दीपं प्रज्वालयेत्ततः ।। शताष्टमन्त्रजापेन कुमारा वा कुमारिकाः । अतीता नागतञ्चैववर्तमानं च यद्भवेत् ।। शुभाशुभानि सर्वाणि पश्यन्ति नात्र संशयः । सम्यग्ध्यात्वा गणेशानं गते यामे जपेन्निशि । शुभाशुभानि कर्माणि कथयन्ति न संशयः । कन्यकार्थी शुचिर्भूत्वा मन्त्रराजं गणेशितुः ।। जप्त्वा दशसहस्राणि भानुरक्ता स्वभावजैः । पुष्पैर्दशांशहवनात् तां कन्यां लभते ध्रुवम् ।।

श्रीशिवजी कहने लगे । हे देवि ! अब संक्षेपसे कुमारी आवेशन कहता हूं सुनो । सुगुप्त (सर्वविधि रक्षित) एकान्त स्थानको गोबरसे लीपकर आचार्य उक्त नियमानुसार स्नान करे और जितेन्द्रिय रहे । पुनः नवीन कुंभको शुद्ध जलसे पूर्ण कर स्थापित करे और घटके ऊपर नई सराईमें कपिला गौके घृतसे दीपक प्रज्वलित कर स्थापित कर १०८ वार मन्त्रका जप करे । यदि जपके समय कुमार अथवा कुमारी दोनोंमेंसे एक अथवा दोनोंही स्वयं पूजा स्थानमें आकर उपस्थित हों तो यथाविधान उनका पूजन करे । उस पूजन प्रसादसे बीतेहुए अथवा आनेवाले और वर्तमान शुभाशुभ स्वयं दिखाई पड़ेंगे इसमें संदेह नहीं है । तत्पश्चात् गणेशजीका ध्यान कर एक प्रहर रात्रि बीते जप कर्ममें रत हो। ऐसा करनेसे प्रसन्न हो स्वयं सन्मुख आकर समस्त शुभाशुभ जैसा होना है कहेगा, परन्तु देवताके रूपको देखकर डरे नहीं । देवता मारता नहीं है । कन्यार्थी पुरुषको चाहिये कि पवित्र होकर गणेश मन्त्र जपे, मन्त्र जपनेके पश्चात् सूर्यमुखीके पुष्पोंसे दशांश हवन करे तो अवश्य उस कन्याको प्राप्त करे ।

काम्यकर्माणि

वक्ष्यामि काम्यकर्माणि साधकानां हिताय वै ।
शास्त्रोक्तेनैव मन्त्रेण संक्षेपान्न तु विस्तरात् ।।

साधकोंके हितार्थ काम्य कर्म कहे जाते हैं शास्त्रोक्त मंत्रहीसे संक्षेपपूर्वक कर्म करे विस्तारपूर्वक नहीं ।

दिव्यज्ञानादिलाभः

स्वहृत्पद्मे गणेशानं कुन्देन्दुधवलप्रभम् ।
शुक्लालंकारसम्पन्नं भावयेद्यो निरन्तरम् ।।
भारती तस्य वक्त्राब्जे शास्त्रज्ञा बहुसुन्दरी ।
नित्यं प्रकाशते सत्यं दिव्यज्ञानप्रदायिनी ।।

अब दिव्य ज्ञानादि प्राप्ति का उपाय कहते हैं । जो मनुष्य निरंतर निज हृदयकमलमें कुन्देन्दु धवल कांतिवाले और श्वेत आभूषणोंसे सुशोभित श्रीगणेश जी महाराजका ध्यान करते हैं उनकी रसना (जीभ) के ऊपर मनोहर रूप धारण करनेवाली और दिव्य ज्ञान देनेवाली सरस्वतीजी वास करती हैं ।

वशीकरणम्

न विनश्येद् गणेशानं सिन्दूर सदृशप्रभम् ।
पाशांकुशधरं ध्यात्वा यो जपेन्मंत्रवित्तमः ।
अनंगवशसम्पन्ना तमभ्येति वरांगना ।।

वशीकरणम् । सिन्दूरके समान है कांति जिनकी ऐसे पाश और अंकुश-धारण करनेवाले गणेशजी महाराजका जो साधक ध्यानकर पूजन करते हैं और मंत्रका जप करते हैं । उन साधकोंके समीप अवश्य काममोहित सुंदरी अंगना स्वयं सेवार्थ आती है ।

प्रकारान्तरम्–पाशांकुशवराभीतिं हिमकुन्देन्दुमल्लिभम् । दिग्वस्त्रं चन्द्रवर्णाभं स्फुरन्माणिक्यमण्डलम् । यः स्मरेत्तस्य वशगा ह्यवश्याऽपि वरांगना ।।

प्रकारांतर कहते हैं । पाश, अंकुश, वर, अभय धारण करनेवाले कुन्दके, फूलके सदृश कांतिवाले, चन्द्रके तुल्य कांतिवाले, स्फुरन् मणियों के मण्डलसे सुशोभित ऐसे दिगम्बर सदा शिवका ध्यान करनेसे मनोहारिणी प्रिया स्वयं वशमें हो जाती है ।

मुखस्तम्भनम्–विवादेषु गणेशानं ज्वलदग्निसमप्रभम् । प्रति-वादिमुखे ध्यायन्प्रजपेन्मनसा मनुम् ।। तन्मुखं स्तंभयेदाशु वादी दीनोऽपि नान्यथा ।

अब मुखस्तम्भन कहते हैं। जलती हुई अग्निके तुल्य कांतिवाले गणेशजीका ध्यान कर यदि विवादविषयमें वादीके सम्मुख मंत्रराजका जप करे तो अवश्य वादीके मुखका स्तम्भन हो और वादी दीनवत् व्यवहार करे।

सर्वरोगहरणम्—अंगुष्ठमानं हृत्पद्मे शुद्धस्फटिकसन्निभम्। चिन्तयित्वा गणेशानं चिदंबरसुधारसम् ॥ अभिषिच्य सुरश्रेष्ठं सततं धरणीतले। सर्वरोगविनिर्मुक्तश्चिरकालं स जीवति ॥

अब सर्वरोगहरण की विधि कहते हैं। शुद्धस्फटिकके तुल्य उज्ज्वल, चेतना स्वरूप, अमृत रसपूर्ण, अंगुष्ठमात्र देहधारी श्री गणेशजीका जो मनुष्य निजहृदयकमलमें ध्यान कर निरंतर पृथिवीतलमें अभिषेक करते हैं। वे सब प्रकारके रोगोंसे मुक्त हो जाते हैं और चिरकालतक जीवनसुख भोगते हैं।

विषहरणम्—शुक्लवर्णं गणेशानं दशबाहूं मदोत्कटम्। शुक्लांबर धरं सौम्यं चिच्छशांकामृतप्लुतम् ॥ भावयेद्धृदयाम्भोजे नित्यं निर्मलमानसः। मंत्री गरुडवत् सद्यस्त्रिविधं हरते विषम् ॥

अब त्रिविध विषहरण का उपाय कहते हैं। शुक्लवर्ण, दशभुज, मदोत्कट, शुक्लवस्त्र धारण करनेवाले, सौम्य, चन्द्र अमृतसे प्लुत ऐसे गणेशजीको जो मंत्री लोग शुद्धचित्तसे निजहृदयकमलमें ध्यान करते हैं वे तीन प्रकारके विष हरण करनेमें गरुडवत् समर्थ हो जाते हैं।

नानाविधकार्याणि—धनार्थी मधुना नित्यं वशार्थी पायसैर्हुनेत्। घृतेन लक्ष्मीसंप्राप्त्यै हुनेत् शर्करया तथा। आयुषे चार्थसंपत्तौ दध्ना च जुहुयात्तथा। अन्नेन चान्नसंपत्त्यै द्रव्याप्त्यै तिलतण्डुलैः ॥ लवणैरप्यनावृष्टचै वृष्टिकामस्तु बिल्वकैः। सौभाग्यार्थी तथा लाजैः कुसुमैश्चापि सोदनैः ॥

अब नानाविध कार्य विधान कहते हैं। धनार्थी सहदसे, वश्यार्थी पायस (खीर) से, लक्ष्मीप्राप्तिके लिए घृत शर्करासे, आयु अथवा अर्थ सम्पत्तिके लिये दधिसे, अन्न प्राप्तिके लिये अन्नसे करे, द्रव्य प्राप्तिके लिये तिल और तण्डुलसे हवन करे। अनावृष्टिके अर्थ लवणसे, वृष्टिकामनाके लिए बेलसे, सौभाग्यवृद्धिके लिये लाजा अथवा ओदन (भात) मिश्रित फूलों की आहुति देनी चाहिये

विविधवशीकरणानि—वशिने जुहुयात् पद्मैः राजानं वशमानयेत् । अश्वत्थोदुंबरप्लक्षन्यग्रोधसमिधो हुनेत् ।। विप्रक्षत्रियविट्शूद्राः सद्यो वश्या भवन्ति वै ।

अब विविधवशीकरण प्रकार कहा जाता है । वश्य कर्ममें कमलदलसे हवन करे । इस प्रकार के हवन से राजा भी वशमें हो सकता है । अश्वत्थ, उदुम्बर, पिलखन, न्यग्रोधकी समिधासे हवन करनेसे ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र सभी वश हो सकते हैं ।

स्त्रीवशीकरणम्—स्त्रीणां प्रतिकृतिं कृत्वा पिष्टेन प्रतिवासरम् । साज्याहुतित्रयन्तस्य वशमायान्ति नान्यथा ।।

अब स्त्रीवशीकरण प्रयोग बतलाते हैं । प्रतिदिन पिष्ट (पिट्ठी) से स्त्रीके आकारकी प्रतिमा बनाये और तीन आज्य (घृत) की आहुति प्रदान करे तो अवश्य वशमें हो ।

प्रकारान्तरम् । मन्त्रराजं जपित्वा तु यथाविधि महोदरम् । दशांशे जुहुयान्मन्त्री राजिकालवणेन च ।। तद्भस्म वामहस्तेन गृहीत्वा ताडयेत् स्त्रियम् । समागच्छति सा नारी मदनानलविह्वला ।।

अब प्रकारांतर कहते हैं । मन्त्री यथाविधान श्रीमहाराज गणेशजीके महामंत्रराजका जप कर राई और निमकसे दशांश हवन करे । तत्पश्चात् हवनकी भस्मको वाम हस्तमें लेकर साध्य स्त्रीके ऊपर डाल दे। इस प्रयोगके करनेसे अवश्य साध्य स्त्री कामदेवसे विह्वल होकर साधकके समीप आ जायेगी ।

रिपुस्तम्भनम्—तद्वच्च प्रजपेदेनं पीतपुष्पैश्च मन्त्रवित् । स्तम्भयेद्रिपुसैन्यं च सामात्यबलवाहनम् ।। प्रतिवादी भवेन्मूको मन्त्रस्यास्य प्रभावतः । स्तम्भयेत् पञ्चद्रव्याणि नात्र कार्या विचारणा ।।

अब रिपुस्तम्भन की विधि कहते हैं । पूर्व की भांति मन्त्रराजका जप कर पीत पुष्पोंसे हवन करे । इस प्रयोगके करनेसे मन्त्री सहित शत्रुके बल (फौज) का स्तंभन होता है । इस मन्त्रराजके प्रतापसे वादीका मुख बन्द

होनेसे बोलने में असमर्थ हो जाता है। इसमें संदेह नहीं है। इस प्रयोग द्वारा पञ्चद्रव्योंका भी स्तम्भन हो जाता है।

शत्रूच्चाटनम्—बिभीतकसमिद्भिस्तु नियतं जुहुयात्तथा। सम्यगुच्चाटयेच्छत्रून् स्वस्थानात्तुविशेषतः॥ मेरुमण्डलतुल्यो वा स देवोद्विग्नमानसः। ग्रामयुद्धे पुरे वापि इमं स्तुत्वा तु होमयेत्॥ उच्चाटयति वेगेन मानुषेषु च का कथा॥

अब शत्रुउच्चाटन प्रयोग कहते हैं। शत्रु उच्चाटन प्रयोगमें बहेड़ेकी समिधाओंसे हवन करे तो अवश्य शत्रुका उच्चाटन हो। विशेष क्या एकवार मेरु पर्वतके तुल्य स्थिरचित पुरुषकाभी उच्चाटन हो सकता है। ग्रामयुद्ध अथवा पुरयुद्धमें मन्त्रराजका जपकर दशांश हवन करे। इस प्रयोगके करनेसे जड पदार्थका भी उच्चाटन हो सकता है मनुष्योंका तो कहनाही क्या है।

मारणम्—मानुषास्थि समानीय सम्यगष्टांगुलीमितम्। मृतकेशैस्तु संवेष्टच सहस्राष्टाभिमन्त्रितम्। कुलिकोदयवेलायां शत्रुद्वारे खनेद्भुवि। सप्ताहान्मरणं तस्य भविष्यति न संशयः॥

अब मारण प्रयोग कहते हैं। आठ अंगुल प्रमाण मनुष्यकी अस्थिके कीलेको मृतक पुरुषके शिरके बालोंसे लपेटकर एक हजार आठ वार (१००८) मन्त्रसे अभिमंत्रितकर कुलिक योगके उदयमें शत्रुके द्वारपर पृथिवी खोदकर दाब दे तो अवश्य शत्रु व्यक्तिका एक सप्ताहके मध्यमें मरण हो।

गणेशयन्त्रम्—अतः परं यन्त्रराजं श्रृणु देवि गणेशितुः। सुसमे भूतले शुद्धे गजाद्यैः सुपरिष्कृते॥ कामक्रोधविनिर्मुक्तः पूर्ववन्न्याससंयुतः। संपूज्य देवदेवशं गणेशं शंकरात्मजम्॥ भूर्जे क्षौमे तस्योपरि यन्त्रराजं समुद्धरेत्। कस्तूरीरोचनायन्त्रकाश्मीरं चन्दनं रसम्॥ गोशकृद्रससंयुक्तैर्मातंगमदमिश्रितैः। सर्वैश्च सुसमैरेभिः प्राणमापूर्य संलिखेत्॥ लेखन्या हेमशूच्या वा जातिकाष्ठेन दूर्वया। षट्त्रिशत्कोणमष्टारं द्वादशारं ततः परम्॥ कवर्गादीनि गायत्र्या वर्णान्यपि लिखेद्बहिः। महाभूमण्डलं कुर्याद्गजाष्टक-

विभूषितम् ।। तद्बाह्यं वारुणं कूर्ममण्डलञ्च नतं शुभम् । कर्णिकायां लिखेन्मत्री दक्षौ प्रणववेष्टितौ ।। अंगानि चाष्टकोणेषु लक्ष्मीमनुदलं लिखेत् । द्वादशारे लिखेच्छक्ति विना नपुंसकस्वरम् । स्वरपत्रं कलापत्रे ततश्चाष्टदलाम्बुजे । कादिमन्ताक्षरञ्चापि सर्वं पूर्वादितो लिखेत् ।। पुनः पार्श्वककोणेषु वादि सान्तं समालिखेत् । एतन्मंत्रं समाख्यातं न देयं यस्य कस्यचित् ।। अणिमाद्यष्टमन्त्रेण चाष्टबाहुं प्रपूजयेत् ।

अब गणेशयन्त्र कहते हैं । हे देवि ! अब श्रीगणेशजी महाराजके यन्त्रको सुनो । गजादिकोंसे अच्छी तरह परिष्कृतशुद्ध समान भाग पृथिवीतलमें, काम-क्रोधको छोड़कर पूर्ववत् न्यासकरके शिवजीके पुत्र देवदेवेश गणेशजीका पूजन करे । भूर्जपत्र अथवा रेशमी वस्त्रके ऊपर कस्तूरी, गोरोचन, केशर, रक्तचंदन, मातंग (हाथीका) मद इत्यादि सुगंधित द्रव्योंकी एकत्रकर गणेशजीका यन्त्र खींच, लेखनी स्वर्ण, चांदी अथवा जातिकाष्ठकी वा दूर्वा हो, यन्त्रराज ३६ कोण, अष्ट अरानिर्मित तथा द्वादश अरा निर्मित हो, उसके बहिर्भागमें गायत्रीके कवर्गादिकोंको बहिर्भागमें लिखे । फिर गजाष्टकसे सुशोभित महाभूमंडलको सुशोभित करे । महाभूमंडलके बहिर्भागमें नत वरुण देवके कूर्ममण्डलको लिखे । साधकको चाहिये कि कमलदलकी कर्णिकाओंमें हकार क्षकार इन दो वर्णोको लिखे । अष्टकोणमें अंग और लक्ष्मी मन्त्र दलोंमें लिखे, द्वादशार कमलमें शक्तिबीज लिखे नपुंसक स्वरके विना, कलापत्रमें स्वरपत्र लिखे । " पुनः " अष्टदलमध्यमें ककार आदि क्षकारात वर्णोको क्रमानुसार लिखे । फिर पार्श्वके कोणोंमें वकार आदि सकारांत वर्णोको लिखे । इस प्रकार वर्णन किया हुआ यन्त्रराज साधकके अतिरिक्त अन्यको देना उचित नहीं है । अणिमादि आठ मंत्रों से अष्टबाहुका पूजन करे ।

अं अणिमायै नमः स्वाहा । लं लक्ष्म्यै नमः । व्यं व्यात्प्यै । प्रं प्राकाम्यायै । मं महिमायै । ईं ईशित्वायै । वं वशित्वायै । कं कामावशायित्वायै नमः स्वाहाः

यह अणिमादि अष्ट मंत्र हैं ।

एवं संपूज्य विधिवन्मन्त्री मुनिगणान्यजेत् । भोजयित्वा विधानेन नानामिष्टफलादिभिः । दिव्यगन्धयुतैःपुष्पैर्दिव्यगन्धप्रलेपनैः । मूषिकं पूजयामास नानामिष्टफलादिभिः । ॐ समूषिकाय गणाधिपवाहनाय धर्मराजाय स्वाहा । इत्यनेनैवमन्त्रेण मूषिकं पूजयेत्ततः । एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ।

मंत्री इस प्रकार पूजनकर मुनियोंका पूजन करे और नाना प्रकारके मिष्टान्न तथा फलादि द्वारा ब्राह्मणोंको भोजन कराये । पुनः दिव्य गंध, पुष्प और दिव्य प्रलेपनादिकोंसे गणेशजीके वाहन मूषक राजका पूजन कर मिष्टान्न और फलादिकोंसे तृप्त करे। यह मंत्र है । 'ॐ समूषिकाय गणाधिपवाहनाय धर्मराजाय स्वाहा" इस मंत्रसे मूषिकराजका पूजन करे । 'एकदंतायविद्महे वक्रतुंडाय धीमहि तन्नो दंतिः प्रचोदयात्' यह मूषिक गायत्री मंत्र है ।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे शिवगौरीसंवादे
एकादशःपटलः ।। ११ ।।

वशीकरणम्—पलार्द्धस्वर्णेन रजतेन वा साध्यस्य प्रतिमां कृत्वा सार्धहस्तं गर्तं कृत्वा हरितालहरिद्राचूर्णकं पलार्द्धं तत्र निःक्षिप्य रक्तसाने तत्रोपविश्य चतुर्दिक्षु पताकां निवेश्य तिलपूर्णघटमधःकृत्वा संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा पूर्वास्यः प्रवालमालया दशसाहस्रजपेन प्रयोगार्हो भवेत् ।

अब वशीकरण प्रयोग की विधि कहते हैं ।। प्रथम पलार्द्ध (आधापल) स्वर्ण अथवा चांदीकी, साध्य (जिसके ऊपर प्रयोग किया जाय) उसकी प्रतिमा बनाये पुनः १ हाथ गहराई का पृथिवीमें गड्ढा खोदकर उसमें पिसी हुई हलदी और हरतालका चूर्ण बिछाये । साधक रक्त आसनके ऊपर बैठकर चारों दिशाओंमें ध्वजा (झंडी) लगाकर तिलपूर्ण घटकी प्राणप्रतिष्ठा कर स्थापित करे । प्रवाल (मूंगा) मालासे सुशोभित करे । पुनः साधक पूर्वाभिमुख दशहजार जप करे तब प्रयोगके योग्य हो ।

मन्त्रः–प्रणवं पूर्वमुच्चार्य मायाबीजं द्वितीयकम् । कात्वं त्वल्लाकिनीयुक्तं वामकर्णेन्दुभूषितम् । ततो मत्तुपदं ब्रूयाच्चामुण्डे तदनन्तरम् । साध्यनाम ततो न्यस्य वशमानय तत्परम् । बह्निजायावधिर्मन्त्रं जपेद्दशसहस्रकम् । अथान्यत् । चामुण्डे मोहय मोहय असुकं वशमानय स्वाहा । प्रातः स्नात्वा हरिष्याशी जितेन्द्रियः शुचिर्भूत्वा । प्रातःकालमारभ्य मध्यन्दिनावधिजपसमाप्तेर्दशांशादिक्रमेण होमादींश्च कारयेत् । जातीपुष्पैर्होमेन वशयेन्नात्र संशयः । कामतुल्यश्च नारीणां रिपूणां शमनोपमः । यावज्जीवनपर्यन्तं स्मरणं च प्रजायते ।।

प्रथम प्रवणका उच्चारण करे । द्वितीय वार मायाबीजका, तीसरी वार 'कात्वं त्वल्लाकिनी' युक्त वाम कर्ण और इन्दुभूषित मत्तपदका उच्चारण करे । तत्पश्चात् चामुण्डे इस पदको मिश्रित कर साध्य व्यक्तिके नामकी भी योजना कर और 'वशमानय स्वाहा। " यह अन्तमें मिलादे । इस प्रकार दश हज़ार मंत्र जपे। अन्य विधि 'चामुंडे मोहय मोहय' अमुकं वशमानय स्वाहा।' अथवा इस मंत्रका जप करे, प्रातःकाल स्नान कर, हविष्यान्नका भोजन करनेवाला जितेन्द्रिय साधक व्यक्ति शुद्धता और पवित्रतापूर्वक प्रातःकालसे लेकर मध्याह्नतक जपकर जपक्रमानुसार दशांश हवनादि करे । जातिपुष्पोंसे हवन करनेसे अवश्य साध्य व्यक्ति वश्य हो जायगा । कामदेवके तुल्य मनोहर, स्त्रियोंको प्यारा और यमके समान असह्य शत्रुवर्गको जीवनपर्यंत साधक व्यक्ति प्रतीत होगा ।

अन्यच्च ।–श्वेतापराजितामूलं पेषयेद्रोचनायुतम् । शतेन मन्त्रितं कृत्वा तिलकं कारयेत्ततः ।। वशयेन्नात्र संदेहः ।

सफेद, अपराजिताकी जड़को पीसकर और गोरोचन मिलाकर सौ बार मंत्रसे अभिमंत्रित कर निज मस्तकके ऊपर तिलक करे । तिलको देखने मात्रहीसे साध्यव्यक्ति अवश्य वश हो जायगा ।

राजवशीकरणम्– रक्तपुष्पेण चामुण्डापूजा । ध्यानम् । दंष्ट्राकोटिविशंकटा सुवदना सान्द्रा कृकारे स्थिता खट्वांगासिनि-

गूढदक्षिणकरा वामेन पाशांकुशा ।। श्यामा पिंगलमूर्द्धजा भयकरी शार्दूलचर्मावृत्ता चामुण्डा शववाहिनी जपविधौ ध्येया सदा साधकैः । जप्त्वा किंशुककुसुमैर्हुत्वा फलप्राप्तिः । आद्यन्ते महती पूजापञ्च दिनप्रयोगेण राजानं वशमानयेत् ।

अब राजवशीकरण प्रयोग कहते हैं । रक्तपुष्पोंसे चामुंडाका पूजन करे । ध्यान–दंष्ट्राकोटिसे विशंकट, मनोहर मुखसे सुशोभित, दक्षिण हस्तमें तलवार धारण करनेवाली, वामहस्तमें पाश और अंकुश लिये, श्यामवर्णवाली पिंगल वर्णवाले केशोंसे विभूषित है शिर जिसका, शत्रु वर्गको भय देनेवाली, शार्दूल चर्मसे आच्छादित शरीरवाली, शववाहिनी चामुण्डाका ध्यान करते हैं और इसी प्रकार जप कर्ममें सदा साधकोंको चामुण्डाका ध्यान करना चाहिये । टेसूके फूलोंसे किया हुआ आवाहन फल प्रदान करनेमें समर्थ होता है । आदि अन्तमें बृहत् पूजा करनी चाहिये । पांच दिनके प्रयोगसे राजा वशमें हो जाता है ।

प्रकारान्तरेण वशीकरणम्–मृगशीर्षे तु संग्राह्यं सुरक्तकरवीरकम् । नवांगुलं कीलकं तत् सप्तवाराभिमन्त्रितम् । यस्य नाम्ना खनेद्भूमौ स वश्यो भवति ध्रुवम् । मन्त्रः । ॐ हुँ हुँ स्वाहा । तत्तत्स्थाने यथासंख्यमनुक्ते त्वयुतं जपेत् ।

वशीकरण की दूसरी विधि कहते हैं । मृगशिर नक्षत्रमें रक्त करवीरके काष्ठको लेकर उसमेंसे नौ अंगुलप्रमाण एक कील बनाकर उसे सातवार मंत्रसे अभिमंत्रित कर साध्य व्यक्तिका नाम उच्चारण कर पृथिवीमें दाब दे तो साध्य व्यक्ति अवश्य वशमें हो जायगा । यह मंत्र है । हुं हुं स्वाहा । जिस प्रयोगमें जितना जप कहा गया है उतनाही होना चाहिये । जहां कुछ भी नहीं कहा है वहां दश हजार जप करे ।

इति क्रियोड्डीशे महातंत्रराजे गौरीश्वरसंवादे द्वादशः पटलः ।। १२ ।।

विद्वेषणम् –गृहीत्वा शल्लकीकण्टं निखनेद्भू विदारतः । कलहो जायते नित्यं शत्रोर्गेहे न संशयः । मन्त्रः । ॐ नमोनारायणाय अमुकामुकेन सह विद्वेषं कुरु कुरु स्वाहा ।

अब विद्वेषण प्रयोग कहते हैं । साहीके कांटेको निम्नलिखित मंत्रसे अभिमंत्रित कर भूमिमें दबा दे, अवश्य द्वेष भाव प्रकट होकर शत्रुओंमें कलह हो । यह मंत्र है । ओं नमो नारायणाय अमुकामुकेन सह विद्वेषं कुरु कुरु स्वाहा ।

अन्यच्च–परस्परं रिपोर्वैरं मित्रेण सह निश्चितम् । महिषाश्वपुरीषाभ्यां गोमूत्रेण समालिखेत् । ययोर्नाम तयोः शीघ्रं विद्वेषश्च परस्परम् ।।

विद्वेषकी दूसरी विधि कहते हैं । महिष और अश्व के पुरीषको गोमूत्र में मिश्रित कर परस्परमें भारी मेलवाले मित्रोंका नाम लिखे तो बहुत शीघ्र ही उन बहुत दिनोंके मिलनेवालोंका अवश्य आपसमें विद्वेष भाव हो जाये ।

अन्यच्च–रक्तेन महिषाश्वेन श्मशानवस्त्रके लिखेत् । ययोर्नाम तयोः शीघ्रं विद्वेषश्च परस्परम् ।। षट्कोणचक्रमध्ये तु रिपोर्नामसमन्वितम् । मन्त्रं ततः प्रवक्ष्यामि महाभैरवसंज्ञकम् ।।

अन्य प्रकारसे विद्वेषण कहते हैं । लालरंगके महिष (भैंसा) और अश्व (घोड़ा) के पुरीषको (लीद गोबरको) गोमूत्रमें मिश्रित कर श्मशान के वस्त्रके ऊपर षट्कोण चक्र खींचे और उसी चक्रके भीतर दोनों मित्रोंका नाम लिखे, जिनका परस्पर विद्वेषण करना इष्ट है । अवश्य इस प्रयोगके करनेसे विद्वेष भाव उत्पन्न होगा । अब महाभैरव श्री भगवतीका मन्त्र वर्णन करते हैं ।

महाभैरवमन्त्रः– ॐ नमो भगवति श्मशानकालिके अमुकं विद्वेषय विद्वेषय हन हन पच पच मथ मथ ॐ फट् स्वाहा । अनेन मंत्रराजेन होमयेद्यत्नतः सुधीः ।। वह्निकुंडे श्मशानाग्निं दीपयेत्खादिरैंधसा । कटुतैलान्वितैः पत्रैर्निम्बस्य परिशोधितैः ।। होमयेदयुत्तं धीमान्साकं तिलयवाक्षतैः ।

ॐनमो भगवति श्मशानकालिके अमुकं विद्वेषय विद्वेषय हन हन पच पच मथ मथ हुं फट् स्वाहा । इस मन्त्रसे अग्निकुण्डमें श्मशानकी अग्निको खैरकी समिधाओंसे प्रज्वलित कर शुद्ध किये हुए नीमके पत्ते, कडुआ तेल, तिल, जौ, चावल इनको मिश्रित कर दश हजार हवन करे ।

भावयन् कालिकां देवीं मन्त्रशीलसमप्रभाम् । व्योमनीलां महाचण्डां सुरासुरविमर्दिनीम् ।। त्रिलोचनां महारावां सर्वाभरण-भूषिताम् ।। कपालकर्तृकाहस्तां चंद्रसूर्योपरिस्थिताम् ।। शरजाल-धराञ्चञ्चत्प्रेत भैरववेष्टिताम् । वसन्तीं पितृगहने सर्वसिद्धि-प्रदायिनीम् ।। होमयेद्विविधैः पुष्पैर्बलिच्छागोपहारकैः । पूजयित्वा महेशानीं भक्तियुक्तेन चेतसा ।। एतद्भस्म समादाय धारयेदभि-मंत्रितम् ।

भस्मना तेन मनुना विद्वेषो जायते नृणाम् ।।

आकाशके तुल्य नीलवर्णवाली, महाचण्डा, सुर और असुरोंको विमर्दन करनेवाली, तीन नेत्रवाली, महाशब्द, करनेवाली सर्व आभूषणोंसे भूषित कपाल और कर्तृका हाथमें लिये चन्द्र सूर्यके ऊपर स्थित, शर समूह धारण करनेवाली, प्रेत तथा भैरवसेवेष्टित, पितृकाननमें वास करनेवाली और समस्त सिद्धियों को देने वाली कालिका देवीकी तृप्तिके लिए विविध पुष्प, छाग बलि इत्यादिसे हवन करे । भक्तियुक्त वित्तसे महेशानीका पूजन करे, पुनः हवनको भस्मको मन्त्रसे अभिमंत्रित कर ललाटमें धारण करे तो शत्रुका विद्वेषभाव अवश्य उत्पन्न हो ।

मन्त्र—ओं द्रीं विद्वेषिणि अमुकामुकयोः परस्परयोर्विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा ।

यही विद्वेषण मन्त्र है ।

अथोच्चाटनम् । सौरारयोर्दिने ग्राह्यं नरास्थि चतुरंगुलम् । निशावसाने संलिख्य प्रधानभवने क्षिपेत् ।। सप्ताहाऽभ्यन्तो शत्रो-राशुचोच्चाटनम्भवेत् ।। द्रूं अमुकस्योच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा । द्रूं अमुकं हन हन स्वाहा ।

शनि वा मंगलवारको चार अंगुल प्रमाण मनुष्यके अस्थिके ऊपर मंत्र लिखकर रात्रिके अन्तमें शत्रुके रहनेके स्थान में फेंक दे तो एक सप्ताहके मध्य शत्रुका अवश्य उच्चाटन हो । द्रूं अमुकस्योच्चाटनं कुरु-कुरु स्वाहा । द्रूं अमुकं हन हन स्वाहा । यह मंत्र है ।

स्तम्भनम्—अमुकस्य मनः स्तम्भय स्तम्भय ह्रुं फट् ।

यह स्तम्भन मन्त्र है ।

शांतिः —शांतिः सर्वाभिचारस्य पञ्चगव्येन जायते । काम्य-प्रयोगे सर्वत्र नियमोऽयुत संख्यकः ।।

अब अभिचार प्रयोगोंकी शान्ति कहते हैं । समस्त अभिचार प्रयोगोंकी शान्ति पञ्चगव्यसे होती है । समस्त काम्य प्रयोगोंमें दश हजार जप करे ऐसा नियम है ।

मारणम् – महाकृत्याप्रयोगः – अतः परं महेशानि मारणं शृणु पार्वति । येन विज्ञातमात्रेण सुसाध्यं भुवनत्रये ।। रुद्रजाया महायोगिन्यतोगौरी पदं वदेत्। भुवनभयंकरीति पदं वर्मास्त्रमुच्चरे-न्मनुम् ।। अथवा प्रथमं न्यासमथातो ब्रह्मणः पदम् । यद्दीर्घयुक्त-बीजेन चांगमन्त्रेण योजना ।। हृदयं च ततोऽङ्गेन धर्मास्त्रेण शिरः-क्रमात् । शिखाकवचनेत्रास्त्रमेवंन्यासक्रमः स्मृतः ।। अंगिराश्च ऋषिर्देविगायत्रीच्छन्द ईरितम्। सिंहवक्त्रा च भूतानां भयंकरि ततः परम् ।। महाकृत्या देवता च इत्युक्त्या न्यासमाचरेत् ।

अब मारण प्रयोग कहते हैं । यह महाकृत्याका प्रयोग है । हे पार्वति ! उसे सुनो ! इसके प्रयोग करनेसे यथार्थ सिद्धि प्राप्त होती है । आगे न्यास क्रम है बुद्धिमान् जन स्वयं जान लेंगे । सिंहवक्त्रा, भूता भयंकरि, महाकृत्या, देवता इन नामोंको उच्चारण कर न्यास करे । इसके ऋषि अंगिरा और छन्द गायत्री है ।

ध्यानम्——सिंहाननां कृष्णमुखीं लम्बगात्रपयोधराम् । दंष्ट्रा-करालवदनां त्रिनेत्रां सर्वप्रोज्ज्वलाम् ।। कृष्णकांचीसमायुक्तां विधू-माग्निसमप्रभाम् । त्रिशूलचक्रमुशलखट्वांगकरपंकजाम् ।। लेलि-हानमहज्जिह्वां विद्युत्पुञ्जसुभीषणाम् । ध्यात्वा कृत्यां विधानेन पूजयेन्मन्त्रवित्तमः ।। ध्यात्वा कृत्यामर्च्चयेद्वै रक्तैः पुष्पैश्च वश्यके।। कृष्णैर्मारणकृत्येषु मांसरक्तासवैः स्तुताम् ।

अब ध्यान कहते हैं। सिंहके मुखके तुल्य मुखवाली, कृष्णमुखी, स्थूल कुचवाली, बृहत् दंष्ट्राओंसे भयंकर मुखवाली, त्रिनेत्रा अर्थात् तीन नेत्र-वाली, उज्वल वर्णवाली, कृष्णकाञ्ची (तागडी) से सुशोभित, प्रज्वलित अग्नि के तुल्य कान्तिवाली, त्रिशूल, चक्र, मुशल, पद्मको चारों हस्तमें धारण करनेवाली, जिह्वासे होठोंको चाटती हुई विद्युत्, (बिजली) पुञ्जके तुल्य भयंकर शब्दवाली ऐसी कृत्या देवीका यथा विधान ध्यान कर पूजन करे। परंतु वश्य कर्ममें लाल पुष्पोंसे पूजन करना चाहिये। मारण प्रयोगमें कृष्ण-पुष्प, मांस तथा रक्तासवसे स्तुति कर पूजन करे।

कृत्याञ्च मदनां कुमार्यश्वच्छादिनीं तथा। भीषणां श्रीमतीं चैव प्रतिष्ठाञ्च ततः परम् ।। विद्यामभ्यर्चयेदष्टपत्रेषु हि (क्रमशः) सुलोचनाम् । पूर्वे तु शांकरीं नाम शुक्लवर्णां वरान्विताम् ।। द्विभुजां सौम्यवदनां पाशांकुशधरां शिवम्। दक्षिणे भीषिकां नाम लम्बजिह्वां सुधामुखीम्। कृष्णवर्णां रक्तमुखीं रक्तमाला-नुलेपनाम्। चतुर्भुजां सिंहनादां महाघोषां कपालिनीम् ।। खड्ग हस्तां शिरोमालां सर्वाभरणभूषिताम्। पश्चिमे वारुणीं नाम स्वर्णवर्णां हसन्मुखीम् ।। सुरुद्रमालिकां शुभ्रदंष्ट्रामभयदां सदा। उत्तरे भीमिकां नाम चतुर्हस्तां भयंकरीम् ।।

मदना, कुमार्यश्वच्छादिनी, भीषणा, श्रीमती ऐसी कृत्या देवीकी प्रतिष्ठा करे। अष्टदल कमलमें विद्यारूप सुलोचना श्रीकृत्या देवीका पूजन करे। पूर्व दिशामें शांकरी, शुक्लवर्णा, वरान्विता, द्विभुजा, सौम्यवदना, पाशांकुशधरा, शिवा इन नामोंसे पूजन करे। दक्षिणभागमें भीषिका, लम्ब-जिह्वा, सुधामुखी, कृष्णवर्णा, रक्तमुखी, रक्तमालानुलेपना, चतुर्भुजा, सिंहनादा महाघोषा, कपालिनी, खड्गहस्ता, शिरोमाला, सर्वाभरणभूषिता इन नामों से पूजन करे। पश्चिम भागमें वारुणी, स्वर्णवर्णा , हसन्मुखी, सुरुद्रमा-लिका, शुभ्रदंष्ट्रा, अभयदा इन नामोंसे पूजन करे। उत्तर भागमें भीमिका, चतुर्भुजा, भयंकरी इन नामोंसे पूजन करे।

पूजयित्वा जपेन्मन्त्रं नित्यमष्टोत्तरं शतम्। अवाप्य विनि-

योगस्तु कर्तव्यो मंत्रिणा सदा ।। कालं विदित्वा प्रतिमां मधूच्छिष्टेन कारयेत् । द्वादशांगुलकं शत्रोर्नखलोमसमन्वितम् ।। हृदये नामधेयञ्च फट्कारञ्च समर्मके । अस्य प्राणान् प्रतिष्ठाप्य मरिचैर्लेपयेत्ततः । मृतब्राह्मणचाण्डालकेशाभ्यां पादयोः पृथक् । बद्ध्वा करे करमथे तोरणे चाप्यधोमुखम् ।। तस्याधो मेखलायुक्तं त्रिकोणं तत्र कुण्डकम् । तत्र शारं विधायाग्निं परिस्तीर्य शरैस्तृणैः ।। बिभीतकं परीधाय कल्पयेद्यस्य मारणम् । जुहुयान्निम्बतैलाक्तैः काकोलूकस्य पुच्छकैः । दारयैनं शोषयैनं मारयेत्यभिधाय च । अष्टोत्तरशतेनैव मनुना विधिना ततः ।। होमान्ते विधिवत् कृत्वा बाह्ये अग्नेश्च सन्निधौ । यो मे द्वेष्टि जनः कश्चिद्दूरस्थो वान्तिकेऽपिच ।। पिब कृत्येऽमुकं तस्य हुमित्युक्त्वा निवेदयेत् । संरक्ष्याग्निं विधानेन नवरात्रं समाचरेत् ।। हुनेद्यावत्तावदस्य भवेदेव रिपोर्मृतिः । अर्कक्षीरे च मरिचं पिष्ट्वा सिद्धार्थमेव च ।। जलैः संलोड्य मंत्रेण रिपुं ध्यात्वा निरुद्धदृक् । कृष्णाम्बरोत्तरीयाग्रपादेनाक्रम्य तद्रिपुम् ।। वज्रशूलमिति ध्यात्वा तस्योपरि तु निक्षिपेत् । नवरात्रात् परे शत्रुर्म्रियते नात्र संशयः ।।

कृत्या देवीके पूजनके उपरान्त नित्यप्रति अष्टोत्तरशत मंत्र जप करना चाहिए । जपसे सदा विनियोग करना चाहिये । पुरश्चरणके कालको जानकर मोमसे प्रतिमा बनाये । परंतु शत्रुकी प्रतिमा १२ अंगुल प्रमाण हो और उसके नख लोम भी अवश्य हों "प्रतिमा विषयमें नख लोम कृत्रिम होते हैं" प्रतिमाके हृदयमें शत्रुका नाम और मर्मस्थान में 'फट' लिखे । शत्रुप्रतिमाकी प्राण प्रतिष्ठा करके मिरचोंको पीसकर सर्वांगमें लेप करे । पुनः मृतक ब्राह्मण तथा मृतक चाण्डालके केशोंसे प्रतिमाके हाथपांव बांधकर अधोमुख तोरणमें लटका दे और उसी प्रतिमाके नीचे मेखलायुक्त त्रिकोण कुण्ड स्थापित करे उस कुंडमें अग्नि स्थापन कर तृण और शरसे अग्निको आच्छादित करे । बहेडेकी माला पहन कर काक, उल्लू इन दोनोंकी पूंछको निम्बपत्र (नीमके पत्ते) और कड़ुवा तेलमें मिलाकर हवन करे । हवनके समय दारय, शोषय, मारय

इन तीन शब्दोंका उच्चारण करता रहे । विधानपूर्वक १०८ बार मंत्र द्वारा हवन करे । पुनः अग्निके समीप में कहे–हे कृत्ये । दूर देशमें रहनेवाला अथवा समीप रहनेवाला जोभी कोई मेरा शत्रू हो उसका रक्त पान करो । ऐसा कह-कर मंत्रके अन्तमें 'हुं' बीज मिश्रित कर आहुति दे । विधानपूर्वक अग्निकी रक्षा कर नवरात्रि तक अथवा जबतक शत्रुका मरण न हो तबतक नियमपूर्वक हवन करता रहे । आकके दूधमें मिर्चोको पीसकर और मन्त्रोच्चारणपूर्वक जल मिलाकर नेत्र मूंदकर शत्रुका ध्यान कर काले वस्त्रोंसे वेष्टित उस शत्रु प्रतिमाको चरणके अंगूठेसे स्पर्शकर और वज्र शूलका ध्यानकर उक्त मिरिच मिश्रित जलको शत्रु की प्रतिमाके ऊपर छिड़क दे तो नवरात्रिके पश्चात् अवश्य शत्रुका मरण हो इसमें किसी प्रकारका संदेह नहीं है ।

बटुकभैरवप्रयोगः––अतः परं महेशानि शृणुष्व कर्मसि-द्धिदम् । बटुकं विमलाङ्गाख्यंपूजयेत् षट्सु कर्मसु ।। (आचम्य स्वस्तिवाचनसूक्तं पठित्वा) अभ्यर्च्य च शिरः पद्मे श्रीगुरुं करुणा-मयम् ।

अब बटुकभैरवका प्रयोग कहा जाता है । हे महेशानि ! कर्ममें सिद्धि देनेवाले वटुकभैरवका प्रयोग सुनो ! विमल है अंङ्ग जिनका ऐसे श्रीबटुकभैरव-जीका पूजन छहों कर्मोंमें करे । आचमनकर स्वस्तिवाचन सूक्तको पढ़कर निज शिरपद्ममें करुणामय श्रीगुरुजीका पूजन करना चाहिये ।

संकल्प :–अद्येत्याद्यमुकगोत्रान्तनामग्रहविशिष्टोपशमनपूर्व-कारोग्यायुर्वृद्धिकामो गणेशादिपूजापूर्वकबटुक पार्थिवशिवपूजनमहं करिष्ये ।

गुरु पूजनके पश्चात् यह संकल्प करना योग्य है ।

शान्तिकादौ––रतिं च पूजयेदादौ क्षेत्रपालं ततः पुनः । रुद्रं च पूजयेद्देवि ध्यानं शृणु महामते ।

शांतिकादिमें प्रथम रतिका पूजन करे तत्पश्चात् क्षेत्रपालका । हे देवि ! रुद्रकाभी पूजन करे, मैं अब ध्यान कोभी कहता हूँ, सुनो ।

प्रणवाद्यं ध्यानम्–शूलहस्तं महारौद्रं सर्वविघ्ननिषूदनम्। पूर्णचन्द्रसमाभासं रुद्रं वृषभवाहनम् ।। एवं ध्वात्वा महाकालीं पूजयेद्रुद्रदैवतम् ।। प्रणवाद्यं रुद्राय नमः इति। भक्तियोगतः शततोलकपरिमितलिंगमानीय कांस्यपात्रे लिंगं संस्थाप्य । सामान्यान्याघ्यं ततः कृत्वा भूतशुद्धि महेश्वरि। प्राणायामम्ंगन्यासं पीठन्यासं समाचरेत् ।।

प्रणव के आदि रुद्र का ध्यान कहते हैं – त्रिशूल है हाथमें जिनके, महारौद्र स्वरूप, समस्त विघ्न नाश करनेवाले, पूर्ण चन्द्रमण्डलके तुल्य कांतिवाले, वृषभवाहन श्रीरुद्र (शिव) जीका ध्यान करते हैं । इस प्रकार रुद्रजीका ध्यान करके रुद्र देवका श्रीमहाकालीका पूजन करे । प्रणवाद्य श्रीरुद्र जीको नमस्कार है भक्तिपूर्वक सौ १०० तोले प्रमाण शिवलिंगको लाकर, अंगन्यास कास्य के पात्रमें स्थापित करके सामान्य अर्थप्रदान कर भूतशुद्धि प्राणायाम पीठन्यास करे ।

ततः ऋष्यादिन्यासः। ततो देहन्यासः। यथा मूर्ध्नि ॐ भैरवाय नमः। एवं ललाटे भीमदर्शनाय नमः। नेत्रयोः भूताश्रयाय नमः। मुखे तीक्ष्णदर्शनाय नमः। कर्णयोः क्षेत्रपाय नमः। हृदि क्षेत्रपालाय नमः। नाभिदेशे क्षेत्राख्याय नमः। कटद्यां सर्वाघनाशनायः नमः। ऊर्वोस्त्रिनेत्राय नमः। जंघयोःरक्तपाणिकाय नमः। पादयोः देवदेवेशाय नमः। सर्वाङ्गे बटुकाय नमः।

तदनंतर ऋष्यादि न्यास करे । तत्पश्चात् देहन्यास करे । यथा-मूर्ध्नि भैरवाय नमः इस मंत्रसे मस्तक स्पर्श करे । एवं ललाटादि सर्वांगका स्पर्श करे । ललाटे भीमदर्शनाय नमः । नेत्रयोःभूताश्रयाय नमः । मुखे तीक्ष्णदर्शनाय नमः। कर्णयोः क्षेत्रपाय नमः । हृदि क्षेत्रपालाय नमः । नाभिदेशे क्षेत्राख्याय नमः । कटद्यां सर्वाधनाशनाय नमः ऊर्वोः त्रिनेत्राय नमः । जंघयोः रक्तपाणिकाय नमः । पादयोःदेववेशाय नमः । सर्वांगे बटुकाय नमः । इस प्रकार अंगन्यास करे ।

करांगन्यासः । ॐ ह्रीं वाँ अंगुष्ठाभ्यां नमः इत्यादि । ॐ ह्राँ वाँ हृदयाय नमः इत्यादि । ततो मूलेन व्यापकं कृत्वा ध्यायेत् । ॐ वन्दे बालमित्यादि संपूज्य । द्वाविंशदक्षरञ्चैवं जपे-द्रुद्रसहस्रकम् । अभिषेकं तर्पणञ्च यथाविधि समाचरेत् । एषा शांतिर्महाशांति कथिताः तव श्रद्धया ।।

तदनंतर करांगन्यास करना चाहिये । ॐ ह्रीं वां अंगुष्ठाभ्यां नमः इस मंत्रसे दोनों हाथोंके अंगूठोंका स्पर्श करे । ॐ ह्रां वां हृदयाय नमः । इस मंत्रसे हृदयका स्पर्श करे । फिर मूलसे व्यापक कर ध्यान करे । ॐवंदे बालमित्यादि इन ध्यान मंत्रमें ध्यान करे । पूजनकर २२ अक्षरके मंत्रका ११ हजार जप करे । यथाविधि अभिषेक और तर्पण करे । हे देवि ! यह महाशांति तुम्हारी श्रद्धासे मैंने वर्णन किये हैं ।

वशीकरणम्-पूर्ववत् संकल्प्य । राजसध्यानेन ॐ उद्यद्भा-स्करादि ध्यात्वा ।

अब वशीकरण प्रयोग कहते हैं । पूर्ववत् संकल्प करके उद्यद्भास्करादि इस राजस ध्यानसे ध्यान करे ।

स्तम्भनम्-अतः परं महादेवि पूजनं क्रूरकर्मणि । पूर्ववत् संकल्प्य । विद्वेषणोच्चाटनादिषु च क्रूरकर्मसु ध्यानं । यथा-ध्याये-न्नीलाद्रिकान्तमित्यादि ध्यात्वा संपूज्यशिवसहस्रसंख्याकमुक्तं शेषे अमुकं वशमानय स्वाहा इति मन्त्रजपकर्माहं करिष्ये ।

अब स्तम्भन प्रयोग की विधि कहते हैं । हे महादेवि ! क्रूरकर्ममें पूजन विधान कहा जाता है । पूर्ववत् संकल्प करके कर्म आरंभ करे । विद्वेषण उच्चा-टन आदि क्रूर कर्मोंमें ध्यान । यथा-'ध्यायेन्नीलाद्रिकान्तम्' इस श्लोक द्वारा ध्यान करके पूजन करे । जप संख्या ११००० ।।

यन्त्रे पूजाक्रमः-पुनर्ध्यात्वा यन्त्रे पुष्पं निधाय आवाहना-दिकं कुर्यात् । यथा तत्र क्रमः । मूलादि सद्योजातमन्त्रेणावाहनम् । यथा मूलं ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः । भवेऽभवे-ऽनातिभवेभवस्व मां भवोद्भवाय नमः । पिनाकधृगिहागच्छ इहा-

गच्छ। पुनर्मूलमुच्चार्य ॐ वामदेवाय नमः एवं ज्येष्ठाय रुद्राय कालाय कलविकरणाय बलाय बलविकरणाय बलप्रमथनाय सर्वभूतदमनाय नमो नमः। उन्मनाय नमः इह तिष्ठ इह तिष्ठ मूलं इह सन्निधेहि।

अब यन्त्रमें पूजन का विधान कहते हैं। फिर ध्यान कर यन्त्रमें पुष्प स्थापित कर आवाहनादि करे। आवाहन मन्त्र यथा – ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः। भवेऽभवेनातिभवेभवस्य मां भवोद्भवाय नमः। पिनाकधृग् इहागच्छ इहागच्छ। फिर मूलका उच्चारण कर इन नाममन्त्रों द्वारा आवाहन करे।

ॐ वामदेवाय नमः। ॐ ज्येष्ठाय नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ कालाय नमः। ॐ कलविकरणाय नमः। ॐ बलाय नमः। ॐ बलविकरणाय नमः। ॐ बलप्रमथनाय नमः। ॐ सर्वभूतदमनाय नमो नमः। ॐ उन्मनाय नमः। इह तिष्ठ इह तिष्ठ मूलं इह सन्निधेहि।

इस प्रकार आवाहन कर पूजन करे।

अघोरेण सन्निरोधनम्। पुनर्मूलं ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्योऽघोरघोरतरेभ्यः।। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमोऽस्तुते रुद्ररूपेभ्यः। इह सन्निरुद्धस्व।

अघोर मंत्रसे सन्निरोधन करे। उपरोक्त मंत्र अघोर मन्त्र है।

तत्पुरुषेण योनिमुद्राप्रदर्शनम्। पुनर्मूलम्। ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रःप्रचोदयात्। इति योनिमुद्रां प्रदर्शयेत्।

'तत्पुरुषेण' इस मंत्रसे मुद्रा दिखाये। फिर मूल मंत्रका जप करे 'ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्' – इस शिवगायत्री मंत्रसे मुद्रा दिखाये।

ईशानेन वन्दनमिति। पुनर्मूलम्। ओं ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्माशिवोमेऽस्तु सदाशिव ॐ। शिवं वन्दयामि नमः। ततः प्राणप्रतिष्ठा। आँ ह्रीं क्रों हंसः बटुकाय नमः पशुपते शूलपाणेः प्राणा इह प्राणाः जीव इह स्थितः। सर्वेन्द्रियाणि। चक्षुः—श्रोत्रघ्राणप्राणाः इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। हुं इत्यवगुण्ठ्य। वमिति धेनुमुद्रयामृतीकृत्य छोटिकाभिर्दिग्बंधनं कृत्वा षडंगानि संपूज्य देवं पूजयेत्।

'ईशान' इस मन्त्रसे वंन्दना करे। फिर मूल में ०। ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मा शिवोमेऽस्तु सदाशिव:ॐ शिवं वंदयामि नमः। इन मंत्रोंसे शिवजीकी वंदना करे। फिर प्राणप्रतिष्ठा करे। आं ह्रीं क्रों हंसः बटुकाय नमः। पशुपतेः शूलपाणेः प्राण इह, प्राणाः। जीव इह स्थितः। सर्वेंद्रियाणि चक्षुः श्रोत्रघ्राणप्राणाः इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। इन मन्त्रों द्वारा उक्त प्रतिमामें प्राणप्रतिष्ठा करे। 'हुं' इस बीजका अवगुंठन कर 'वम्' इस बीजद्वारा धेनुमुद्रा दिखाये, और अमृतीकरण करे। छोटिका। ताली। द्वारा दिग्बन्धन और षडंग पूजन कर देवदेव श्रीशिवजीका पूजन करे।

मूलमुच्चार्य एतत् पाद्यम्। ॐ महादेवाय सोम मूर्तये बटुकात्मने पशुपतये शिवाय नमः। एवं क्रमेणार्घ्याचमनीयादिकं दद्यात्। स्नाने तु विशेषः। यथा। अद्येत्यादि अमुकस्याऽशेषाशुभनिवृत्तिपूर्वकग्रहारिष्टोपशमनारोग्यायुवृद्धिकामनया शततोलकपरिमितदुग्धेन बटुकात्मकपशुपतेर्लिङ्गं स्नापयामि। ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि इत्यादिना स्नापयेत्। ततो जलेन स्नापयित्वा। मूलम्। एष गन्धः। ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः। पुष्पे तु अद्येत्यादि उक्तवत् कामनया बटुकात्मकपशुपतये शिवायाष्टोत्तरशतद्रोणपुष्पाण्यहं संप्रददे। मूलमुच्चार्य ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः। इति मंत्रेण एकं एकं कृत्वा दद्यात्। एवं बिल्वपत्रम्। मधुपर्कं

धूपदीपे तु गन्धवत्। नैवेद्यम्। अद्येत्यादिस्नानीयवत् कामनया एतत् सोपकरणशततोलकपरिमितातपतण्डुलनैवेद्यं बटुकात्मक- पशुपतये शिवाय तुभ्यमहं संप्रददे। ॐ महादेवाय सोममूर्तयेनमः। शततोलकपरिमितसंविदा चूर्णं पानीयं तांबूलं च पूर्ववत् संकल्प्य दद्यात्। इति।

मूल मंत्र उच्चारण करे । 'ॐ महादेवाय सोममूर्तये बटुकात्मने पशुपतये शिवाय नमः ।' इस मन्त्रसे शिवजीको पाद्य प्रदान करे । इसी प्रकार अर्घ्य आचमन आदि भी । परंतु स्नानमें कुछ विशेषता है । यथा । प्रथम संकल्प करे । संकल्प यह है – अद्येत्यादि अमुकस्याशेषाऽशुभनिवृत्तिपूर्वकग्रहारिष्टोपशमनारोग्यायुवृद्धिकामनया शततोलकपरिमितदुग्धेन बटुकात्मकपशुपतेर्लिङ्गं स्नापयामि ।ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि इत्यादिना स्नापयेत् । इस मंत्रसे शिवको स्नान कराये फिर जलसे स्नान कराये और मूल मंत्रका जप करे । महादेवाय सोममूर्तये नमः । इस मंत्रसे गन्ध प्रदान करे, पुष्प भी संकल्पपूर्वक चढ़ाना चाहिये । यह संकल्प है अद्येत्यादि अमुकस्या शेषाऽशुभनिवृत्तिपूर्वकं ग्रहारिष्टोपशमनाऽरोग्यायुवृद्धिकामनया बटुकात्मकपशुपतये शिवायष्टोत्तरशतद्रोणपुष्पाण्यहं संप्रददे । तत्पश्चात् मूलमंत्र उच्चारण कर 'ॐमहादेवाय सोममूर्तये नमः' इस मंत्रसे एक-एक पुष्प शिव प्रतिमाके ऊपर चढ़ाये । इसी प्रकार बिल्वपत्र । मधुपर्क, धूप, दीप, गन्धके तुल्य चढ़ाना संकलपपूर्वक नैवेद्यभी अर्पण करे । यह संकल्प है :– अद्येत्यादि अमुकस्याशेषाऽशुभनिवृत्तिपूर्वकग्रहाऽरिष्टोपशमनाऽऽरोग्यायुवृद्धिकामनया एतत् सोपकरणशततोलकपरिमितातपतण्डुलनैवेद्यं बटुकात्मकपशुपतये शिवाय तुभ्यमहं संप्रददे । इस प्रकार नैवेद्य प्रदानकर तांबूल पूंगीफल आदि भी संकल्प द्वारा ही अर्पण करे ।

वशीकरणमन्त्रे मूलमुच्चार्य ओं भवाय जलमूर्तये बटुकात्मने शिवाय नमः। एवंक्रमेण पूजयेत्। एवमर्घ्याचमनीयं दद्यात्। स्नाने तु अद्येत्यादिअमुकस्यामुकवशीकरणार्थं शततोलकपरिमितघृतेन मधुताना वा बटुकात्मकपाशुपतशिवलिंगं स्नापयामि मूलमुच्चार्य। एष गन्धः ॐ भवाय जलमूर्तये। पुष्पे तु अद्येत्यादि

अमुकस्यामुकवशीकरणार्थम् अष्टोत्तरशतद्रोणपुष्पं बटुकात्मने पशुपतिशिवायाऽहं सम्प्रददे। मूलमुच्चार्य एतत् द्रोणपुष्पं ॐ भवाय जलमूर्तये नमः इति प्रत्येकम्। एवं बिल्वपत्रम्। धूपदीपे तु ॐ भवाय जलमूर्तये नमः। नैवेद्यं तु अद्येत्यादि अमुकस्यामुकवशीकरणार्थंशततोलकपरिमितसोपकरण नैवेद्यं ॐ बटुकात्मकपशुपतिशिवायाऽहं सम्प्रददे। मूलमुच्चार्य एतत् सोपकरणशततोलकपरिमितनैवेद्यं सम्बिदाचूर्णञ्च ॐ भवाय जलमूर्तये नमः। ततः पानार्थोदकम् आचमनीयं ताम्बूलं च दद्यात्।

अत्र वशीकरण मन्त्रकी विधि कहते है, मूल मंत्रका उच्चारण करे। ॐ भवाय जलमूर्तये बटुकात्मने शिवाय नमः इस क्रमानुसार पूजन करे। इसेही क्रमानुसार अर्घ आचमन आदि प्रदान करे। स्नानविषयमें इस प्रकार संकल्प करे—अद्येत्यादि अमुकस्याऽमुकवशीकरणार्थं शततोलकपरिमितघृतेन मधुना वा बटुकात्मकपशुपतिशिवलिंगं स्नापयामि। मूलमंत्रका उच्चारण कर 'ॐ भवाय जलमूर्तये नमः' इस मंत्रसे गंध प्रदान करे। पुष्प संकल्प द्वारा प्रदान करे। संकल्प यह है —अद्येत्यादि अमुकस्यामुकवशीकरणार्थम् अष्टोत्तरशतद्रोणपुष्पं बटुकात्मने पशुपतिशिवायाऽहं सम्प्रददे। मूलमंत्र उच्चारण कर ॐभवाय जलमूर्तये नमः इस मन्त्रसे पृथक्-पृथक् द्रोण '(दोहना) पुष्प चढ़ाये इसी प्रकार बिल्वपत्र भी चढ़ाये। ॐभवाय जलमूर्तये नमः इस मंत्रसे धूप-दीप प्रदान करे। नैवेद्य संकल्पपूर्वक प्रदान करे। संकल्प यह है – अद्येत्यादि अमुकस्यामुक वशीकरणार्थं शततोलकपरिमितसोपकरणनैवेद्यं 'ॐ बटुकात्मकपशुपति शिवायाहं संप्रददे। मूल मंत्रको उच्चारण कर 'ॐभवाय जलमूर्तये नमः' इस मंत्रद्वारा नैवेद्य जल तांम्बूलपूंगीफल आदि प्रदान करे।

ततः अष्टावरणं पूजयेत्। ततोऽष्टमूर्ति पूजयेत् ततो मूलेन पुष्पाञ्जलित्रयं दत्त्वा संकल्प्य शिवसहस्रसंख्याकं तन्मन्त्रं जपेत् शान्तिकादौ क्रूरकर्मण्यपि। ततो गुह्यादिना जपं समाप्य स्तोत्रादिकं पठेत्।

तदनंतर अष्टावरण पूजन करके अष्टमूर्तिका पूजत करे । पुनः मूल मंत्रसे पुष्पाञ्जलि प्रदानकर ११ हजार शिव मन्त्रका जप करे । शांतिकादि क्रूर कर्ममें भी । तदनंतर गुह्यादिसे मंत्र जपको समाप्तकर स्तोत्रादिका पाठ करे ।

ततो बलिदानम्, यथा—मूलमुच्चार्य बटुक भैरवाय एष बलिर्नमः । भैरवपरिवारगणैः सह मम शत्रून् सरुधिरं पिब पिब इमं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा । ॐ शत्रुपक्षस्य रुधिरं पिशितं च दिने दिने । भक्षय स्वगणैः सार्द्धं सारमेयसमन्वितम् ।। ततो विहितद्रव्यैः अष्टोत्तरशतं सहस्रं वा होमयेत् ।

अब बलिदान की विधि कहते हैं । मूल मन्त्रको उच्चारण कर ' बटुकभैरवाय एष बलिर्नमः ' इस मंत्रसे बलिप्रदान करे । 'भैरवपरिवारगणैः सह मम शत्रून् सरुधिरं पिब पिब इमं बलि गृह्ण गृह्ण स्वाहा' बलिप्रदानके समय इस मंत्रका उच्चारण करे । ॐशत्रुपक्षस्य रुधिरं पिशितं च दिने दिने । भक्षय स्वगणैः सार्द्धं सारमेयसमन्वितम् । यह समस्त मंत्र बलिप्रदानके समग्र उच्चारण करने के पश्चात् पीछे कहे हुए कर्मानुसार द्रव्योंसे १०८ अथवा १००० आहुति दे ।

वशीकरणे तु घृताक्तराजिकाभिरष्टोत्तरसहस्र होमः । शान्त्यर्थं दूर्वादिकम् । क्रूरकर्मणि बिल्वपत्रम् । उच्चाटने तु ॐ ह्रीं हुं शिवाय स्वाहा । इति विशेषः । दक्षिणां बटुकात्मक पशुपतये शिवाय तुभ्यमहं सम्प्रददे । श्वेतसर्षपं लवणमिति ।

वशीकरण प्रयोगमें घृत मिश्रित राईसे १००८ वार, करे, शांतिके लिये दूर्वादिकसे, क्रूर कर्ममें बिल्वपत्रसे हवन करे । उच्चाटन प्रयोगमें ॐ ह्रीं श्रीं हुं शिवाय स्वाहा इस मंत्र द्वारा हवन करे । संकल्प द्वारा दक्षिणा प्रदान करे । श्वेत सरसों अथवा लवणसे हवन करे ।

इति क्रियोड्डीशे महातंत्रराजे उमामहेश्वरसंवादे
त्रयोदशः पटलः ।। १३ ।।

षट्कर्मणां कवचं शत्रुमर्दनम्

श्रीदेव्युवाच । श्रुतं बटुकमाहात्म्यं पूर्णविस्मयकारकम् । इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं वैषट्कर्मणाम् ।।

अब शत्रु विनाशकारक षट्कर्म कवच कहते हैं । श्रीदेवीजी कहने लगीं-हे भगवन् ! आपके प्रसादसे महाविस्मयकारक बटुकमाहात्म्य श्रवण किया अब मेरी षट्कर्म कवच श्रवण करनेकी इच्छा है कृपापूर्वक वर्णन कीजिये ।

श्रीईश्वर उवाच । शृणु देवि प्रवक्ष्यामि यन्मां त्वं परिपृच्छसि । श्रवणात् पठनाद्वापि शत्रुनाशाय तत्क्षणात् ।।

शिवजी कहने लगे –देवि ! सुनो, तुम्हारी प्रसन्नता के लिए मैं षट्कर्म कवच वर्णन करता हूं । इस कवचके पाठ करनेसे शत्रुका नाश होता है ।

श्रीदेव्युवाच । त्रैलोक्यमोहनार्थं तु कवचं मे प्रकाशय । त्रैलोक्यशत्रुं संहन्तुं नाशितुं यत्क्षमं भवेत् ।। एवमुक्तो महादेवः क्रुद्धो भूत्वा जगत्पतिः । देवीं प्रबोधयामास वाक्येनामृतवर्षिणा ।।

देवीजी कहने लगीं–भगवन् ! तीनों लोकोंके मोहनार्थ कवचका वर्णन करो । जिस कवचके पाठमात्रहीसे तीनों लोकोंके शत्रुओंका समुदाय नष्ट हो जाय । इस प्रकार श्रीशिवजी महाराज देवीजीकी वाणी श्रवण कर महाक्रोधित हो अमृतवर्षिणीवाणीसे देवीजीको समझाने लगे ।

श्रीमहादेव उवाच

परानिष्टे महादेवि कुतस्ते जायते मतिः ।

हे महादेवि ! दूसरों के अपकार की भावना युक्त विपरीत बुद्धि तुम्हारे अन्दर कहांसे उत्पन्न हो गई ।

श्रीदेव्युवाच । जिघांसन्तं जिघांसीयान्न तेन ब्रह्महा भवेत् । ये यथा मां प्रपद्यन्ते श्रुतिरस्ति पुरातनी । यदि ते वर्तते देव दया हि कथ्यतां मयि ।। शत्रूणां प्राणनाशार्थमुच्चाटनवशीकृतो । तेषांहि बलनाशार्थं सर्वदा प्रयता नराः ।।

श्रीदेवीजी कहने लगी, भगवन् ! श्रुति ऐसा कहती है कि मारनेवालेको अवश्य मारे उसे मारनेसे ब्रह्महत्या दोष नहीं लगता । हे देव ! यदि आपकी कृपा मेरे ऊपर है तो दयाकर शत्रुके प्राणनाश करनेवाले उच्चाटन तथा वश्य आदि प्रयोगोंको कहिये, क्योंकि मनुष्य निज शत्रुके नाशके लिये सदैव यत्न किया ही करते हैं ।

ईश्वर उवाच । शृणु देवि महाभागे कालाग्निप्राणवल्लभे । यस्य धारणमात्रेण शत्रूणां नाशनं भवेत् ।। धृत्वा तु पादमूलेन स्पृष्ट्वा दास इवाकरोत् । शरणागतमात्रन्तु नाशितुं नैव शक्यते ।। शृण देवि महाभागे सावधानावधारय । शत्रूणां प्राणनाशार्थं कुपितः काल एव सः ।।

श्रीशिवजी कहने लगे—हे कालाग्निप्राणवल्लभे ! महादेवि श्रवण करो कि जिस कवचराजके धारण करने से त्रुश नष्ट हो जाते हैं । इस कवचराजको पादमूलमें धारण कर शत्रुका स्पर्श करे तो शत्रु दासकी भांति आज्ञा पालन करे तो फिर उसके प्राण नाश करनेकी क्या जरूरत है क्योंकि, शरणागतके प्राण-नाश करनेमें प्रायश्चित है । हे देवि ! हे महभागे ! सावधान हो कर श्रवण करो । यह कवचराज शत्रुके प्राण नाश करनेमें कुपित कालके तुल्य है ।

दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा । कोटिसूर्यप्रभा काली मम शत्रून् विनाशय । नाशयित्वा क्षणं देवि अन्यशत्रून् विनाशय । क्रीं क्रीं क्रीं उग्रप्रभे विकटदंष्ट्रे परपक्षं मोहय मोहय पच पच मथ मथ दह दह हन हन मारय मारय ये मां हिंसितुमुद्यता योगिनीचक्रैस्तान् वारय वारय छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि करालिनि गृह्ण गृह्ण ओं क्रींक्रीं क्रींक्रीं स्फूरस्फूर पूरपूर पूनपून चूल्वचूल्व धकधक धमधम मारय मारय सर्वजगद्वशमानय ओं नमः स्वाहा ।

यह भद्रकालीका कवच कहा जाता है । दशमुखवाली, दशपाद, दश-भुजा, अञ्जनपर्वतके तुल्य कृष्णवर्णवाली, करोडों सूर्यकान्तिसे शोभित, महाकाली क्षणमात्रमें मेरे भूत, भविष्य और वर्तमान कालिक शत्रुओंका नाश करे । कवच यह है – क्रीं क्रीं क्रीं उग्रप्रभे विकटदंष्ट्रे परपक्षं मोहयमोहय, पच-

पच, मथमथ, दहदह, हनहन,मारयमारय, ये मां हिंसितुमुद्यता योगिनी-चक्रैस्तान् वारयवारय छिन्धिछिन्धि, भिन्धिभिन्धि, करालिनि गृह्णगृह्ण ओं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्फूरस्फूर, पूरपूर, पूनपून, चूल्वचूल्व, धकधक, भ्रमभ्रम मारयमारय, सर्वजगद्वशमानय ओं नमः स्वाहा।

इति ते कवचं देवि भद्रकाल्याः प्रचोदितम्। भूर्जे विलिखित-ञ्चैतत् स्वर्णस्थं धारयेद्यदि। शिखायां दक्षिणे बाहौ कण्ठे वा धारये-द्यदि। त्रैलोक्यं मोहयेत् क्रोधात् त्रैलोक्यं चूर्णयेत् क्षणात्। पुत्र-वान्धनवान्धीमान् नानाविद्यानिधिर्भवेत्। ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्रस्पर्शनात्ततः॥ शत्रवो नाशमायान्ति रजतेन प्रधारितम्। मासमात्रेण शत्रूणां महाविपदकारणम्॥ यंयं शत्रुं स्मरन्मर्त्यः कवचं पठति ध्रुवम्। तं तं नाशयते सद्यस्तथ्यं ते तद्वदाम्यहम्॥ धारणे भजते शत्रुः कण्ठशोषं सदा भवेत्। हृत्कम्पो जायते तावद्यावत्तस्य कृपा न चेत्॥

हे देवि! इस प्रकार श्रीभद्रकालीजीका कवच तुम्हें सुनाया। यदि इस कवचराजको गोरोचन आदि द्रव्योंसे भोजपत्रके ऊपर लिखकर सुवर्णके ताबीजमें बन्दकर शिखा, दक्षिण बाहु अथवा कण्ठमें धारण करे तो क्रोधपूर्वक तीन लोकोंको मोहित कर तत्क्षण स्वाधीन करनेमें समर्थ हो। पुत्रार्थी पुत्र, धनार्थी धनको, विद्यार्थी नाना प्रकारकी विद्याओंको प्राप्त करे। इसमें किसी प्रकारका सन्देह नहीं है। यदि इस यंत्रराजको उक्त विधाना-नुसार लिखकर चांदीके ताबीजमें बन्दकर उपर्युक्त स्थानोंमें धारण करे तो धारण करनेवालेके शरीरके स्पर्श मात्रसे ही ब्रह्मादि अस्त्र शस्त्र शत्रुका नाश करनेमें समर्थ हो जाय। इस प्रयोगके अनुष्ठान करनेसे एक माससे पहले ही शत्रुको महाविपत्ति प्राप्त हो जाती है। प्रयोगकर्त्ता जिस व्यक्तिका चिन्तन कर इस प्रयोगको आरंभ करेगा, अवश्य उस व्यक्तिका नाश होगा। शत्रुका ध्यानकर यदि वह कवचराज निज कण्ठदेशमें धारण किया जाय तो शत्रुका कण्ठ सूखने लगे और शरीर कांपने लगे, जबतक भद्रकालीकी कृपा न हो कंपता ही रहे॥ इति कवचम्॥

मोहनकवचम्

ईश्वर उवाच ।। त्रिकालं गोपितं देवि कलिकाले प्रकाशितम् । न वक्तव्यं न द्रष्टव्यं तव स्नेहात् प्रकाश्यते ।। काली दिगम्बरी देवि जगन्मोहनकारिणी । तच्छृणुष्व महादेवि त्रैलोक्यमोहनन्त्विदम् ।।

श्रीशिवजी कहने लगे–हे देवि ! यह कवचराज सत्ययुगादितीनों कालोंमें गुप्त रहा परंतु अब इस कराल कलिकालके समयमें यह कवचराज प्रकाशित हुआ है इसमें तुम्हारा प्रेम ही कारण है अन्यथा यह देवताओंको भी अलभ्य कवचराज प्रकट करनेके योग्य न था । " किन्तु " अब तुम इस कवच-राजको न तो किसीको देना और न किसीको दिखाना । हे प्रिये ! जगत्को मोह करनेवाली काली दिगम्बराके प्रयोगको वर्णन करता हू सुनो ! हे महा-देवि ! यह महाप्रयोग तीनों लोकोंको मोहित करनेवाला है ।

अस्य महाकालभैरव ऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः । श्मशानकालिका देवता सर्वमोहने विनियोगः । ऐं क्रीं क्रूं क्रः स्वाहा विवादे पातु मां सदा । क्लीं दक्षिणकालिकादेवतायै सभामध्ये जयप्रदा ।। क्रीं क्रीं श्यामांगिन्यै शत्रुं मारय मारय । ह्लीं क्रीं क्रीं क्लीं त्रैलोक्यं वशमानय ।। ह्लीं श्रीं क्रीं मां रक्ष रक्ष विवादे राजगोचरे । द्वाविंशत्यक्षरी ब्रह्म सर्वत्र रक्ष मां सदा ।। कवचे वर्जितं यत्र तत्र मां पातु कालिका । सर्वत्र रक्ष मां देवि श्यामा तूग्रस्वरूपिणी ।। एतेषां परमं मोहं भव-द्भाग्ये प्रकाशितम् । सदा यस्तु पठेद्वापि त्रैलोक्यं वशमानयेत् ।। इदं कवचमज्ञात्वा पूजयेद्घोररूपिणीम् । सर्वदा स महाव्याधिपीडितो नात्र संशयः । अल्पायुः स भवेद्रोगी कथितं तव नारद । धारणं कवच-स्यास्य भूर्जपत्रे विशेषतः ।। सयन्त्रं कवचं धृत्वा इच्छासिद्धिः प्रजा-यते । शुक्लाष्टम्यां लिखेन्मंत्रं धारयेत् स्वर्णपत्रके ।। कवचस्यास्य माहात्म्यं नाहं वक्तुं महामुने । शिखायां धारयेद्योगी फलार्थी दक्षिणे भुजे ।। इदं कल्पद्रुमं देवि तव स्नेहात् प्रकाश्यते । गोपनीयं प्रयत्नेन पठनीयं महामुने ।।

इस कवचका महाकालभैरव ऋषि, अनुष्टुप् छंद और श्मशान कालिका देवता है। सर्व मोहनार्थ यह विनियोग है –" ऐं क्रीं क्रूं क: स्वाहा विवादे पातु मां सदा। क्लीं दक्षिणकालिका देवतायै सभामध्ये जयप्रदा। क्रीं क्रीं श्यामांगिन्यै शत्रु मारय-मारय। ह्लीं क्रीं क्लीं त्रैलोक्यं वशमानय। ह्लीं श्रीं क्रीं मां रक्षरक्ष विवादे राजगोचरे द्वाविंशत्यक्षरी ब्रह्म सर्वत्र रक्ष मां सदा' (यह कवच मन्त्र है) रक्षा रहित स्थानमें कालिका देवी मेरी रक्षा करे, उग्र स्वरूपिणी श्यामा सदा सर्व स्थानमें मेरी रक्षा करे। यह परम मोहन कवच है। हे प्रिये ! तुम्हारे हेतु ही प्रकाशित किया गया है। जो मनुष्य सदा इस कवचका पाठ करते हैं तीनों लोक उनके वशमें हैं। विना इस कवचके जाने जो मनुष्य घोररूपिणी कालिकाका पूजन करेंगे अवश्य सर्वदा वह मनुष्य महाव्याधियोंसे पीडित, अल्पायु और सदा रोगी रहेंगे। हे नारद ! यह बात सत्य जानो। विशेषकर भोजपत्रके ऊपर लिखकर इस यन्त्रको धारण करे। यत्नपूर्वक इस कवचके धारण करनेसे इच्छासिद्धि होती है। शुक्लपक्षकी अष्टमीको भोजपत्रके ऊपर लिखकर धारण करे, स्वर्णपत्रमें बंद करके हे महात्मन् ! इस कवच के माहात्म्यको वर्णन करनेके लिये मैं समर्थ नहीं हूँ। योगी शिखामें और फलार्थी दक्षिण भुजामें धारण करे। हे देवि ! यह कल्पद्रुम तुम्हारे स्नेहसे प्रकाशित किया है। परन्तु सर्वथा यह कल्पद्रुम गुप्त रखने योग्य है।

श्रीविष्णुरुवाच–इत्येवं कवचं नित्यं महालक्ष्मि प्रपठचताम्। अवश्यं वशमायाति त्रैलोक्यं सचराचरम्। शिवेन कथितं पूर्वं नारदे कलहास्पदे। तत्पाठान्नारदेनापि मोहितं सचराचरम्।

श्रीविष्णुभगवान् कहने लगे हे महालक्ष्मि ! इस प्रकार यह शत्रुमर्दन कवच पढने से अवश्य तीनों लोक वशमें हो जाते हैं। शत्रुवर्गसे विह्वल नारद जीके प्रति श्रीशिवजी महाराजने यह कवचराज वर्णन किया था इसके पाठ करनेसे नारदजीने भी सचर तथा अचर जीवमात्रको मोहित कर लिया। इति कवच समाप्त ।।

इति क्रियोड्डीशे महातंत्रराजे देवीश्वरसंवादे चर्तुदश:पटल: ।। १४ ।।

सर्वरक्षाकरं कवचम्

श्रीदेव्युवाच–भगवन्देवदेवेश सर्वाऽऽम्नायप्रपूजितः । सर्वं मे कथितं देव कवचं न प्रकाशितम् ।। प्रासादाख्यस्य मंत्रस्य कवचं मे प्रकाशय । सर्वरक्षाकरं देवं यदि स्नेहोऽस्ति सम्प्रति ।।

श्रीदेवीजी कहने लगीं । हे भगवन् ! हे देवदेवेश ! हे सर्वाम्नायपूजित, देव ! सब कुछ आपने मेरे सन्मुख वर्णन किया परंतु कवचका वर्णन नहीं किया सो अब कृपापूर्वक प्रासादाख्य मंत्रका कवच वर्णन कीजिये जो कि सर्व रक्षाओं का करनेवाला है ।

श्रीभगवानुवाच–प्रासादमन्त्रकवचस्य वामदेव ऋषिः, पंक्तिश्छन्दां, सदाशिवो देवता, साधकाभीष्टसिद्धये विनियोगः प्रकीर्तितः । शिरो मे सर्वदा पातु प्रासादाख्यः सदाशिवः ।। षडक्षरस्वरूपो मे वदनं च महेश्वरः । पंचाक्षरात्मा भगवान् भुजौ मे परिरक्षतु ।। मृत्युञ्जयस्त्रिबीजात्मा आयू रक्षतु मे सदा । वटमूलसमासीनो दक्षिणामूर्तिरव्ययः ।। सदा मां सर्वतः पातु षट्त्रिंशद्वर्णरूपधृक् । द्वाविंशार्णात्मको रुद्रः कुक्षौ मे परिरक्षतु । त्रिवर्णात्मा नीलकण्ठः कण्ठं रक्षतु सर्वदा । चिन्तामणिर्बीजरूपे सर्वनारीश्वरो हरः ।। सदा रक्षतु मे गुह्यं सर्वसम्पत्प्रदायकः । एकाक्षरस्वरूपात्मा कूटरूपी महेश्वरः ।। मार्तंडभैरवो नित्यं पादौ मे परिरक्षतु । ओमित्याख्यो महाबीजस्वरूपस्त्रिपुरान्तकः ।। सदा मां रणभूमौ तु रक्षतु त्रिदशाधिपः । ऊर्द्ध्वमूर्द्धानमीशानो मम रक्षतु सर्वदा ।। दक्षिणस्यां तत्पुरुषो अव्यान्मे गिरिनायकः । अघोराख्यो महादेव पूर्वस्यां परिरक्षतु ।। वामदेवपश्चिमस्यां सदा मे परिरक्षतु । उत्तरस्यां सदा पातु सद्योजातः स्वरूपधृक् ।।

श्रीविष्णुभगवान् ने कहा । प्रासादमंत्र कवचके वामदेव ऋषि, पंक्तिश्छंद और सदाशिव देवता हैं । साधक अभीष्ट सिद्धिके लिए विनियोग है । प्रासादाख्य सदाशिव मेरे शिरोभागकी, षडक्षर स्वरूप महेश्वर मेरे मुखकी-

पंचारक्षरात्मा भगवान् शिव मेरी दोनों भुजाओंकी, और त्रिबीजात्मा मृत्युं-ञ्जय सदा मेरी आयुकी रक्षा करें। वटवृक्षके मूलमें स्थित अव्यय दक्षिणामूर्ति, षट्त्रिंशत् (३६) वर्णरूप धारण करनेवाले सदाशिव सर्वदा समस्त स्थानोंमें मेरी रक्षा करें। द्वाविंशवर्णात्मक रुद्रदेव मेरी दोनों कुक्षियोंकी रक्षा करें। त्रिवर्णात्मक नीलकंठ मेरे कंठकी रक्षा करें। चिंतामणि सर्व नाडियोंमें, बीज-रूप ईश्वर हर सदा मेरे गुह्य देशकी रक्षा करें। सर्वसम्पत्प्रदाता एकाक्षर स्वरूपात्मा, कूटरूपी महेश्वर, मार्तंड, भैरव, नित्य मेरे पादकी रक्षा करें। ॐ इस मासे पुकारे जाने वाले महाबीजस्वरूप त्रिपुरांतक, त्रिदशाधिप, सदा संग्रामभूमिमें मेरी रक्षा करें। ईशान ऊर्ध्व भागमें मेरी रक्षा करें। गिरिनायक तत्पुरुष दक्षिण दिशामें अघोर नामक महादेव पूर्वदिशामें, वामदेव पश्चिम दिशामें, और सद्योजात स्वरूपधृक उत्तर दिशामें मेरी रक्षा करें।

इत्थं रक्षाकरं देवि कवचं देवदुर्लभम् । प्रातः-काले पठेद्यस्तु सोऽभीष्टफलमाप्नुयात् ।। पूजाकाले पठेद्यस्तु साधको दक्षिणे भुजे । देवा मनुष्या गन्धर्वा वश्यास्तस्य न संशयः । कवचं यस्तु शिरसि धारयेद्यदि मानवः ।। करस्थास्तस्य देवेशि अणिमाद्यष्टसिद्धयः । स्वर्णपत्रे त्विमां विद्यां शुक्लपट्टेन वेष्टिताम् ।। राजतोदरसंविष्टां कृत्वा च धारयेत्सुधीः । संप्राप्य महतीं लक्ष्मीमन्त्रं च शिवरूपधृक् यस्मै कस्मै न दातव्यं न प्रकाश्यं कदाचन । शिष्याय भक्तियुक्ताय साधकाय प्रकाशयेत् ।। अन्यथा सिद्धिहानिः स्यात् सत्यमेतन्म-नोरमे । तव स्नेहान्महादेवि कथितं कवचं शुभम् ।। न देयं कस्य चिद्धूद्रे यदीच्छेदात्मनो हितम् । योऽर्चयेद्गन्धपुष्पाद्यैः कवचं मन्मु-खोदितम् । तेनार्चिता महादेवि सर्वे देवा न संशयः ।।

हे देवि ! इस प्रकार देवताओंको भी दुर्लभ इस कवचराजका जो मनुष्य प्रातःकाल पाठ करते हैं उनको वांछित सिद्धि प्राप्त होती है। जो साधक पूजन समय इस कवचराजको दक्षिण भुजामें बाँधकर पाठ करते हैं देव, मनुष्य और गंधर्व उनके वश्य रहते हैं, इसमें संदेह नहीं है। जो मनुष्य कवचको शिरमें धारण करते हैं, हे देवि ! उन साधकोंके हाथमेंही अणिमादि अष्टसिद्धिय

निवास करती हैं । इस कवचको स्वर्णके ताबीज में बंदकर श्वेत वस्त्रसे वेष्टित करे अथवा चांदीके ताबीजमें बंद कर सफेद रेशमके सूत्रमें पिरोकर भुजा या कंठमें धारण करे तो महालक्ष्मीकी प्राप्ति हो और अंतकालमें शिवरूप होकर कैलासमें वास करे। स्त्रीको वाम भुजा और पुरुषको दक्षिण भुजामें इस यंत्र-राज को धारण करना चाहिये । साधकको छोड़कर अन्य किसी धूर्त पुरुषको यह यंत्रराज न देना और न प्रकाश करना भक्तियुक्त शिष्यके संम्मुख प्रकट करना अन्यथा सिद्धि हानि होती है । हे महादेवि ! यह कवच तुम्हारे स्नेह-वश कहा । हे भद्रे ! अपने शुभकी इच्छा करनेवाला साधक यह कवचराज सर्वसाधारणको न दे। हे महादेवि ! जो साधक मेरे मुखसे निकले इस कवचराजका गंध पुष्पादिसे पूजन करते हैं मानो उन्होंने निस्संदेह समस्त देवताओंका पूजन कर लिया ।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वरसंवादे पंचदशः पटलः ।। १५ ।।

त्र्यम्बकमृत्युञ्जयमन्त्रः

श्रीदेव्युवाच–इदानीं श्रोतुमिच्छामि पूर्वमुक्तं च त्र्यम्बकम् ।। प्रभेदे कथितं देव शान्ति मृतसंजीवनीम् ।।

श्रीदेवीजी कहने लगी । हे देव ! अब त्र्यंबक प्रयोगके श्रवण करनेकी इच्छा है ।

ईश्वर उवाच । शृणु देवि प्रवक्ष्यामि यन्मां त्वं परिपृच्छसि ।। मातृणां तिसृणामम्ब गर्भजातो यतो हरः । अतस्त्र्यम्बक इत्युक्तं मम नाम महेश्वरि ।। वशिष्ठोऽस्य ऋषिः प्रोक्तश्छन्दोऽनुष्टु-बुदाहृतः । देवताऽस्य समुद्दिस्त्रम्बकः पार्वतीपतिः ।। विभक्तै-र्मन्त्रवर्णैश्च षडंगानां च कल्पनाम् । ततश्च वह्निबीजेन समन्ताज्जल-धारया ।। प्राचीरं चिन्तनं कुर्यात्ततः संकल्पमाचरेत् । पुनः संकल्पं देवेशि भूतशुद्धयादिकं च यत् । ततः पश्चात् करन्यासं कुर्याच्च मम सुन्दरि ।

श्रीशिवजी कहने लगे । हे देवि ! जो तुम मुझसे पूछती हो, सुनो, मैं तीन मातृकाओंके गर्भसे उत्पन्न हूँ । हे महेश्वरि ! इसी कारण मेरा नाम त्र्यम्बक है । इसके वसिष्ठ ऋषि, छंद अनुष्टुप, पार्वतीपति, सदाशिव देवता हैं । विभक्त मंत्रवर्णोंसे षडंगकलपना करके । फिर बह्निबीजसे जलधारा प्रक्षेप करे । प्राचीर चिन्तवन कर संकल्प करे । तत्पश्चात् भूतशुद्धि एवं करन्यास करे ।

त्र्यम्बकं अंगुष्ठाभ्यां नमः । यजामहे तर्ज्जनीभ्यां स्वाहा । सुगंधि पुष्टिवर्धनं मध्यमाभ्यां वषट् । उर्वारुकमिव बन्धनादनामिकाभ्यां हुम् । मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठाभ्यां वौषट् । मामृतात् करतलपृष्ठाभ्यां फट् । एवं हृदादिषु ।

अब न्यास कहे जाते हैं । ' त्र्यंबकं अंगुष्ठाभ्यां नमः ' । दोनों हाथोंके अंगूठोंको दोनों हाथोंकी तर्ज्जनी अंगुलियोंसे स्पर्श करे । ' यजामहे तर्जनीभ्यां स्वाहा ' इस मंत्रसे दोनों हाथोंकी तर्जनी अंगुलियोंको दोनों हाथोंके अंगूठोंसे स्पर्श करे एवं पांचों अंगुलियोंके और करतलपृष्ठको उक्त मंत्रों द्वारा स्पर्श करनेके उपरांत ऐसे ही हृदयादिन्यास करे ।

ततो द्वात्रिंशन्मन्त्रवर्णान्न्यसेत् । पूर्वपश्चिमयाम्योत्तरेषु वक्त्रेषु ४ । उरोगलोद्ध्वर्वास्ये ३ । पुनर्नाभिहृत्पृष्ठकुक्षिषु ४ । लिंगपायूरुमूलान्ते ६ । जानुयुग्मे २ । गुल्फयोर्युग्मे २ । स्तनयोः २। पार्श्वयोः २ । पादयोः २ । पाण्योः २ । नासिकयोः २ । शीर्षे १ । मन्त्रवर्णान्न्यसेत्क्रमात् पुनस्ततः पादाद्येकादशस्थानेषुन्यसेत् । शिरो १ भ्रुयुगला १ क्षिषु १ वक्त्रे १ गण्डयुगे १ भुजयोः २ हृदये १ जठरे १ पुनः गुह्यो १ रु १ जानु १ पादेषु १ न्यासमेवं समाचरेत् ।

तत्पश्चात् ३२ वर्णोंद्वारा ३२ अंगोंका न्यास करे । पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर मुखमें । वक्षस्थल, गलप्रदेश, ऊर्ध्वमुखमें न्यास करे । फिर नाभि, हृदय, पीठ, कुक्षियोंमें न्यास करे । पुंसचिन्ह, गुदप्रदेश, जंघामूलांतमें न्यास करे । दोनों जानुओंमें, दोनों गुल्फोंमें, दोनों स्तनोंमें, दोनों पार्श्वोंमें, दोनों चरणोंमें और दोनों हाथोंमें न्यास करे ।

दोनों नासिकाके छिद्रोंमें, शिरमें, और फिर ११ पादादि स्थानोंमे न्यास करे। शिर दोनों भौं, दोनों नेत्र, मुख, दोनों कनपटी, दोनों भुजा, हृदय, उदर, इन स्थानोंमें न्यास करे। फिर गुह्य, ऊरु, जानु, पादमें न्यास करे।

तत उक्तध्यानेन ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य विशेषार्घ्यं संस्थाप्य शैवोक्तपूजावाहनादिकं पञ्चपुश्पाञ्जलीन्दत्त्वा वरुणं पूजयेत्। त्र्यम्बकं हृदयाय नमः। इत्यादि षडङ्गानि पूजेयत्। ततोऽष्टपत्रेषु ॐ अर्काय नमः। एवमिन्दवे वसुधायै, जलाय वह्नये, वायवे व्योम्ने यजमानाय, तद्बाह्ये पूर्वादितः ॐ रामाय नमः, ॐ राकायै नमः, ॐ प्रभायै नमः। ॐ ज्योत्स्नायै नमः। ॐ पूर्णायै नमः। ॐ उषसे नमः। ॐ पूषायै नम। ॐ स्वधायै नमः। ॐ विश्वायै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ सितायै नमः। ॐ कृत्यै नमः। ॐ श्रद्धायै नमः। ॐ सरायै नमः। ॐ सन्ध्यायै नमः। ॐ दिवायै नमः। ॐ निशायैनमः। तद्बाह्ये ॐ आर्यायै नमः। ॐ आर्द्रायै नमः। प्रज्ञायै नमः ॐ मेधायै नमः। ॐ कान्त्यै नमः। ॐ शान्त्यै नमः। पुष्ट्यै नमः। ॐ बुद्ध्यै नमः। ॐ धृत्यै नमः। ॐ मत्यै नमः। ततो धूपादिविसर्जनान्तं कर्म समापयेत्।

तत्पश्चात् उक्त ध्यानसे ध्यानकर मानसिक पूजनकर, विशेष अर्घ्य स्थापित कर, शैवोक्त पूजन तथा आवाहनादि करके पंच पुष्पांजलि प्रदानकर वरुण–पूजन करे। त्र्यंम्बकं हृदयाय नमः इत्यादि षडंग पूजन करे। फिर अष्ट-दल कमलके मध्यमें इन नाम मन्त्रोंद्वारा पूजन करे। अर्काय नमः। इन्दवे नमः। वसुधायै नमः। जलाय नमः। वह्नये नमः। वायवे नमः। व्योम्ने नमः। यजमानाय नमः। कमलदलके वाहिरी भागमें पूर्वादि क्रमासे पूजन करे। ओं रामायनमः। ओं राकायै नमः। ओं प्रभायै नमः। ओं ज्यो-त्स्नायै नमः। ओं पूर्णायै नमः। ओं उषसे नमः। ओं पूषायै नमः। ओं स्वधायै नमः। ओं विश्वायै नमः। ओं विद्यायै नमः। ओं: सितायै नमः। ओं कृत्यै नमः। ओं श्रद्धायै नमः। ओं सारायै नमः। ओं संध्यायै नमः।

ओं दिवार्यै नमः । ॐनिशायै नमः । बहिर्भागमें ॐआर्यायै नमः । ओं आर्द्रायै नमः । ओं प्रज्ञायै नमः । ॐमेधायै नमः । ओं कान्त्यै नमः । ओं शांत्ये नमः । ओं पुष्ट्यै नमः । ओं बुद्ध्यै नमः । ओं धृत्यै नमः । ओं मत्यै नमः । तदनन्तर धूप आदि सिर्जनान्त सभी कर्म करना चाहिये ।

प्रयोगस्तु शनैश्चरे कुजे वा अश्वत्थमूलं स्पृट्वा सहस्रं जपेत् । पुरश्चरणविधानेन सर्वं कुर्यान्महेश्वरि । साक्षान्मृत्योर्विमुच्येत किमन्याः क्षुद्रिकाः क्रियाः । प्रत्यहं जुहुयान्मन्त्री चतुस्थण्डिलविधानतः । द्विसहस्रं दूर्वावटजवाभिः करवीरकैः । बिल्वपत्रं पलाशञ्च तथा कृष्णापराजिता । वटवृक्षस्य समिधं जुहुयादयुतावधि ।। धनधान्यसमृद्धिः स्यात्सत्यं सत्यं महेश्वरि ।

यह प्रयोग शनिवार अथवा मंगलके दिन करे । और अश्वत्थ (पीपल) वृक्षको स्पर्शकर एक हजार मंत्र जपकरे । हे महेश्वरि ! पुरश्चरणविधानसे समस्त प्रयोग करे । इस प्रयोगके करनेसे साक्षात् मृत्युसे मुक्ति प्रात होती है, तो अन्य क्षुद्र वस्तुओंका तो कहना ही क्या है । साधकको चाहिये कि प्रतिदिन चतुःस्थंडिल विधानपूर्वक हवन करे । दो हजार दूबके वट, जवा, कनेरके पुष्प, बिल्वपत्र, ढाककी समिधा, कृष्ण अपराजिता वटवृक्षकी समिधा इन सब वस्तुओंसे दशहजार हवन करे तो अवश्य धन धान्यकी वृद्धि हो । हे देवि ! यह बात सत्य जानों ।

मृतसञ्जीविनी विद्या

अतः परं देवि शृणु मृतसंजीविनीं तथा ।। आदौ प्रासादबीजं तदनु मृतिहरं तारकं व्याहृतिं च प्रोच्चार्य त्र्यम्बकं यो जपति च सततं संपुटं चानुलोमम् । त्र्यम्बकमिति मृत्युंजयमंत्रस्य जपात् सर्वसिद्धिर्भवति । एतन्मंत्रं जपेदाशु व्याधिमुक्तो भवेद्ध्रुवम् ।

हे देवि ! अब मृतसंजीवनी विद्या श्रवण करो । प्रथम प्रासाद बीजका उच्चारण करे तत्पश्चात् मृतिहर बीजका तारक तथा व्याहृतिको उच्चारण कर जो साधक निरन्तर संपुट तथा अनुलोम त्र्यम्बक मंत्रका जप करते हैं उनको मृत्युंजय त्र्यम्बक मंत्रके प्रसादसे सर्वसिद्धि प्राप्त होती है । इस मंत्रके जपसे शीघ्र ही व्याधियां दूर हो जाती है ।

ध्यानं शृणु महादेवि । स्वच्छं स्वच्छारविन्दं स्थितमुभयकरे संस्थितौ पूर्णकुंभौ पाण्योर्हेलाक्षमाले निजकरकमले द्वौ घटौ नित्यपूर्णौं । द्वाभ्यां तौ च स्त्रवन्तौ शिरसिः शशिकला चामृतैः प्लावयन्तीं देहं देवो दधानो विदिशतु विशदा कल्पजालां श्रियं नः ।। एवं ध्यात्वा त्र्यंबकाय महारुद्राय नमः ।। महाघोरं यदि तदा पूजयेत्परमेश्वरम् । ततः सुरसुन्दरीत्यादियोगिनीसाधनम् । ततो भूतिनीसाधनम् ।

हे महादेवि ! अब ध्यान सुनो ! दोनों हाथोंमें स्वच्छ कमलदलके धारण करनेवाले दो हाथोंमें पूर्णकुम्भ धारण करनेवाले, दो हाथोंमें हेलार्थ अक्षमाला धारण करनेवाले, दो हाथोंमें पूर्ण और स्त्रावी घट धारण करनेवाले शिरोभागमें अमृतस्त्राविणी शशिको धारण करनेवाले, श्रीसदाशिव, कल्पकल्पांततक हम लोगोंको उत्तम लक्ष्मीप्रदान करें । इस प्रकार त्र्यम्बक और महारुद्रका ध्यान करे यदि महाघोर मंत्रका जप करे तो परमेश्वर सदाशिवका ध्यान करे । तत्पश्चात् सुरसुन्दरी आदि योगिनी साधन करनेके उपरान्त भूतिनीसाधन ।

भूतिनीसाधनम्

श्रीदेव्युवाच । योगिनीसाधनं ज्ञातं भूतिनीसाधनोत्तमम् । तद्वदस्व महादेव कृपास्ति यदि मां प्रति ।

श्रीदेवीजी ने कहा—हे देव ! योगिनीसाधन तो समझ चुकी, अब यदि आपकी पूर्ण कृपा हो तो भूतिनीसाधनको भी सुनाइये ।

श्री ईश्वर उवाच । आद्या विभूषिणी देवी परा कुण्डलधारिणी । हारिणी सिंहिनी चैव हंसिनी च ततो नटी । कामेश्वरी तथा प्रोक्ता रतिदेवी ततः प्रिया । इत्यष्टौ नायिकाः प्रोक्ताः साधकानां सुखावहाः ।

श्रीशिवजी ने कहा— हे प्रिये ! आठ नायिका साधकवर्गको सुख देनेवाली हैं उनके नाम हैं —आद्या विभूषिणी, परा कुण्डलधारिणी, हारिणी सिंहिनी, हंसिनी, नटी, कामेश्वरी, और प्रिया रतिदेवी,

आद्याविभूषिणीसाधनम्

यथा मंत्रं महेशानि आद्या विभूषिणी तथा । मंत्रः—हूं फट् फट् ह्लीं भूतिनीं हूं हूं हूं । क्रोधास्त्रद्वयं मायांते भूतिनीं च त्रिकूर्चतः । अथवा शृणु देवेशि ॐ ह्लींह्लींफट् फट् विभूषिणी हूं हूं हूं । तारं लज्जाद्वयास्त्रद्वयं विभूषिणीक्रोधद्वयम् ।

हे देवि जिस मंत्रसे आद्याविभूषिणीका साधन करना चाहिये, वे मंत्र ये हैं — हूँ फट् फट् ह्लीं भूतिनीं हूँ हूँ हूँ । क्रोधास्त्रद्वय मायान्तमें भूतिनी बीज, त्रिकूर्च मिश्रित करे । हे देवेशि ! और भी सुनो ॐ ह्लीं ह्लीं फट् फट् विभूषिणी हूँ हूँ हूँ । तार, लज्जाद्वयास्त्रद्वयविभूषिणी क्रोधद्वयमिश्रित करे ।

ध्यानम्

दक्षे कर्त्तरिकां परेऽसिलतिकां हस्ताब्जके विभ्रती ह्युत्तुंगस्तनशोभिवक्षसि चलैर्हारादिभिः शोभिता । दन्तान्तर्गतमांसशोणितवसासिक्तास्ति यस्यास्तनूःकालश्यामलवर्णिकाश्रेगभुजंगैर्वेष्टिता रक्षतु।

अब ध्यान कहते हैं—एक हाथमें कर्तरी और दूसरे हाथमें तलवार धारण करनेवाली, ऊंचे कुम्भ तुल्य स्तनवाली, हृदयमें आभूषण धारण करनेवाली दांतोंके अग्रभागसे दुष्टोंके मांस शोणितको तथा चर्बीको चाबकर पीनेसे जिसका देह भीग गया है । कालके तुल्य श्यामवर्णवाली और रसालवृक्षके आश्रित व्यालवर्गसे सुशोभित पृष्ठदेशवाली पर्वतवासिनी देवी हमारी रक्षा करे,

स्थानं वृक्षतले तत्र यामिन्यां दिवसत्रयम् । जपेदष्टसहस्रं तु ध्यायेदेकाग्रमानसः । जपान्त च महापूजा पुनर्धूपं निवेदयेत् । चन्दनोदकमिश्रेण दत्त्वार्घ्यं तुष्यति ध्रुवम् । माता वा भगिनी भार्या हृष्टा भवति कामिता । करामलकतां कृत्वा माता भूत्वा जगत्त्रयम् । शताष्टपरिवारस्य ददात्यंजनभूषणम् । भगिनी चेन्महाभागा सहस्रयोजनादपि । ददाति स्त्रियमानीय दिव्यं रसं रसायनम् । भार्या चेत्पृष्ठमारोप्य स्वर्गं प्रयाति नित्यशः । दीनाराणां सहस्रन्तु रसं चैव रसायनम् । सर्वाशां पूरयत्येव सदा देवी विभूषिणी।

तीन रात्रितक अश्वत्थ वृक्षके नीचे वासकर आठ हजार मंत्र जपे और एकाग्रमनसे ध्यान करे । जपान्तमें महापूजा करे और फिर धूप प्रदान करे । चन्दनमिश्रित अर्घप्रदान करनेसे देवी विशेष प्रसन्न होती हैं । कामनार्थ माता, भगिनी, भार्या इस प्रकार इन स्वरूपोंका ध्यानकर पूजन करे तो देवता अत्यन्त प्रसन्न हो अभीष्ट प्रदान करे । मातारूप देवता प्रसन्न हो तो दिव्य-दृष्टि मिलती है । भगिनीरूप देवता प्रसन्न हो तो सहस्रयोजन (४००० कोस) दूरमें स्थित दिव्यरस, रसायन तथा क्षणभरमें सामने उपस्थित हो । भार्यारूप देवता रस, रसायन, तथा अशर्फियोंको स्वयं कुबेरके भंडारसे लाकर सामने उपस्थित कर देती है । विशेष क्या, स्त्रीरूपसे ध्यान की हुई आद्या विभूषिणी देवी स्त्रीके तुल्य समस्त आशा पूर्ण करनेमें समर्थ होती है ।

पराकुण्डलिनीसाधनम्

पराकुण्डलिनीध्यानं शृणु देवि महेश्वरि । कर्णे कुण्डलधारिणी शशिमुखी लीलावती सस्मिता शैलश्रोणिविलंबिकाञ्चिवितता व्यामुग्धलोकत्रया । मुक्ताहारमरीचिकान्तिविलसत्प्रोत्तुङ्गकुम्भस्तनी पायात्कुण्डलधारिणी त्रिजगतामानन्दसन्दोहभूः ।

हे देवि ! कुण्डलधारिणीपराका ध्यान सुनो—कुण्डलोंसे सुशोभित कानों वाली, चन्द्रमाके तुल्य मुखवाली, लीलावती, मन्दमन्द मुसकान करनेवाली, पर्वतरूप श्रोणितटमें विवतकांची धारण करनेवाली, तीनों लोकोंको मुग्ध करनेवाली, मोतियोंके हारकी कान्तिसे विभूषित, उन्नत कुम्भके तुल्य स्तनोंवाली, तीनों लोकोंको आनन्द देनेवाली पृथिवीस्वरूपा कुण्डलधारिणी योगिनी हमारी रक्षा करें ।

श्मशाने पूजयेदेतामयुतं जपमाचरेत् । आयाति तत्क्षणाद्देवी ततः कुण्डलधारिणी ।। साधकेनापि रक्तार्घ्यं देयं तुष्टा वदत्यपि । किं कर्तव्यं मया वत्स मातरुक्त्वेति साधकः ।। पञ्चाशतञ्च दीनारान्देहि त्रैलोक्यदायिनि ।

यह प्रयोग श्मशानमें करने योग्य हैं और १०००० जप करे । तत्क्षण प्रसन्न हुई कुण्डलधारिणी देवी साधकके सम्मुख आ उपस्थित होती है । प्रसन्नचित्त साधक रक्त अर्घ प्रदान करे तो वह प्रसन्न होकर कहे कि हे वत्स ! अब

मुझे आज्ञादे, तब साधक कहे–हे मातः । तुम त्रैलोक्यदाता हो, अतः पचास असर्फी मुझको भी दो ।

सिन्दूरहारिणीसाधनम्

अतः परन्तु चार्वंगि सिन्दूरहारिणीमनुः ।। क्रोधद्वयेन्दुसंयुक्तः सिन्दूरहारिणीपदम् । कूर्चबीजत्रयं चास्त्रं सम्प्रोक्तं विविधं तथा ।

अब सिन्दूरहारिणी योगिनीका साधन बतलाते हैं । हे चार्वंगि ! सिन्दूर हारिणी योगिनीका मन्त्र श्रवण करो । इन्दु संयुक्त क्रोधद्वय कूर्चबीजत्रय अस्त्र इनको मिश्रित करके हारिणी योगिनीका मन्त्रोद्धार करना चाहिये ।

ध्यानम्–सिन्दूराकृतिहारिणी चलदलव्यालोलशाखास्वरा सोत्कण्ठीकृतगात्रयष्टिशुभगा शुभ्रांशुचन्द्रस्मिता । अन्तःसन्तत–दंतकांतिमलिना त्रैलोक्यशोभाकरी पायादुन्नतबाहुयुग्मलतिका सिन्दूरहारिण्यसौ ।

सिन्दूरके तुल्य आकृतिवाली, पीपल के पत्ते की भांति सकम्पस्वरा, उतकण्ठायुक्त देहसे शोभित, उज्ज्वलहास्यपूर्ण मलिनदन्तकान्ति, तीनों लोकोंकी शोभा करनेवाली और दीर्घबाहुयुक्त सिन्दूरहारिणी योगिनी हमारी रक्षा करे ।

शून्ये देवालये गत्वा निर्जने निशि साधकः । तत्त्वसंख्यादिनं यावज्जपस्तत्त्व सहस्रकः ।। तदन्ते महतीं पूजां वस्त्रालंकारभू-षणैः । कुर्यात्साधकवर्यस्तु भार्या भवति कामिता ।। वरं वरय शीघ्रं त्वं प्रोक्ता सिन्दूरहारिणी । रक्षति द्वादशदिनं देवी सिन्दूर हारिणी ।।

साधक २५ दिनतक निर्जन देवस्थानमें रात्रिके समय २५ हजार जप करे, तदनन्तर महापूजा कर वस्त्र और भूषणादिसे देवताको अलंकृत करे कामिता भार्या तुल्य हो, और उसी समय सिन्दूरहारिणी सम्मुख आकर कहेगी,

हे साधक ! वर मांग और बारह दिनतक देवी सिन्दूरहारिणी रक्षा करनेमें समर्थ होगी ।

सिंहिनीसाधनम्

अतः परं देवि शृणु सिंहिन्याश्च महामनुम् । मायाद्वयं क्रोधद्वयं सिंहिनीति पदन्ततः ।। पुनः क्रोधं तदन्ते च सिंहिनी च महामनुः ।। ह्रीं ह्रीं फट् फट् सिंहिनी हूं हूं फट् । शैलाग्रे निर्जने वापि सिंहिन्याः पूजनं तथा ।

अब सिंहिनी साधन कहते हैं । हे देवि ! सिंहिनीके महामन्त्रको सुनो ! दो मायाबीज (ह्रीं ह्रीं) । दो क्रोधबीज (फट् फट् सिंहिनी) फिर क्रोधबीज (हूँ हूँ फट्) इनके मिश्रित करनेसे सिंहिनी का मन्त्र बनता है, यथा " ह्रीं ह्रीं फट् फट् सिंहिनी हूँ हूँ फट् " । सिंहिनी देवीका पूजन पर्वत अथवा निर्जन स्थानमें करे ।

ध्यानम्–शैलाग्रक्रमदुर्गमन्तु अटवीदुर्गास्तु दैत्याहते केशाग्रस्थ समस्तविष्णुचरणं प्रभ्रष्टसंसिंहिनी । यावन्तो बलदण्डवारणबलात् प्रक्षु क्वसिद्धांगना शेषं पातु समस्तमन्तक-कुलव्याकल्पमानाकला ।

यह सिंहिनी योगिनीका ध्यानमंत्र है । इस ध्यानमंत्र का पूजन समय उच्चारण करना चाहिये ।

गत्वैकलिंगं यामिन्यां प्रजपेदयुतं मनुम् । ततो हृष्टातिवरदा सिंहिनी चेति पूजिता ।। किं करोमि वदत्येव भार्या भवति कामिता । दिनावसाने यामिन्यां सिंहिन्यायाति राति च । वस्त्रयुग्मं रसमयं साधकाय दिने दिने ।

शिवमंदिरमें रात्रि समय जाकर १०००० वार मंत्र का जप करे । मंत्रके जप और पूजन से वरदा सिंहिनी देवी प्रसन्न हो साधकसे कहेगी कि हे

साधक ! आज्ञाकर अब मैं तेरे लिए क्या कुछ करूँ । सिंहिनी देवी दिनावसान (सायंकाल) में साधकको वस्त्रयुग्म और रसमय पदार्थ प्रतिदिन प्रदान करेगी।

हंसिनीसाधनम्

अतः परं शृणु चार्वंगि हंसिनीसाधनक्रमम् । ॐ हूं हूं हूं फट् हंसिनी । प्रणवञ्च त्रिकूर्चास्त्रहंसिनी कथितो मनुः ।

अब हंसिनीसाधक की विधि कहते हैं । हे चार्वंगि ! अब हंसिनी योगिनी के साधक की विधि सुनो । ॐहूँ हूँ हूँ फट् हंसिनी । यह हंसिनी-साधक मंत्र है ।

ध्यानम्—शुभ्रा शुभ्रसरोजतुल्यनयना सायुग्मबाणान्विता शुश्रूषाकुल मुग्धसाध्यवनितासंसेविता सादरम् । किंचित्तिर्यगपांगलोलवलितव्यामुग्धस्मेराननना दिव्या काञ्चनरत्नहारललिता श्रीहंसिनी पातु नः

श्वेतवर्ण, श्वेतकमलके तुल्य नेत्रवाली, युग्म (दो) शरसे युक्त, सेवामें तत्पर, मूढ साध्य वधूगणसे आदरपूर्वक सेवित कुछ एक अपाङ्ग भागको तिरछाकर मधुर हास्य करनेवाली, मनोहर सुवर्ण—माला को धारण करनेवाली हंसिनी देवी हमारी रक्षा करे ।

वज्रपाणिर्गृहं गत्वा प्रतिमां शोभनां लिखेत् । अवधानेन संपूज्य जपेदयुत संख्यकम् ।। यावदर्द्धनिशा देवि । हंसिन्यायाति निश्चितम् । चंदनार्घ्यप्रदानेन दृष्टा भवति हंसिनी ।। किं मया ते प्रकर्तव्यं शीघ्रं तद्वद साधक । वस्त्रालंकारभोज्यानि दिव्यार्थं संप्रयच्छति । अवशेषव्ययाभावान्न ददाति प्रकुप्यति ।

हस्तमें वज्रको लेकर गृहमें प्रवेश करे और शोभायमान हंसिनीकी प्रतिमाको लिखे । सावधान होकर १०००० दशहजार मंत्रका जप करना चाहिये । हे देवि ! अर्द्धरात्रिके समय हंसिनी देवी साधकके सम्मुख आकर

उपस्थित होगी, उस समय साधकको चाहिये कि चन्दनादि पूजाद्रव्य द्वारा देवीका आनन्दपूर्वक पूजन करे, यही प्रसन्न करनेका महोपाय है। इस विधान के अनन्तर देवी साधकसे कहेगी कि हे साधक! इस समय मुझको क्या करना चाहिये आज्ञा कर! ऐसा कह साधकको वस्त्र अलंकार, भोज्य आदि पदार्थ देती हैं तब साधकको योग्य है कि उक्त लब्ध पदार्थोंको अपने व्ययसे अधिक अपने पास न रक्खे किन्तु दीन दुःखियोंको दान करदे अन्यथा देवी क्रुद्ध हो जाती है।

नटीसाधनम्

इतः परं महामाये श्रृणु मे नटीसाधनम्। "ॐ हूँ हूँ फट् फट्-नटी हूँ हूँ हूँ"॥ तारं कूर्चक्रोधास्त्रद्वयतो नटीति पदमुद्धरेत्। कूर्चत्रयन्तु मन्त्रोऽयं कथितो नर्तकीमनुः।

हे महामाये! अब नटी योगिनीका साधन सुनो। प्रथम नटी मन्त्र कहते हैं बीजोद्धारानुसार ॐ हूँ हूँ फट् फट् नटी हूँ हूँ हूँ।

ध्यानम्—फुल्लेन्दीवर सुन्दरोदरमुखी प्रोत्तुङ्गकुम्भस्तनी द्योतन्ती मृगमीनयुग्मनयना सानन्दमन्दस्मिता। क्षीराम्भोनिधिसम्भवा विलसिता भक्तारिसंनाशिनी वीणागीतविशालिनी भगवती व्याहार-वाक्चातुरी॥

अब ध्यान कहते हैं। प्रफुल्लितकमलदलके सदृश मुख तथा उदरवाली उच्च कलशके तुल्य स्तनवाली, मीनके तुल्य चंचल दो नेत्रोंको धारण करने-वाली, आनन्दपूर्वक मंद–मंद हास्य करनेवाली, क्षीरसागरसे उत्पन्न हुई, भक्तोंके शत्रुओंका नाश करनेवाली, वीणायुक्त मनोहर गान करनेवाली और मनोहरवाणी बोलनेवाली भगवती नटी योगिनीका हम ध्यान करते हैं।

नीचपाशं गमं गत्वा सप्ताहजपपूजने। नटी सुसिद्धा भवति धूपं दद्यान्मुहुर्मुहुः॥ चन्दनेनार्घ्यं देयन्तु नैवेद्यञ्च मनोहरम्। सदा

कामभोगदात्री भार्या भवति नर्तकी ।। सुवर्णफलमेकन्तु व्ययं त्यक्त्वानुगच्छति । दिने दिने नटी देवी स्थायिनी भवति ध्रुवम् ।।

नीचे स्थानमें एक सप्ताह इस प्रयोगको करे और मंत्रजप भी करे। वारंवार धूपके देनेसे देवी प्रसन्न होती है और तत्क्षण सिद्धि प्राप्त होती है। चन्दनमिश्रित अर्घ और मनोहर नैवेद्य प्रदान करने से नर्तकी स्त्रीवत् प्रसन्न हो सर्वदा काम भोग प्रदान करेगी। और प्रतिदिन नटी देवी साधकके खर्चके लिये सुवर्ण आदि प्रदान करती हुई स्थिर रहेगी।

चेटीसाधनम्

अतः परं महादेवि चेटचा आकर्षणं शृणु । मन्त्रो यथा—तारं कूर्चद्वयान्ते च अस्त्रयुग्मं ततः परम् । चेटी क्रोधद्वयञ्चोक्तं चेटी-मन्त्रोत्तमोत्तमः ।

अब चेटीसाधन की विधि कहते हैं। हे देवि ! चेटी योगिनीके आकर्षक प्रयोगको श्रवण करो। यह चेटीयोगिनीका मन्त्र है। ॐ हूँ हूँ हूँ फट् फट् चेटी हूँ हूँ

ध्यानम्—देव्येषाऽमृतभाषिणी शशिमुखी भ्रष्टोत्तरीयाधरा बिभ्राणा कलशं सरोजममलं स्वर्णं च सीमंतके ।श्रीखण्डादिविलेपना-मलवपुः सौरभ्यसंभाविता किञ्चिद्धर्मसमाहितापिकरवा पाया-त्प्रभाचेटिका

अमृतभाषिणी, चन्द्रमुखी, उत्तरीयको धारण करनेवाली, मनोहर अधरोष्ठवाली, कमलदलवत् सुन्दर कलश धारण करनेवाली, सीमन्त-भागमें सुवर्ण धारण करनेवाली, चन्दनादि विलेपसे सुगंधित शरीरवाली, कोकिलाके तुल्य मनोहर कण्ठवाली चेटीयोगिनी हमारी अथवा तुम्हारी रक्षा करे।

अत्रापि भीषणस्थाने नामोच्चारणमात्रतः ।
ध्रुवं चेटी समागत्य चेटीकर्म करोत्यपि ।।
अथवा स्वगृहद्वारे त्र्यहं रात्रौ जपं चरेत् ।
आगत्य नियतं देवी चेटीकर्म करोति च ।।

भीषण स्थानमें नाममात्रके उच्चारण करनेसे निश्चय चेटी देवी आकर कर्म करनेमें समर्थ होती है अथवा निज गृहके द्वारपर तीन दिन और तीन रात्रितक मंत्र जाप करने से चेटी देवी स्वयं आकर दासीवत् कर्म करनेमें तत्पर हो जाय ।

कामेश्वरीसाधनम्

**कामेश्वरीप्रयोगः—तारं कूर्चास्त्रयुग्मं कामेश्वरी भूतिनी ततः ।
परं ङेन्तं क्रोधत्रयं कामेश्वर्यामनुःस्मृतः ।।**

अब कामेश्वरीसाधन कहते हैं । कामेश्वरीका मन्त्र ' कामेश्वरी ॐ हूँ फट् फट् कामेश्वर्यै भूतिन्यै हूँ हूँ हूँ यह मंत्र है ।

ध्यानम्—ॐ तालस्कन्धसमागता मधुरता कामन्तु पुष्पान्विता गायत्री मधुराधरा स्मितमुखी वीणायुता गायती । रक्ताम्भोज-विलोचना मधुमदैर्यूक्ता समन्तादियं पुष्यत्पुष्प्यधनुर्धरामधुमुखी कामेश्वरी भूतिनी ।।

तालवृक्षमें निवास करनेवाली, मधुपानमें आसक्त, बहुत फूल युक्त भक्तकी रक्षा करनेवाली, सुन्दर होंठोंवाली, हँसमुखी, वीणा बजाकर गानेवाली, लाल कमलके समान नेत्रवाली, मधुमानसे मत्त, पुष्प-बाण धारण करनेवाली कामेश्वरी हमारी रक्षा करे ।

तत्र स्थानं समागत्य कृत्वा मांसस्य भक्षणम् । मांसादिना बलिं दत्त्वा सहस्रं जपमाचरेत् ।। मनुमर्कं सहस्रन्तु जपित्वा सिद्धि-

आप्नुयात् । जपन्निशीथमायाति रक्तेनार्घ्यं निवेदयेत् ।। कामेश्वरी भवेत्तुष्टा भार्या भवति कामिता । सर्वाशां पूरयत्येव राज्यं यच्छति निश्चितम् ।।

उस स्थानपर जाकर मांसका भक्षण करे तथा मांस आदिकी बलि दे । एक हजार जप करे । इस प्रकार बारह हजार जप करनेसे अवश्य सिद्धि होती है। जप करते-करते रात्रिमें रक्तका अर्घ देना । ऐसा करनेसे कामेश्वरी देवी सन्तुष्ट हो जाती है और मनमानी स्त्री होती है संपूर्ण आशायें पूर्णकर राज्यतक दे देती है ।

कुमारीसाधनम्—हूं हूं फट् फट् देव्यै हूं हूं हूं । क्रोधद्वयास्त्रयुग्मं च देवीति पदमुद्धरेत् । ङेन्तं क्रोधत्रयं गुप्तं कुमारीमन्त्रमुत्तमम् ।

कुमारीसाधन कहते हैं । 'हूँ हूँ फट् फट् देव्यै हूँ हूँ हूँ' यह मंत्र जानना । मंत्रका उद्धार बताते हैं । यथा—क्रोधद्वय (हूँ हूँ) तथा—अस्त्रयुग्मं (फट् फट् ') और 'देव्यै' ऐसा पद, पुनः क्रोधत्रय (हूँ हूँ हूँ) इतने अक्षर जिसमें हों वही कुमारी देवीका मंत्र है ।

ध्यानम्—दिव्यकार्मुकहेमाभा कुमारी दिव्यरूपिणी । सर्वालंकारसंयुक्ता भार्या भवति साधिता ।।

दिव्य धनुषको धारण किये, स्वर्ण की सी कांतिवाली, संपूर्ण अलंकारोंसे सुशोभित, दिव्य रूपावली कुमारी देवी पूर्वोक्त जपादि करनेसे भार्या हो जाती है ।

रात्रौ देवगृहं गत्वा तत्र शय्यां प्रकल्पयेत् । सितवस्त्रं चंदनं च ज्योतिः पुष्पं प्रदापयेत् ।। धूपं तु गुग्गुलं दत्त्वाष्टसहस्रं जपेन्मनुम् । जपान्ते नित्यमायाति चुम्बनालिंगनादिभिः ।। कामिता जायते भार्या सत्यं देवी कुमारिका । ददात्यष्टौ च दीनारान्दिव्यवस्त्रयुगं तथा ।। कामिकं भोजनं दिव्यं परिवारस्य दास्यति । अन्या

श्मगृहाद्व्यमानीयाशु प्रयच्छति ।। नित्यं सहस्रं जप्त्वा तु सा चायाति कुमारिका । सत्यं सत्यं पुनः सत्यं शृणु मे प्राणवल्लभे ।

रात्रिके समय देवमंदिरमें जाकर वहां शय्याकी रचना करे । सफेद चन्दन तथा सफेद वस्त्र और चमेलीके फूल चढ़ाये। गूगलकी धूप देकर आठ हजार मंत्र जपे। मंत्र जपनेके पश्चात् कुमारी देवी अवश्य आती है और स्त्रीवत् व्यवहार करने के उपरान्त आठ अशरफियोंको देती है । तथा दिव्य वस्त्र, दिव्य भोजन देती है । हे प्राणप्यारी ! मैं सत्य ही तुझसे कहता हूं कि जो पुरुष प्रतिदिन पूर्वोक्त मन्त्रका एक हजार जप करता है उसके पास देवी कुमारी आती है तथा दूसरोंका भी धन लाकर उस साधकको दे जाती है ।

मुहुर्मु हुर्जपेन्मन्त्रं क्रोधस्य मंत्रमुत्तमम् ।
क्रोधाधिपं व्योमवक्त्रं वज्रपाणिं सुरान्तकम् ।।
एतन्मन्त्रमविज्ञाय यो जपेत्सिद्धिकांक्षया ।।
तस्यस्यान्निष्फलं कर्म अन्ते नरकमाप्नुयात् ।
कलिकल्पतरोर्वल्ली भूतिनी सिद्धिरुच्यते ।।

उत्तम क्रोधमंत्रको वारंवार जपे । जो साधक लोग बिना प्रयोगविधि जाने मन्त्रजप करते हैं उन्हें सिद्धि कदापि प्राप्त नहीं होती किन्तु अन्तमें नरकगामी होते हैं ।

साधनक्रम :–अतः शृणु परं देवि सुन्दरीसिद्धिसाधनम् । सुन्दर्यादिप्रभेदेन प्रत्येकं पूजयेच्छिवे ।। प्रातरुत्थाय सुस्नाते नित्यकर्म समाचरेत् । ततः प्रासादमारुह्य पूजास्थानं सुशोभनम् ।। बिल्वमूले श्मशाने वा प्रान्तरे च चतुष्पथे । तत्रस्थः साधयेद्योगी योगिन्यादि च भूतिनीम् ।।

हे सुन्दरि ! अब सुन्दरीके सिद्धिसाधन क्रमको सुनो ! हे शिवे सुंदरी आदि प्रत्येकका भेदानुसार पूजन करे । साधक प्रातःकाल शय्यासे उठकर स्नानादि नित्य-कर्म करनेके पश्चात् गृहमें आकर पूजास्थानमें, बिल्वमूल, श्मशान या चौराहेमें योगिनी आदि भूतिनीका साधन करे ।

अजिनासनगः शुद्धस्तिलकं मूर्ध्नि कारयेत् ।
ततो विधिवदाचम्य सूर्यार्घ्यं प्रददेत्ततः ।।
स्वस्तिवाचनिकं कृत्वा शान्तिपाठं पुनः पुनः ।
गणेशं बटुकञ्चैव पूजयेद्यन्त्रकोपरि ।।
ततश्चोदङ्मुखो भूत्वा संकल्पं तत्र कारयेत् ।
गणेशं क्रोधभैरवं पूजयेत्परमेश्वरि ।।
मूलमंत्रेण प्राणायामं षडंगन्यासमाचरेत् ।
पूर्ववच्च पुनर्ध्यात्वा मानसैः पूजयेत्ततः ।।
कृत्वार्घ्यं स्थापनं तत्र पद्ममष्टदलं लिखेत् ।
तन्मध्ये च विनिर्माय चन्दनेन विलेपनम् ।।
लज्जाबीजं लिखेत्तत्र पुनर्ध्यात्वा प्रपूजयेत् ।
निशायां पूजयेद्वीरं दिवसे पूजयेत्पशुम् ।।
मूलमंत्रं महादेवि मासं व्याप्य जपेत् सुधीः ।
अर्द्धरात्रे ततः पूजां बलिं कृत्वा विधानतः ।।
निर्भयः संजपेन्मंत्रं हृद्गतं च निवेदयेत् ।

मृगचर्मके ऊपर स्थित होकर निज मस्तकमें तिलक करे । पुनः आचमन करे । स्वस्तिवाचनपूर्वक सूर्य भगवान्को अर्घ दे । यन्त्रके ऊपर गणेशजी तथा बटुकजीका पूजन करे । फिर उत्तरमुख हो संकल्प करे । हे परमेश्वरि ! गणेश तथा भैरवजीका पूजन करे ! मूलमंत्रसे प्राणायाम तथा षडंगन्याश करे । फिर उक्त रूपसे ध्यानकर मानसिकपूजन करे । अर्घ स्थापन कर अष्टदल कमल लिखकर उसमें चन्दनका लेप करे । उक्त दलके मध्यमें लज्जाबीज लिखकर श्रीभगवतीका ध्यानकर पूजन करे। रात्रि समय वीरका और दिनके समय पशुका पूजन करे । हे महादेवि ! साधकको योग्य है कि एक मासपर्यंत मूलमंत्रका जप करे । अर्द्ध रात्रिके समय पूजन कर बलिप्रदान दे और निर्भय हो मंत्रका जप करना चाहिये ।

यक्षसाधनम्

अतः परं महादेवि यक्षसाधनमुत्तमम् ।

अब यक्षसाधन कहते हैं– हे महादेवि ! यक्षसाधन प्रकार सुनो ! प्रथम बीस (२०) प्रकारके यक्षोंके नाम कहे जाते हैं ।

भीमवक्त्र, महावक्त्र, सिंहवक्त्र, हयानन, गर्द्धभास्य, महावीर, बहुवक्त्र, गजानन, विभ्रम, बाहुक, वीर, सुग्रीव, रंजक, पिशाचास्य, जृम्भक वामक, अर्थद, जयद, मणिभद्र, और मनोहर ये बीस यक्ष साधकको सिद्धि देनेवाले हैं ।

यक्षमन्त्र :–गगनो ग्रहणश्चैव युक्तचन्द्रार्द्धशेखरः ।
एकाक्षरमहामन्त्रो साधकैर्जप्यते यदि ।
संख्ययाष्टसहस्राश्च सर्वसिद्धिप्रदायकः ।

इस एकाक्षर यक्षमंत्रका ८००० हजार जप करने से साधकको सर्व सिद्धि प्राप्त होती है ।

श्रीदेव्युवाच । भीमवक्त्रादियक्षाणां महामन्त्राः श्रुता मया ।
चंद्रशेखर तद्धयानं संक्षेपेण वद प्रभो ।।

श्रीदेवीजी कहने लगीं–हे चन्द्रशेखर ! भीमवक्त्रादि २० यक्षों के महामंत्रको कहो । श्रीशिवजी कहते हैं हे प्रिये ! नाम मंत्र श्रवण करो यथा– ह्रीं भीमवक्त्राय स्वाहा, ह्रीं ह्रीं महावक्राय स्वाहा २, वं ह्रीं सिंहवक्त्राय स्वाहा, ३, ह्रीं लंकर्माणि साधय हयाननाय स्वाहा ४, ह्रीं कुरु कर्माणि साधय साधय गर्द्धभास्वाय स्वाहा ५, ह्रीं महावीराय स्वाहा ५, ह्रौ कुरुकुरु बहुवक्त्राय स्वाहा७, ह्रीं महाबलिने गजाननाय स्वाहा, ८, ह्रीं विभ्रमाय स्वाहा ९, ह्रीं ह्रीं बाहुकाय स्वाहा १०, ह्रीं ऐं वीराय स्वाहा ११, ह्रीं सुग्रीवाय स्वाहा १२, ह्रीं रचकाय स्वाहा १३, ह्रीं सर्वकर्माणि साधय पिशाचाय स्वाहा १४, ह्रीं जृम्भकाय स्वाहा १५, ह्रीं लुं वामकाय स्वाहा १६, ह्री अर्थदाय स्वाहा १७, ह्रीं जयप्रदाय स्वाहा १८, ह्रीं मणिभद्राय स्वाहा १९, और ह्रीं मनोहराय स्वाहा २० । हे महादेवि ! इसके पश्चात् ध्यान सुने ।

यक्षाणां ध्यानानि

भीमवक्रध्यानम् । प्रत्यालीढपदं कृष्णं खर्वकर्बुरमूर्धजम् ।
द्विभुजं दक्षिणे कर्त्री वामे खर्परधारिणम् ।
व्याघ्रचर्माम्बरधरं त्रिनेत्रं भीषणाननम् ।

अव यक्षोंके ध्यान कहे जाते हैं । प्रथम भीमवक्रका ध्यान कहते हैं । कृष्ण वर्ण, छोटे शरीरवाला, कर्बुर केश, दो भुजा, दक्षिण हाथमें कर्त्री (कैंची) और वाम हाथमें खप्पर धारण करनेवाला, बाघ चर्मको धारण करनेवाला और त्रिनेत्री भीषणाननका ध्यान करते हैं ।

महावक्रध्यानम् । ध्यायेद्देवं महावक्रमग्निवर्णं त्रिनेत्रकम् । द्विभुजं दक्षिणे खड्गं खेटकं वामहस्तकम् ।। कृष्णकेशन्तु कुटिलं विकृतास्यं भयानकम् । साधकाय प्रयच्छन्तमभयं वरमेव च ।

महावक्त्रका ध्यान कहते हैं । अग्निके तुल्य वर्णवाले त्रिनेत्र, द्विभुज अर्थात् दो भुजावाले, दक्षिण हस्तमें खड्ग और वाम हस्तमें खेटको धारण करनेवाले, कृष्णकेश और कुटिल चौड़े मुखवाले भयानक, साधकके लिए अभय वर देनेवाले महावक्त्र देवका हम साधक गण ध्यान करते हैं ।

सिंहवक्त्रध्यानम् । ध्यायेद्देवं सिंहवक्त्रं जटाभारसमन्वितम् । विकृतास्यं द्विजिह्वं च चतुर्नेत्रं द्विकर्णकम् । द्विभुजं च गदापाणिं वामे चाऽभयसंयुतम् ।

सिंहवक्त्रका ध्यान कहते हैं । जटाओंके भारसे समन्वित टेढ़े मुखवाले, दो जिह्वावाले, हाथमें गदा धारण करनेवाले, वाम हाथसे अभय दान करनेवाले ऐसे सिंहवक्त्रजीका हम ध्यान करते हैं ।

हयाननध्यानम्—श्वेतो हयाननः सर्वो द्विभुजोऽतिभयानकः । दक्षे डमरुकं धत्ते वामे चैव त्रिशूलकम् ।

अब हयानन यक्षका स्वरूप वर्णन करते हैं — श्वेतवर्ण, छोटे शरीरवाला, भयंकर स्वरूप, दक्षिण हाथमें डमरू और वाम हाथमें त्रिशूल धारण करनेवाला हयानन यक्ष हमारी रक्षाकरे ।

महावीरध्यानम् । ध्यायेद्देवं महावीरं द्विकर्णन्तु त्रिनेत्रकम् । द्विभुजं हास्यवदनं वराऽभयविधारकम् ।

अब महावीरका स्वरूप कहते हैं – दो कर्णवाले, तीन नेत्रवाले, दो भुजा और हास्य करनेवाले, दोनों हाथोंमें वर और अभय धारण करनेवाले महावीरका ध्यान करते हैं । यक्षों के ध्यान डामरतन्त्रमें विस्तृत वर्णन है ।

इति क्रियोड्डीशे महातंत्रराजे गौरीश्वरसंवादे षोडशः पटल ।।१६।।

मृत्युञ्जयविधानम्

देव्युवाच–प्राणनाथ कृपासिन्धो ब्रूहि शास्त्रविशारद । मृत्यु-ञ्जयस्य पूजायाः किं फलं किं विधानकम् ।

अब मृत्युञ्जय विधान कहते हैं । हे प्राणनाथ । हे कृपासिंधो। हे शास्त्र-विशारद ! मृत्युञ्जय शिवपूजाका क्या विधान और क्या फल है कृपा करके सुनाइये ।

श्रीशिव उवाच । वक्तुं नाहं क्षमो गौरि त्वयि स्नेहात् प्रकाशितम्। मृत्युंजयविधानं तु न वक्तव्यं बहिर्मुखे ।। मुखे तु देवि वक्तव्यं यत्नतः प्राणवल्लभे । मृत्युंजयो महादेवः साक्षान्मृत्युहरः परः ।। विधानं तस्य संक्षेपाद्वक्तव्यं शृणु सुन्दरी । देवेशि रोगशान्त्यर्थं तस्य पूजाविधिर्यथा ।। मृत्युंजयं समापूज्य लिंगं त्रिभुवनेश्वरम् । रोगार्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।। यस्तु संपूजयेद्भक्त्या लिंगं मृत्युंजयाभिधम् । यमोऽपि प्रणमेद्भक्त्या किं करिष्यतिपामरः ।

शिवजी ने कहा–हे गौरि ! इस प्रयोगको प्रकट करनेकी मेरी इच्छा नहीं है तथापि तुम्हारे स्नेहवश कहता हूं । यह प्रयोग धर्मविमुख पुरुषके संमुख न कहना । हे प्राणवल्लभे ! श्रद्धावान् पुरुषके निकटही इस प्रयोग को प्रकट करना चाहिये । साक्षात् मृत्युञ्जय श्रीशिवजी मृत्युके हरनेवाले हैं । हे सुन्दरि ! अब मैं उनका विधान संक्षेपसे कहता हूं, सुनो । हे देवेशि ! रोग-शांतिके शिए शिवलिंगका पूजन करे तो रोगी रोगसे छूटे , बंदी बंधनसे छूटे । जो शिवलिंगका पूजन करते हैं यमराज भी आकर उनको भक्तिपूर्वक प्रणाम करते हैं अन्य पामर मनुष्योंको कौन कहे ।

तस्य पूजाविधिं वक्ष्ये शृणु मत्प्राणवल्लभे । जातिभेदैर्मृत्तिकां तु गृहीत्वाऽशीतितोलकाम् ।। निर्माय पार्थिवं लिंगं कांत्याधारे निवेशयेत् । पौराणिकेन मंत्रेण कुर्याच्च पठनं बुधः ।। स्नापयेत् पञ्चगव्येन प्रत्येकस्याष्टतोलकम् । स्वस्व मन्त्रैश्च प्रत्येकद्रव्येण स्नापयेत् सुधीः ।। रोगक्षयेच्छया विद्वान्नामगोत्रादिपूर्वकम् । उप-विश्यासने विप्रो धृत्वा धौतं च वाससम् ।। रुद्राक्षमालां कण्ठे वै धृत्वा भस्मत्रिपुंड्रकम् । उपचाराः षोडश तु देया भक्त्या प्रय-

त्नतः ।। सुवर्णस्यासनं देयं तथैवाभरणानि च । वस्त्रयुग्मं प्रदद्यात्तु परिधेयं यथा भवेत् ।।

हे प्राणवल्लभे ! पूजनविधान कहता हूं, सुनो । जातिभेदसे ८० तोले मृत्तिका लेकर शिवलिंग बनाकर कांचके पात्रमें स्थापित कर पौराणिक मंत्रो-द्वारा पूजन करे । पंचगव्यसे स्नान कराये, निज निज मन्त्रमें कहे पृथक्-पृथक् द्रव्यसे स्नान कराये । रोगनाशकी इच्छासे नाम और गोत्रका उच्चारण कर स्नान कराये । विप्र आसनपर बैठकर और धौत वस्त्र पहनकर कण्ठमें रुद्राक्षकी माला पहनकर भस्मका त्रिपुंड्र लगाकर भक्तिपूर्वक षोडशोपचार पूजन करके सुवर्णनिर्मित आसन प्रदान करे और आभूषण तथा वस्त्रादि भी प्रदान करे ।

शिवयंत्रं यथा—षट्कोणमण्डलं कृत्वा तदन्ते साध्यनामकम् । प्रसादबीजं ह्रौं संलिख्य यतः षट्कोणेषु प्रणवसहित पञ्चाक्षरवर्णान् षडंगमंत्रांश्च विलिख्य तद्बहिः पञ्चदलानि विरच्य तद्दले ॐ ईशानाय नमः । ॐ तत्पुरुषाय नमः । ॐ अघोराय नमः । ॐ सद्योजाताय नमः । ॐ वामदेवाय नमः । इति पंच मंत्रान् प्रागादि-क्रमेण लिखेत् । तद्बहिरष्टदलानि रचयित्वा तद्दलेषु मातृकावर्णान् लिखेत् । तद्बहिर्वृत्तं त्र्यम्बकेण वेष्टयेत् । एतद्यन्त्रं जपहोमादिना संपूज्य धारयेत् । आयुरारोग्यैश्वर्यादिसिद्धिर्भवति ।

अब शिवयंत्र कहते हैं । प्रथम षट्कोण यंत्रको लिखकर उसके मध्यमें साध्य व्यक्तिका नाम लिखे और प्रसाद बीजोंको लिखकर षट्कोणोंमें प्रणव-सहित पंचाक्षरमंत्र वर्णो को लिखे तथा षडङ्गमंत्रोंको भी लिखे । उसके बहि-र्भागमें पंचदल निर्माण कर उस में ॐईशानाय नमः । ॐतत्पुरुषाय नमः । ॐ अघोराय नमः । ॐसद्योजाताय नमः । ॐवामदेवाय नमः इन पांच मंत्रोंको प्रागादि क्रमसे लिखे । उस यंत्रके बहिर्भागमें अष्टदल निर्माण करके उन दलोंमें मातृकाओंके वर्णोको लिखे । अष्टदलके बहिर्भागको त्र्यम्बक मंत्रसे वेष्टित करे। इस यंत्रको जप होम आदिसे पूजन कर धारण करे तो आयु आरोग्य ऐश्वर्य आदिकी सिद्धि होय ।

मृत्युंजयमंत्रः—अथवा शृणु देवेशि यंत्रं सर्वसुसिद्धिदम् । मध्येसाध्याक्षराढ्यं ध्रुवमभिविलिखेन्मध्यमं दिग्दलेषु कोणेष्वन्तं मनोस्तत् क्षितिभुवनमयो दिक्षु चन्द्रं विदिक्षु । ढान्तं यन्त्रं तदुक्तं सकलभयहरं क्ष्वेडभूतापमृत्युव्याधिव्यामोहदुःखप्रशमनमुदितं श्रीपदं कीर्तिदायि ।।

मृत्युञ्जय यंत्रका चित्र अन्य तांत्रिक ग्रंथोंमें है बुद्धिमान् जन उन ग्रन्थों-को देखकर समझ सकते हैं । ग्रन्थ विस्तारके भयसे यहां चित्र नहीं बनाया गया । विना चित्र के विशेष व्याख्यासे साधारण पुरुषोंका कुछ काम नहीं निकल संकता है, इस यंत्रका सांगोपांग पूजन करनेसे श्रीप्राप्ति होती है ।

मधुपर्कं कांस्यपात्रे दद्याद्भोजनयुग्मकम् । बिल्वपत्रसहस्रन्तु ह्यभग्नं विनिवेदयेत् ।। एवं संपूज्य लिंगैकं द्विसहस्रं मनुं जपेत् । समिद्भिस्तु गुडूच्यास्तु तत्र होमं समाचरेत् ।। दक्षिणां ब्राह्मणे देवि सुवर्णं वस्त्रकं तथा । तदर्धं वा तदर्धं वा यथाविभवमानतः।। अंग-हीना न कर्तव्या पूजा चाफलदा यतः । एकलिंगं समाराध्य फलं स्यादन्यके युगे ।। तत्फलं लभते देविकलौ संख्या चतुर्गुणा । आम्रपात्रे तु संस्थाप्य जलं चाशीतितोलकम् ।। तज्जलेनैव देवेशि कुलैः सम्माज्यं रोगिणम् । क्षिपेद्दीपशिखायां च मन्त्रमुच्चार्य मानकम् ।। एवं विधिविधानेन पूजयेन्मम लिंगकम् । यादृग्यादृग् भवेद्रोगो नाश-मेति मयोदितम् ।। सांगेन पूजयित्वा तु लभते वांछितं फलम् । अंग-व्यतिक्रमेणैव वृथा भवति वासना ।। रोगी प्रमुच्यते सद्यो भोगी-वोज्झितकंचुकः । यदि मद्वचने भक्तिस्तदा मुक्तो भवेद्ध्रुवम् । अन्यथा यदि देवेशि सर्वं भवति निष्फलम् ।।

अत्र मधुपर्क कहते हैं । काँस्यके पात्रमें युग्म भोजन प्रदान करे । छिद्र-रहित १००० बिल्वपत्र प्रदान करे । इस प्रकार लिंगका पूजन कर दो हजार मंत्र जप करे । गिलोयकी जड़की समिधाओंसे हवन करे । हे देवि ! सुवर्ण तथा वस्त्र ब्राह्मणोंको दे और शुभ दक्षिणा भी शक्तिके अनुसार आधा अथवा आधेका आधा जितना हो सके भक्तिपूर्वक प्रदान करे । अंगहीन को कर्म नहीं

करना चाहिये क्योंकि प्रयोग निष्फल हो जाता है। एक लिंगका पूजन करनेसे अन्य युगोंमें भी फल होता है। हे देवि ! कलियुगमें यदि तंत्र शास्त्रके कथनानुसार चौगुना जपादि करे तो फल प्राप्त होता है। आमके पात्रमें ८० तोले जल भर कर गौरीको कुशाओंसे मार्जन करे। इस विधिके अनुसार शिवलिंगका पूजन करने से सब प्रकार के रोग शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं। सांगोपाङ्ग पूजन करनेसे वांछित फलकी प्राप्ति होती है। अंगहीन प्रयोगके करनेसे समस्त वासना वृथा हो जाती है। इस प्रयोगके करनेसे रोगी इस प्रकार रोगसे मुक्त हो जाता है जैसे कि कैंचुलीसे सर्प मुक्त हो जाता है। जिन पुरुषोंकी शिववाक्यमें भक्ति और विश्वास है वे सहसा रोगसे छूट सकते हैं। हे देवेशि ! जिन पुरुषोंका मेरे ऊपर पूर्णतया विश्वास नहीं है उनकी समस्त क्रियाएं निष्फल हो जाती हैं।

यंत्रपूजाविधानम्- । अतः परं देवि शृणु यंत्रपूजाविधानकम् ।

अब यंत्रपूजाका विधान कहते हैं। हे देवि ! अब इसके पश्चात् यंत्रपूजन के विधानको सुनो।

कृतनित्यक्रियो देवि स्वस्तिवाचनपूर्वकम् । संकल्पं च ततः कुर्याद्विधिवाक्यानुसारतः ।। अद्येत्यादि अमुकगोत्रः श्रीपूर्वकदेवशर्मा यंत्राधिष्ठितदेवतायाः पूजार्थममुकमंत्रसंस्कारमहं करिष्ये । इति संकल्प्य महादेवि गुरोरर्चनमाचरेत् । पञ्चगव्यं ततः कृत्वा शिवमंत्रेण मंत्रितम् । तत्र चक्रं क्षिपेन्मंत्री प्रणवेन समाकुलम् । तदुद्धृत्य ततश्चक्रं स्थापयेत्स्वर्णपात्रके ।। पञ्चामृतेन दुग्धेन कस्तूरीकुंकुमेन च । पयोदधिघृतक्षौद्रशर्कराद्यैरनुक्रमात् ।। तोयधूपान्तरैः कुर्यात् पंचामृतमनुत्तमम् । अष्टाभिःकलशैर्देवीमष्टाभिर्वारिपूरितैः ।। कषायजलसम्पन्नैः कारयेत् स्नानमुत्तमम् ।।स्नानं समाप्य तां देवीं स्थापयेत् स्वर्णपीठके ।।

स्वस्तिवाचनपूर्वक नित्यक्रियाको करके विधिवाक्यके अनुसार संकल्प करे। पुनः गुरुपुजा करे तत्पश्चात् पंचगव्यका निर्माण कर शिवमंत्रसे अभिमंत्रित करे। फिर प्रणवयुक्त चक्र निर्माण करके स्वर्णके पात्रमें स्थापित करे। पञ्चामृत, दुग्ध, कस्तूरी, कुंकुम, पत्र, दधि, घृत, सहत, शर्करा इत्या-

दिसे क्रमानुसार यंत्रराजको स्नान कराये । और धूप दीप आदि प्रदान करे । आठ प्रकारके जलोंसे पूरित आठ कलशोंमें सर्वौषधि आदि सुगंधित पदार्थ डालकर उस जलसे स्नान कराये और उस देवको सुवीर्णके सिंहासनमें स्थापन करे ।

गायत्री यथा–यंत्रराजाय विद्महे महामंत्राय धीमहि तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात् । स्पृष्ट्वा यंत्रं कुशाग्रेण गायत्र्या चाभिमन्त्रयेत् । अष्टोत्तरशतं देवि देवता भावसिद्धये ।। आत्म-शुद्धि ततः कृत्वा षडंगैर्देवतां यजेत् । तत्रावाह्य महादेवि जीवन्या-सञ्च कारयेत् ।

उक्त गायत्रीमन्त्रको उच्चारण कर यन्त्रको कुशाग्रभागसे स्पर्श कर अभिमंत्रित करे । हे देवि ! देवताभावकी सिद्धिके लिए १०८ वार मंत्र जप करे । पुनः आत्मशुद्धि कर षडंग द्वारा देवताका पूजन करे । हे महादेवि । यंत्रमें देवताका आवाहन कर प्राणप्रतिष्ठा करनी चाहिये ।

प्राणप्रतिष्ठा–अस्य प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः । ऋग्यजुः सामानि च्छन्दांसि । चैतन्यं देवता । प्राणप्रति-ष्ठायां विनियोगः । उपचारैः षोडशभिर्महामुद्रादिभिस्तथा । फल-तांबूलनैवेद्यैः शिवं तत्र समर्चयेत् ।। पट्टसूत्रादिकं दद्याद्वस्त्रालंकार-मेव च । अगुरुं चामरं घण्टां यथायोग्यं महेश्वरि ।। सर्वमेतत्प्रयत्नेन दद्यादात्महितेरतः । ततो जपेत्सहस्रन्तु सकलेप्सितसिद्धये ।। जप-समापनं कुर्यादष्टांगेन नमस्कृतम् । अष्टोत्तरशतं हुत्वा सम्पाताज्यं विनिक्षिपेत् ।। होमकर्मण्यशक्तश्चेद्द्विगुणं जपमाचरेत् । गुरवे दक्षिणां दद्यात्ततो देवीं विसर्जयेत् ।।

अब प्राणप्रतिष्ठा की विधि कहते हैं–प्रथम विनियोग समाप्त कर षोडश उपचार और महामुद्रादि द्वारा पूजन करे । फल ताम्बूल नैवेद्य आदि शिवजीको समर्पण करे । रेशमी वस्त्र, तथा अन्य प्रकारके वस्त्र आभूषणादि से शिवजीको प्रसन्न कर पूजन करे । और आत्मकामनाके लिए अगुरु, चामर, घण्टा यथाशक्ति प्रदान करे । फिर सहस्रवार मूल मंत्रका जप करे ।

जप समाप्त कर अष्टांग नमस्कार करे। १०८ वार हवन करके घृत द्वारा अग्निमे प्रदान करे। यदि हवन करनेकी शक्ति न हो तो दुगुना मंत्र जप करे। गुरुको दक्षिणा देकर देवताका विसर्जन करे।

अस्य प्रयोगः। कृतनित्यक्रियः स्वस्तिवाचनपूर्वकं संकल्पं कुर्यात्। अद्येत्यादि अमुकगोत्रः श्रीअमुकदेवशर्मा अमुकदेवतापूजार्थ-ममुकयन्त्रसंस्कारमहं करिष्ये। ततः पञ्चगव्यमानीय हौंइति मंत्रेणा-ष्टोत्तरशतमभिमंत्र्य प्रणवेन यंत्रं तत्र क्षिपेत्। तत उत्थाप्य स्नापये च्छीतलजलचन्दनगन्धकस्तूरीकुंकुमैः। स्नापयित्वा पञ्चगव्यमानीय-हौं इति मंत्रेणाष्टोत्तरशतमभिमंत्र्य प्रणवेन शोधयित्वा स्नापयेत्। तत्र क्रमः। प्रथमं क्षीरेणं स्नापयित्वा धूपं दद्यात्। एवं दध्ना घृतेन मधुना शर्करया च। ततोऽष्टाभिः कलशैः स्नापयेत्। कुंकुमगोरो-चनया चन्दनमिश्रितैस्तोयैः स्नापयेत्। सर्वत्र स्नानं मूलमंत्रेण ततो यंत्रमुत्तोल्य कुशाग्रेण तत्स्पृष्ट्वा गायत्र्यष्टोत्तरशताभिमंत्रितं कृत्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्। अस्य प्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि च्छदांसि चैतन्यं देवता प्राणप्रतिष्ठायां विनियोगः। तद्यथा– आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः॥ अमुकदेवतायाः प्राणा इह प्राणाः। जीव इह स्थितः। सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मन इत्यादि प्राणान् प्रतिष्ठाप्य तत्र प्रकृतिदेवताभावाह्य षोड-शोपचारैः पंचोपचारैर्वा पूजयेत्। तत्र पट्टसूत्रादिकं दत्त्वा अष्टोत्तर-शतं सहस्रं वा जपित्वा शक्तश्चेद्बलिदद्यात्। ततोऽष्टोत्तरशतं होमं कुर्यात्। होमाभावे द्विगुणो जपः कार्यः। ततो दक्षिणां दत्त्वा छिद्रा-वधारणं कुर्य्यात्।

अब प्रयोग कहते हैं। नित्य क्रियाको समाप्त कर स्वस्तिवाचनपूर्वक संकल्प करे। फिर पंचगव्यको लाकर हौं इस मंत्रसे १०८ वार अभिमंत्रित कर प्रवणसे यन्त्रको उसमें निक्षेप करे। फिर उस यंत्रको शीतल जल, चन्दन, गन्ध, कस्तूरी और कुंकुमसे स्नान कराये। फिर हौं, इस मंत्रको उच्चारण

कर प्रणवसे शोधन कर स्नान कराये । क्रम यह है–प्रथम दूधसे स्नान कराकर धूप प्रदान करे, इसी प्रकार दही, धृत, सहद, शर्करासे स्नान करा अष्ट कलशसे स्नान कराये । कुंकुम, रोचन, चन्दन मिश्रित करावे ।

सर्वत्र मूलमन्त्रसे स्नान कराये । फिर यंत्रको उठाकर कुशाके अग्रभागसे छूकर गायत्री मंत्रसे अभिमंत्रित कर प्राणप्रतिष्ठा करे । उक्त विनियोग प्रदान करे । आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हौ हंसः अमुककदेवतायाः प्राणा इह प्राणाः जीव इह स्थितः इत्यादि उच्चारण कर देवताका आवाहन कर पंचोपचार तथा षोडशोपचार पूजन करे और रेशमी वस्त्र आदि देकर १०८ बार अथवा १००० मंत्र जप करे । यदि शक्ति हो तो बलिदान भी कर दे । फिर १०८ बार हवन करे । होमाभावमें द्विगुण जप करना चाहिये । तदनंतर दक्षिणा देकर छिद्रावधारण करे ।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वरसंवादे
सप्तदशः पटलः ।। १७ ।।

तत्रादौ षट्कोणमण्डलं कृत्वा तदन्त साध्य नाम युक्तं प्रसादबीजं विलिख्य षट्कोणेषु प्रणवसहितपञ्चाक्षरवर्णान् विलिख्य विवरेषु षडंगमंत्रात् तद्बहिः पंचदलानि विरच्य तद्दलेषु ॐ वामदेवाय नमः । ॐ ईशानाय नमः । ॐ तत्पुरुषाय नमः । ॐ अघोराय नमः । ॐसद्योजाताय नमः इति पंच मंत्रान् प्रागादिक्रमेण लिखेत् । तद्बहिरष्टदलानि रचयित्वा तद्दलेषु मातृकावर्णान् लिखेत्; तद्बहिर्वृत्तं त्र्यम्बकेन वेष्टयेत् । तद्यन्त्रे जपहोमादिः कार्यः ।

अब शिव यंत्र कहते हैं– प्रथम षट्कोण मण्डल निर्माण करके उसके बीचमें साध्य व्यक्तिके नाम और प्रसाद बीजको लिखे । छओं कोणोंमें प्रणवसहित पञ्चाक्षर मंत्रके वर्णोको और विवरोंमें षडंग यंत्रोंको लिखे । यंत्रके बहिर्भागमें पंचदल बनाकर नाममंत्रोंको लिखे नाममंत्र ये है – ॐ वामदेवाय नमः । ॐईशानाय नमः । ॐ तत्पुरुषाय नमः । ॐ अघोराय नमः ॐ

सद्योजाताय नमः । इस प्रकार इन पांच मंत्रोंको प्रागादि क्रमसे लिखे । पुनः यन्त्रके बहिर्भागमें अष्टदल निर्माण करके उसमें मातृकाओंके वर्णोको लिखे । दलोंके बहिर्भागको त्र्यम्बक मंत्रसे वेष्टित करके यन्त्र का विधिवत जप-पूजन करे ।

मृत्युञ्जयमन्त्रम् । मध्ये साध्याक्षराढ्यं ध्रुवमभिविलिखेन्मध्यमं दिग्दलेषु कोणेष्वन्तं मनस्तक्षितिभुवनमथो दिक्षु चन्द्रं विदिक्षु । ढान्तं यन्त्रं तदुक्तं सकलभयहरं क्ष्वेडभूतापमृत्युव्याधिव्यामोहदुःखप्रशमनमुदितं श्रीप्रदं कीर्तिदायि ।

इसका अर्थ पहले कह चुके हैं ।

रोगशान्त्यर्थ—त्र्यम्बकमृतिसंजीविनिविधानम्

स्वच्छं स्वच्छारविन्दस्थितसुभयकरे संस्थितौ पूर्णकुम्भौ द्वाभ्यामेणाक्षमाले निजकरकमले द्वौघटौ नित्यपूर्णौ । द्वाभ्यां द्वौ च स्रवन्तौ शिरसि शशिकलां चामृतैः प्लावयन्तं देहं देवो दधानं विदिशतु विशदां कल्पजालैः श्रियं वः ।।

इसका भी भाषार्थ हम पहले लिख चुके हैं अतः पुनः लिखना पिष्टपेषण न्याय ही होगा ।

आदौ प्रासादबीजं तदनु मृतिहरं तारकं व्याहृतिञ्च प्रोच्चार्य त्र्यम्बकं यो जपति च सततं संपुटं चानुलोमम् । गायत्र्याः पूर्वपादं तदनु च शिवदं त्र्यम्बकस्यादिमं तत्प्रोच्चार्य ध्यानपूर्वं जपति हि मननोऽत्वेति मृत्युं ध्रुवं सः ।। प्रसादबीजं हौं, मृतिहरं त्र्यक्षरं मृत्युञ्जयमंत्रं ॐ जूं सः । तारकम् । ॐ व्याहृतयः भूर्भुवःस्वः । तेन हौं ॐ जू सः । ॐ भूर्भुवः स्वः तत स्त्र्म्बकमंत्रः पूर्वमन्त्रेणानुलोमक्रमेण: संपुटितः अस्य जपात् सर्वसिद्धिर्भवति पुनः गायत्र्या प्रथमपादं त्र्यम्बकस्य प्रथमपादमित्यादि च ध्यानं पूर्वमुक्तम् ।

प्रथम प्रसादबीज पत्पश्चात् मृत्युहर तारक तथा व्याहृतिका उच्चारण कर जो मनुष्य निरंतर संपुट तथा अनुलोम त्र्यम्बक मंत्रका जप करते हैं उनको सर्वसिद्धि प्राप्त होती हैं । हौं यह प्रसादबीज है । मृत्युहर तीन अक्षरका ओं जूं सः यही त्र्यंबक मंत्र है । ओं को तारक कहते हैं । भूर्भुवः स्वः इनको व्याहृति कहते हैं । हौं ओं जूं सः ओं भूर्भुवः स्वः । इस अनुलोम क्रमानुसार संपुटितकर जप करने से सिद्धि प्राप्त होगी । फिर गायत्रीं मन्त्रके प्रथम पाद और त्र्यम्बक मन्त्रके प्रथमपादको सम्पुटित कर जप करे । ध्यान प्रथम कह चुके हैं ।

इति श्रीक्रियोड्डीशे महातंत्रराजे देवीश्वरसंवादेऽष्टादशःपटलः।। १८ ।।

मृत्युञ्जयकवचम्

श्रीदेव्युवाच–भगवन् देवदेवेश देवताभिः प्रपूजितः । सर्वं मे कथितं देव कवचं न प्रकाशितम् ।। मृत्युरक्षाकरं देव सर्वाशुभविनाशनम् । कथयस्वाद्य मे नाथ यदि स्नेहोऽस्ति मां प्रति ।

अब मृत्युञ्जय कवच कहते हैं । श्रीदेवीजी कहती हैं– हे देवदेवेश ! हे देवताओंसे प्रपूजित ! हे भगवन् ! आपने मुझसे सब कुछ कहा परंतु मृत्युहर, सर्व रक्षाकर, अशुभनाशक कवच नहीं कहा कृपांकर कहिये, यदि मेरे ऊपर आपका परम स्नेह है तो ।।

ईश्वर उवाच–अस्य मृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेव ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः मृत्युञ्जयो देवता साधकाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । शिरो मे सर्वदा पातु मृत्युञ्जयसदाशिवः । सत्र्यक्षरस्वरूपो मे वदनं च महेश्वरः।। पञ्चाक्षरात्मा भगवान् भुजौ मे परिरक्षतु। मृत्युञ्जयस्त्रिबीजात्मा ह्यायू रक्षतु मे सदा।। बिल्ववृक्षसमासीनोदक्षिणामूर्तिरव्ययः । सदा मे सर्वतः पातु षट्त्रिंशद्वर्णरूपधृक् ।। द्वाविंशत्यक्षरो रुद्रः कुक्षौ मे परिरक्षतु । त्रिवर्णात्मा नीलकण्ठः कण्ठं रक्षतु सर्वदा ।। चिन्तामणिर्बीजपूरे ह्यर्द्धनारीश्वरो हरः । सदा रक्षतु मे गुह्यं सर्व-

सम्पत्प्रदायकः ।। स त्र्यक्षरस्वरूपात्मा कूटरूपी महेश्वरः । मार्तण्ड-भैरवो नित्यं पादौ मे परिरक्षतु ।। ॐ जूं सः महाबीजस्वरूपस्त्रि पुरान्तकः। ऊद्ध्र्वमूर्द्धनि चेशानो मम रक्षतु सर्वदा। दक्षिणस्यां महा-देवो रक्षेन्मे गिरिनायकः । अघोराख्यो महादेवः पूर्वस्यां परिरक्षतु ।। वामदेवः पश्चिमस्यां सदा मे परिरक्षतु ।। उत्तरस्यां सदा पातु सद्यो-जातस्वरूपधृक् ।। इत्थंरक्षाकरं देवि कवचं देवदुर्लभम् । प्रातर्मध्याह्न काले तु यः पठेच्छिवसन्निधौ ।। सोऽभीष्टफलमाप्नोति कवचस्य प्रसादतः । कवचं धारयेद्यस्तु साधकी दक्षिणे भुजे ।। सर्वसिद्धिकरं पुण्यं सर्वारिष्टविनाशनम् । योगिनीभूतवेतालाः प्रेतकूष्माण्डपन्नगाः।। न तस्य हिंसां कुर्वन्ति पुत्रवत्या, लयन्ति ते । पठित्वाभ्यर्चयेद्देवि यथाविधि पुरः सरम् । लक्षञ्च मूलमंत्रस्य पुरश्चरणमुच्यते । तद्धारणे महादेवि मृत्युरोगविनाशनम् ।। एवं यः कुरुते मर्त्यः पुण्यां गतिमवाप्नुयात् । इति ज्ञातं महादेवि तस्य वक्त्रे स्थितं सदा ।। कव-चस्य प्रसादेन मृत्युमुक्तो भवेन्नरः । अन्यथा सिद्धिहानिः स्यात्सत्य-मेतन्मनोरमे ।। तव स्नेहान्महादेवि कथितं कवचं शुभम् । न देयं कस्यचिद्भद्रे यदीच्छेदात्मनो हितम् ।।

श्रीशिवजी ने कहा–इस मृत्युंजय मंत्रके वामदेव ऋषि गायत्री छंद मृत्युंजय देवता हैं । साधकोंके मनोरथ सिद्धिके लिए विनियोग कहा है । मृत्युं-जय सदाशिव मेरे शिरकी, तीन अक्षरस्वरूप महेश्वर मेरे मुखकी रक्षा, पंचवर्णात्मक भगवान् सदाशिव मेरी दोनों भुजाओंकी, और मृत्युंजय मेरी आयुकी रक्षा करें । बिल्ववृक्षके नीचे वास करनेवाले अव्यंय सदाशिव, दक्षिणा-मूर्ति षट्त्रिशत् (३६) वर्ण रूप धारण करनेवाले सर्व स्थानोंमें मेरी रक्षा करें । द्वाविंशति रूपात्मक रुद्र मेरी कुक्षिकी, त्रिवर्णात्मक नीलकण्ठ मेरे कण्ठकी, बीजपूरमें चिन्तामणिके तुल्य अर्द्धनारीश्वर भगवान् सदाशिव मेरे गुह्यभागकी, त्रिवर्णात्मक, कटरूप, महेश्वर मार्तडभैरव नित्य मेरे पांवकी, ओं जूं सः इन बीजोंके रूपको धारण करनेवाले त्रिपुरान्तक मेरे ऊर्ध्वभाग अर्थात्

मस्तककी, गिरिनायक महादेव दक्षिण दिशामें, अघोराख्य महादेव पूर्व-दिशामें, वामदेव पश्चिम दिशामें और सद्योजात स्वरूप उत्तर दिशामें मेरी रक्षा करें। हे देवि देवताओंको भी दुर्लभ ऐसे रक्षाकर कवचका प्रातःकाल और सायंकाल जो मनुष्य शिव मंदिरमें पाठ करते हैं उनको इस कवचके प्रसाद से वांछित फल प्राप्त होता है। जो साधक इस परम पवित्र कवचको दक्षिण भुजामें धारण करते हैं उनको संपूर्ण संपत्तियां प्राप्त होती हैं और उनके समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं। योगिनी, भूत,वेताल आदि कदापि उसकी हिंसा नहीं करते किन्तु पुत्रवत् उसकी रक्षा करते हैं। हे देवि ! यथाविधान इस कवचका पाठ करके शिवपूजन करे। एक लाख मूलमंत्रके जप करनेसे एक पुरश्चरण होता है। हे देवि ! इस पुरश्चरणके करनेसे मृत्यु और रोग नष्ट होता है। इस प्रकार करनेसे सद्‌गति प्राप्त होती है। हे देवि ! इस कवचके ज्ञाता मृत्युसे निर्भय रहते हैं। न करनेसे सिद्धिकी हानि होती है। हे महादेवि ! तुम्हारे स्नेहसे शुभ कवचराज कहा है। हे भद्रे ! अपनी सब कामना पूर्ण करने की इच्छा करनेवाला अन्यको यह कवच न दे। पूजन विधान प्रथम कह आये हैं। मृत्युंजय कवच समाप्त।

इति क्रियोड्डीशे महातंत्रराजे देवीश्वरसंवादे एकोनविंशतितमः पटल- ।। १९ ।।

यन्त्रप्रकरणम्

वन्ध्यायन्त्रम्—अतःपरं देवि शृणु यन्त्रधारणमुत्तमम्। यन्त्र-धारणमात्रेण सर्वाभीष्टफलं लभेद् ।। जन्मवन्ध्या च या नारी शुभ-पुत्रवती भवेत्। तदा गोरोचनाद्येन लिखेद्यंत्रमनुत्तमम् ।। वृत्तद्वयं समालिख्य पद्ममष्टदलं लिखेत्। प्रतिपद्मे लिखेन्मायाबीजं भूपुरकं ततः ।। भूर्जपत्रे लिखेद्यन्त्रं धारयेत्तु महेश्वरि। कुक्षौ धृत्वा महायंत्रं शुभपुत्रवती भवेत् ।। प्रयोगान्तरमन्यत्र प्राणसंङ्कटतो नहि। दक्षिणां गुरवे दत्त्वा, गृह्णीयाद्यन्त्रमुत्तमम् ।।

अब यन्त्रप्रकरण कहते हैं। प्रथम वन्ध्यायंत्र। हे देवि! यन्त्रधारण-विधान सुनो। यन्त्रके धारणमात्र से ही समस्त वांछित फल प्राप्त हो जाते हैं। जन्मवन्ध्या स्त्री पुत्रको प्राप्त करती है। गोरोचनादि सुगन्धित पदार्थों से उत्तम यन्त्रको लिखे! दो वृत्त निर्माण कर अष्टदल कमल बनाकर-प्रतिपद्ममे मायाबीज और भूपुर लिखे। हे महेश्वरि! भोजपत्रके ऊपर लिख कर इस यन्त्रको धारण करे तो वंध्या स्त्री भी पुत्रवती हो। इस प्रयोगकी समाप्तिपर गुरुजीको दक्षिणा दे।

वृत्तं चतुर्दलं पद्मं भूपुरेण समन्वितम् ।। वृत्तमध्ये लिखद्देवि साधकाख्यां विशेषतः ।। पुत्रवतीपदं पश्चात् भवत्विति पदं ततः। प्रणवैः पुटिता लज्जा त्रिधा पत्रेषु संलिखेत् ।। पूर्ववत्पूजयेद्देविधारयेद्दक्षिणे भुजे। सत्यं सत्यं हि देवेशि वन्ध्या पुत्रवती भवेत् ।। दुर्भगा चेद्भवेन्नारी सुभगा मासतो भवेत्।

वृत्तचतुर्दलपद्म भूपुरयुक्त निर्माण करे। हे देवि! वृत्तके मध्यमें साधकके नामको लिखे और 'पुत्रवती' भवतु इस पदको लिखे। (उदाहरणार्थ) रमा पुत्रवती भवतु इस उदाहरणके अनुसार लिखे फिर प्रणवपुटित लज्जा बीज तीन प्रकारके पत्रोंमें लिखे। हे देवि! पूर्ववत् पूजन करके दक्षिण भुजामें धारण करे। हे देवि! यह बात सत्य है कि इसके धारण करनेसे वंध्या पुत्रवती होती है। दुर्भगा स्त्री एक मासके भीतर सौभाग्यवती हो जाती है।

रक्षायन्त्रम्

अतः परं प्रवक्ष्यामि महारक्षाकरं परम्। धारणाद्दानवपतिर्महारक्षाकरो भवेत् ।। पञ्चदलं लिखेद्देवि ग्लौंबीजेनैव लाञ्छितम्। गंपञ्चकं सर्वमध्ये लिखित्वा धारयेद्यदि ।। न तस्य पुत्रभीतिः स्यात्तत्र रक्षाकरोहरः। गोरोचनाकुंकुमाभ्यां भूर्जे संलिख्य धारयेत् ।। तत्र पूजां महादेवि गणपस्य समाचरेत्। पूजितं धरितञ्चैव सर्वोपद्रवनाशनम् ।। वृत्तमष्टदलं पद्मं पुनः पद्मेषु संलिखेत्। गोरोचनाभिः संलिख्य धारयेत्परमेश्वरि ।। उक्तरूपेण लिंगस्य पूजां कृत्वा महेश्वरि। धारयेद्यो भवेत्तस्य ह्यपमृत्युविनाशनम् ।।

अब महारक्षाकर यन्त्र कहते हैं जिसके धारण करनेसे दैत्येश्वर भी रक्षा करनेवाला हो जाता है। हे देवि ! पंचदल कमल लिखकर ग्लौंबीजसे अंकित करे। सर्वदलोंके मध्यमें गम्बीज लिखकर पूजन करके धारण करे तो पुत्रभय कदापि न हो किन्तु शिवजी महाराज स्वयं आकर रक्षा करेंगे। भोज-पत्रके ऊपर गोरोचन और कुंकुमसे लिखकर गणपतिका पूजन कर यंत्र धारण करे तो समस्त उपद्रव दूर हों और पुत्रकी प्राप्ति हो। वृत्त अष्टदल कमलके प्रतिदलमें ला बीज लिखे। हे परमेश्वरि ! गोरोचनादि सुगंधित पदार्थों से लिखकर धारण करनेसे पुत्रप्राप्ति होती है। हे महेश्वरि ! उक्त विधानके अनुसार यन्त्रका पूजन करे। हे देवि ! पूजन और यन्त्रके धारण करनेसे अप-मृत्यु दूर होती है।

पुत्रजननयन्त्रम्

बिन्दुवृत्तं समालिख्य लिखेदष्टदलं ततः। प्रतिपत्रेषु यंबीजं लिखेदथ पृथक्पृथक् ।। पूर्ववत्पूजयेद्देवि धारणान्मृत्युनाशनम् । काकवन्ध्याजनस्यापि बहुपुत्रकरं परम्।। षट्कोणं विलिखेद्वृत्तं ततश्चाष्टदलं लिखेत् । षट्कोणेषु च षट् दीर्घान् विलिखेत्परमे-श्वरि ।। ऐं ह्रीं ॐ ऐं ह्रीं फट् स्वाहा लिखेदष्टदले ततः। सर्वमध्ये लिखेद्देवि ततः शृणु महेश्वरि।। प्रणवस्तु ततो माया साधकाख्यं तु डेन्तकम् । सुपुत्रञ्च समालिख्य उत्पादय पदन्ततः ।। विधाय चैवं विधिवद्धारयेद्यन्त्रमुत्तमम् । धारणात्सर्वसंपत्तिर्भवेद्देवि न संशयः। पूजनं पूर्वमुक्तम् । देवीं कालीमंत्रेण पूजयेत् ।

अब पुत्र उत्पन्न करनेवाला यंत्र कहते हैं। बिन्दुवृत्तको लिखकर अष्ट-दल कमल लिखे, और उक्त कमलदलके प्रतिदलमें पृथक्-पृथक् यंबीजको लिखे। हे देवि ! पूर्ववत् पूजनकर धारण करे तो मृत्यूसे भय न हो। काकवंध्या स्त्री बहुपुत्र प्राप्त करे। षट्कोण वृत्त लिखकर पुनः अष्टदल लिखे और छहों कोणोंमें बीजमंत्र लिखे। "ऐं ह्रीं ॐ ऐं ह्रीं फट् स्वाहा" इनको अष्ट-दलमें लिखे। यंत्रके मध्यमें प्रणव, मायाबीज साधकका नाम 'सुपुत्रं उत्पा-

दय' इन पदोंकी योजना कर सविभक्तिक लिखे। विधिपूर्वक इस उत्तम यंत्रको धारण करे। हे देवि ! यंत्र धारण करनेसे समस्त सम्पत्ति प्राप्त होती है, इसमें किसी प्रकारका संदेह नहीं है। इसका पूजनविधान प्रथम कह आये हैं। देवीजीका पूजन कालीके मंत्रसे करना चाहिये।

वशीकरणम्

वशीकरणयन्त्रन्तु शृणु मत्प्राणवल्लभे। यस्य धारणमात्रेण वशीकुर्यात् पुनः प्रिये।। चतुर्वृत्तं समालिख्य लिखेदष्टदलं ततः। ॐ शत्रुमुखं बन्धयेति प्रतिपद्मदलं लिखेत् ।। यस्य नामाभिसंलिख्य बाहौ सन्धारयेच्छिवे। पूर्ववत्पूजयेद्देवीं जपेल्लक्षं विधानतः ।। चामुण्डोक्तविधानेन पूजयेद्देवि साधकः। हुत्वा चैव विधानेन स वशी भवति ध्रुवम् ।।

हे मत्प्राणवल्लभे ! अब वशीकरण यन्त्र सुनो, जिसके धारण करने मात्रसेही वशीकरण हो सकता है। चतुर्वृत्त लिखकर अष्टदल लिखे। "ओं शत्रुमुखं बन्धय" इस वाक्य को प्रतिदलमें लिखे। साध्य व्यक्तिके नामको लिखकर बाहुमें धारण करे और पूर्ववत् पूजन करे। चामुंडाके विधानको देखकर पूजन और विधानपूर्वक हवन करे।

बन्धमुक्तियन्त्रम्

प्रथमन्तु लिखेद्वृत्तं तद्बहिस्तु स्वरांल्लिखेत्। बहिर्बभूद्वयं लिख्य चतुर्दिक्षु च ह्रीं लिखेत्।।वृत्तयुग्माष्टपत्रञ्च लिखेद्गोरोचनादिना। ग्रीवायां कंठदेशे वा शिखायां वापि धारणात् ।। बन्धमुक्तिर्भवेत्तस्य नवमे दिवसे तथा। पूर्वोक्तविधिना लक्षं दुर्गामंत्रं जपेद्बुधः ।।

अब बन्दीमोचन यन्त्र कहते हैं। प्रथम वृत्त लिखे और उस वृत्तके बहिर्भागमें स्वरोंको लिखे। बहिर्भागमें दो बुभू लिखे और चारों दिशाओंमें ह्रीं लिखे। दो वृत्त लिखकर गोरोचनादिसे अष्टदल लिखे। ग्रीवा (गर्दन), कण्ठ

शिखामें धारण करे तो नौवें दिन बन्धनसे मुक्ति हो । पूजन-विधान प्रथम कह दिया है । एक लाख दुर्गामंत्र का जप करना चाहिये ।

डाकिन्यादिभयविनाशनयन्त्रं जीववत्सायन्त्रं च

वृत्तयुग्मं लिखेत्तत्र महाबीजचतुष्टयम् । चतुष्कोणद्वयं बाह्ये लिखित्वा धारयेद्यदि ।। नाशयेत्क्षणमात्रेण डाकिन्यादिभवं भयम् । मृतवत्सा यदि भवेन्नारी दुःखपरायणा ।। धारयेत् परमं यंत्रं जीव-वत्सा ततोभवेत् ।

अब डाकिनी आदि भयनाशक तथा जीववत्सायन्त्र वर्णन करते हैं । दो वृत्त लिखकर चारों कोनोंमें चार महाबीज लिखे और पूजन कर धारण करे तो डाकिनी आदि का भय दूर हो जाता है । जिस स्त्रीका पुत्र उत्पन्न होकर मर जाता हो और सर्वथा सन्तानसे दुःखित रहती हो यदि वह वह स्त्री इस यन्त्र-राजको सांगोपांग धारण करे तो उसकी संतान जिये और उसे संततिसुख प्राप्त हो ।

दीर्घरेखाद्वयं दत्त्वा तद्गात्रेऽष्टदलं लिखेत् । ॐ ह्रीं देवदत्त ह्रीं रेखामध्ये लिखेच्छिवे ।। रेखागात्रदले ॐ हूं रेखाद्यन्तदले च ॐ (लिखेत्) । गोरोचनाकुंकुमेन तथैवालक्तकेन वा ।। यस्य नाम तु संलिख्य स्थापयेत्परमेश्वरि । पंचामृतेषु देवेशि जीववत्सा भवेद्धि सा ।। तत्सुतस्याकालमृत्युर्नान्यथा जायते प्रिये । उक्तरूपे तथा पूजां लक्षमन्त्रं जपेच्छिवे ।।

दो दीर्घ रेखा खींच उनमें अष्टदल कमल बनाकर रेखाओंके मध्यमें 'ओं ह्रीं देवदत्त ह्रीं ओं' इस मंत्रको लिखे । रेखाके गात्रदलमें ओं हूं रेखाकेअन्त-दलमें ओं इन बीजोंको लिखे । हे परमेश्वरि गोरोचन, कुंकुम लाख इनसे

साध्य व्यक्तिके नामको लिखकर पंचामृतमें स्नान कराये हे देवेशि ! स्त्री अवश्य जीववत्सा हो, हे शिवे ! इस यन्त्रको धारण करनेवाली स्त्रीका पुत्र कदापि अकाल मृत्युको प्राप्त न होगा । परंतु उक्त विधिके अनुसार पूजन कर और एक लाख मन्त्र जप करना आवश्यक है ।

इति क्रियोड्डीशे महातन्त्रराजे देवीश्वरसंवादे विंशतितमः पटलः समाप्तः ॥२०॥

विजयानुपानम्

दुग्धयोगेन विजया महातेजस्करी स्मृता । क्षुद्बोधबलकारित्वाच्चक्षुर्दोषापहारिणी ॥ जलयोगेन सा हन्ति ह्यजीर्णादिगदान्क्षणात् । घृतेन मेधाजननी वाग्देवी वशकारिणी ॥ कफदोषानशेषांस्तु मधुना सह नाशयेत् । सैन्धवेन युता सा हि जठराग्निं विवर्द्धयेत् ॥ सितया लवणेनापि गुडेन सह सेविता । अम्लपित्तं तथा शूलं विनाशयति तत्क्षणात् ॥

फलपुष्टिप्रदा प्रोक्ता मधुरस्वरकारिणी ।
कैवल्यज्ञानदा चेत्थं सर्वसिद्धिप्रदायिनी ॥

अब विजया अनुपानका विधान कहते हैं ! यदि विजया '(भंग) दूधके साथ पी जाय तो तेजका उदय हो नेत्र आदिका दोष दूर हो । कुछ लोग कहते हैं कि विजयाके पान करनेसे चक्षु आदि दोष उत्पन्न हो जाते हैं। यदि विजयाको केवल जलमें पीसकर और पानीमें छानकर पिये तो अजीर्ण रोग दूर हो जाता है। घृतके योगसे विजयाका सेवन वाक् चातुर्य प्रदान करता है।

मधु योगसे विजयाका सेवन समस्त कफ दोषोंको नष्ट करता है । सेंधेनमकके योगसे विजयाका सेवन करना जठराग्निको प्रज्वलित करता है । लवण, वा शर्करा और गुड़के योगसे विजयाका सेवन करना शूल और आम्लपित्तको दूर करता है । विजयाके सेवन करनेसे बल, पुष्टि प्राप्त होती है । और ज्ञान भी प्राप्त होता है । विजया समस्त सिद्धियोंको देनेवाली परमसिद्धि है ।

इति क्रियोड्डीशे महातंत्रराजे शिवगौरीसंवादे एकविंशतितम: पटल: समाप्त: ।।२१।।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बँक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१
दूरभाष - ०५४२-२८२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

